

# हिमाचल प्रदेश

# हिमाचल प्रवेश राज्यशासव द्वारा प्रकाशित

/	[1] शिमला, शनिवार, 26 फरवरी, 1983/7 फाल्गुन, 1904	[संख्या 9
(	बिषय-सूची	
भागा	वैधानिक नियमों को छोड़ कर हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल ग्रौर हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट द्वारा ग्रधिसूचनाएं इत्यादि	186 18 तथा 213
भाग 2	वैधानिक नियमों को छोड़ कर विभिन्न विभागों के ग्रध्यक्षों ग्रीर जिला मैजिस्ट्रेटो द्वारा ग्रभिसूचनाएँ इत्यादि	18818
भाग 3 भाग 4		189—2
भाग 5	वैयक्तिक ग्रधिसूचनाएं ग्रौर विज्ञापन	2072 तथा 21
4.4	भारतीय राजपन इत्यादि में से पुनः प्रकाशन	
भाग 6		
	भारतीय निवचिन प्रायोग (Election Commission of India) की वैधानिक प्रधिसूचनाएं तथा	8
भाग 6 भाग 7	भारतीय निर्वाचन श्रीयोग (Election Commission of India) के विश्वानिक श्रीमस्चनाएं तथा	209-2

विज्ञप्ति की संख्या	् विभागका नाम	विषय
No. PCH (HA)4-1/82, dated the 31st January, 1983,	Panchayati Raj Department	Authorised English text of notification of even number, dated 15th January, 1983.
No. PCH. HA(4)1/82, dated the 31st January, 1983.	-do-	-do-
भे तकतः १५४४ — इस्मिन्स्यान	Directorate of State Lotteries	Result of 127th Draw of the H. P. State Lottery "Himalayan Weekly" held at Simla on 22nd February, 1983.
516-राजाब-26-2-83—1,195.	(185)	मृत्य: 1 रुपया।

# भाग 1—वैद्यानिक नियमों को छोड़ कर हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल और हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट द्वारा अधिसूचनाएं इत्यादि हिमाचल प्रदेश सरकार

## SOIL CONSERVATION DEPARTMENT

#### NOTIFICATION

Simla-2, the 13th May, 1982

No. SC. A(4)-1-81. - The words and figures "In supersession of Agriculture Department's notification Nos. 12-13,75-Agr. (Sectt.) dated 14-8-1978 and 5-5-1978" appearing in first and second line of this Department notification of even number, dated the 5th January, 1982 shall and shall invariably be deemed to have been substituted by the following words and figures:-

"In partial modification of Agriculture Department notification No. 12-13/75-Agr. (Sectt.), dated 5-5-1978".

> By order, B. C. NEGI. Financial Commissioner (Dev).-cum-Secretary.

प्रतिलिपि संख्या 12-13/75-एम् (सैक्ट) जो कि दिनांक 5 मई 1978 (म्रधिसूचना) श्री मनंग पाल, सचिव (कृषि), हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा वित्त विभाग (विनियम), हिमाचल प्रदेश, शिमला-2 तथा ग्रन्य को प्रेषित है।

हिमाचल प्रदेश भूमि विकास अधिनियम, 1973 की धारा 3 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महोदय, प्रदेश के मभी जिलों के लिए, इस विभाग के इस प्रसंग से मम्बन्धित सभी पूर्व ग्रिधसूचनाग्रों का निवर्तन करते हुए, जिलास्तरीय भूमि विकास समितियों की नए सिरे से गठन निम्न प्रकार से करते

ममितियों का कार्य निब्पादन उक्त अधिनियम एवं उसके अन्तर्गत निर्मित नियमों द्वारा प्रदत्त कार्यों का शीघ्र निपटारा करना होगा। समितियों के सदस्यों का कार्यकाल पांच वर्ष होगा जो कि इस प्रधिमुचना के राजपत्र में प्रधिमुचित होने की तिथि से प्रभावशाली होगा ।

#### 1. शिवला जिला:

<ol> <li>उपायुक्त, शिमला</li> </ol>	ग्रध्यक्ष .
<ol> <li>मण्डलीय वन ग्रधिकारी</li> </ol>	<b>सदस्य</b>
<ol> <li>महायक भूमि संरक्षण ग्रिधकारी</li> </ol>	मदस्य-सचिव
4. श्री पी एस झोना, गांव डमेहरड़ा, कोटखाई,	

मदस्य

जिना शिमला सदस्य

5. श्री लेख राम, सरपंच, न्याय पंचायत करयाली. डा 0 करयाली, सब-तहसील सूनी, ज़िला शिम ना

#### 2. 47

गिड्	ा डि	<b>र</b> लाः					
1.	লিন	ना उपार	<b>ब</b> न	*			<b>त्राध्यक्ष</b>
		लीय व					सदस्य
3.	मह	यक भूति	म संरक्ष	ग ग्रधिका	री		सदस्य-सचिव
4.		हरनाम धायक	सिह	मारफत	श्रीदु	र्गादास	
5.	श्री		सिंह,	कुसूल	विला,	च्रुगर,	सदस्य सदस्य
	1999	J					

वम्बा जिलाः	
1. जिला उपायुक्त	ग्रध्यक्ष
<ol> <li>मण्डलीय वनाधिकारी</li> </ol>	सदस्य
<ol> <li>सहायक भूमि संरक्षण ग्रधिकारी</li> </ol>	सदस्य-सचिव
4 श्री केवन कृष्ण गुप्ता, वकीन, चम्बा	सदस्य
<ol> <li>श्री टेक चन्द (सेवा निवृत नायब-तहसीलदा मुहल्ला सापड़ी, चम्बा टाउन (हिमा</li> </ol>	र), चल
प्रदेश)	सदस्य

## हमीरपुर जिला :

<ol> <li>जिला उपायुक्त</li> </ol>	<b>अध्यक्ष</b>
2. मण्डलीय व गधिकारी	सदस्य
3. सहायक भूमि संरक्षण ग्रिधकारी	सदस्य-मचित
4. श्री बनदेव राज, उपाध्यक्ष, पंचायत समिति	Ţ
हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश)	सदस्य
5. श्री अजुष्या दास, प्रधान, ग्राम पंचायत	a*
चौरी, जिना हमीरपुर	सदस्यं
20.0	19
. ऊना ज़िला:	
1. जिला उपायुक्त	अध्यक्ष
<ol> <li>मण्डलीय बनाधिकारी</li> </ol>	सदस्य
<ol> <li>सहाय म भूमि संरक्षण अधिकारी</li> </ol>	सदस्य-म्बिन
4 श्री तरसेम सिंह, गांव कुंगरक, डाकघर	
कुग्ररु, जिला ऊना (हिमाचल प्रदेश)	सदस्य
<ol> <li>लेपिटनेन्ट धर्म सिंह, गांव बंजाल, डाकघर</li> </ol>	
लठयानी, जिला ऊना (हिमाचल प्रदेश)	सदस्य
मग्डी ज़िला:	
en *	
1. जिज्ञा उरायक्त	TENTAT

	13/11/03/31/1	श्रध्यक्ष
	मण्डलोय वनाधिकारी	सदस्य
	सहायकं भूमि संरक्षण ब्रधिकारी	सदस्य-सचिव
4.	श्री सुख राम हाजरी, गांव व डाकघर खुदर,	
	तहसील जोगिन्द्रनगर, जिला मण्डी	सदस्यः
5.	श्री उत्तम चन्द, प्रधान, ग्राम पंचायत	
	धाधनू, गांव चाहका-डोहरा, डाकघर धोधन	
	तहसील सुन्दरनगर, जिला मण्डी	सदस्य

#### 7. सिरमौर जिला:

<ol> <li>जिला उपायुक्त</li> </ol>	ऋध्यक्ष ु
<ol> <li>मण्डलीय वनाधिकारी</li> </ol>	सदस्थ
<ol> <li>सहायक भूमि संरक्षण ग्रिधकारी</li> </ol>	सदस्य-सचित
<ol> <li>श्री सोता राम, वकील, नाहन</li> </ol>	
<ol> <li>श्री श्राई. सी. गुप्ता, वकील, नाहन</li> </ol>	सदस्य

#### 8. बिलासपुर जिला :

जिला उपायक्त

	7044
<ol> <li>मण्डलीय वनाधिकारी</li> </ol>	सदस्य
<ol> <li>सहायक भूमि संरक्षण घिष्ठकारी</li> </ol>	सदस्य-सचिव
4. श्री सन्त राम, गांव समलेटा, तहसील घुमारबी,	
जिला बिलासपुर	सदस्य
5. श्री परसराम ठाकुर, गांव वैहरून, तहसील	
धुमारवीं, जिला बिलासपुर	सदस्य

#### 9. कुल्लू जिला:

<ol> <li>जिला उपायुक्त</li> </ol>	<b>अध्य</b> क्ष
<ol> <li>मण्डलीय वनाधिकारी</li> </ol>	सुदस्य
<ol> <li>सहायक भूमि संरक्षण ब्रधिकारी</li> </ol>	सदस्य-सचित्र
<ol> <li>श्री सीस राम, बकील, कुल्लू</li> </ol>	सदस्य
5. श्री देवो सिंह पाल, बकील, कुल्लू	सदस्य

#### 10. सोलन जिला:

		• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	
	1.	जिला उपायुक्त	ग्रध्यक्ष
		मण्डलीय बनाधिकारी	सदस्य
_	3.	सहायक भूमि संरक्षण प्रधिकारी	सदस्य-सचित्र
	4.	श्री रिखी राम, गांव डाडल, डाकघर भूमतो,	
		तहसील मर्की (जिला सोलन) श्री शिव दत्त भारद्वाज, ढोडी में रान के समीप	सदस्य
	5.	श्री शिव दत्त भारद्वाज, ढौडी बैरान के समीप	सदस्य
		स्रोलन	

#### 11. किन्नौर जिला :

<ol> <li>ज़िला उपायुक्त</li> </ol>	प्रध्यक्ष 🔟
<ol> <li>मण्डलीय वनाधिकारी</li> </ol>	सदस्य
<ol> <li>सहायक भूमि संरक्षण भ्रधिकारी</li> </ol>	सदस्य-प्रचिद्ध
4. श्री मान सिंह, गांव रिव्बा, तहसील मोरंग,	
जिला किलीर	सदस्य

5, श्री हुक्म लाज, शांक हुमग्रांश, बहसील पूह किना बतमान रेडियो मकैनिक, रामपुर बुणहर सदस्य (जिला शिमला)

12. लाहील-स्पीति जिला:

जिला उपायुक्त
 मण्डलीय बनाधिकारी

ग्रध्यक्ष मदस्य

3. सहायक भूमि संरक्षण अधिकारी

सदस्य सदस्य-मचित्र

 श्री मोती राम, भूतपूर्व बदस्य, पी.टी.ए.सी. गांव रपरिंग, डाकघर कोठी जहालमन, लाहौल

सदस्य

 श्री बीर सिंह, दुकानदार काजा, डाकघर काजा, तहसील स्पीति वाषा रामपुर सदस्य बुशहर

परिसीमाएं :

जिला भूमि विकास समिति की परिसीमाएं सम्पूर्ण जिले की सीमात्रों तक निहित होंगी।

4 गैर सरकारी सदस्यों को यात्र। भते एवं दैनिक भते का

भुगतान:

ें जो काम समिति को साँपे गए हैं उसके सम्बन्ध में की गई यात्रा के लिए समिति के गैर-सरकारी सदस्यों को संलग्न श्रनुबन्ध ''क' में निर्धारित शर्तों के श्राधार पर यात्रा भक्ता दिया जायेगा।

गैर सरकारी सदस्यों के याना भत्ता बिलों की प्रति-हस्ताक्षरित करने के सम्बन्ध में उपायुक्त, नियन्त्रक प्राधिकारी होंगे, तथा इस सम्बन्ध में याना भत्ते के बिल सम्बन्धित सहायक भूमि संरक्षण प्रधि-कारी उप-संचालक कृषि के कार्यालय में तैयार किए जायेंगें तथा उसी कार्यालय में उनकी समीक्षा की जायेगी।

रपुरोक्त सम्बन्ध में व्यय मुख्य शोर्ष 307—स्वायल एण्ड वाटर कंजरवेशन (ए) स्वायल कंजरवेशन स्कीम्ज (ए) (4) स्वायल कंजरवेशन ग्रीन एग्रीकल्चरल लेण्ड (एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट) को विकलित होगा।

त्रनुवन्ध ''क''

1. यात्रा भताः

रेल यात्राः (i) विधान सभा सदस्यो के ग्रातिरिक्त ग्रन्य सदस्य

ये प्रथम श्रेणी के कर्मचारियों के बराबर माने जायेंगे श्रीर ऐसे बास्तिबक रेल किराए के श्रिधिकारी होंगे जिस श्रणी में उन्होंने वस्तुतः यात्रा की हो किन्तु यह श्रेणी सामान्यतः प्रथम श्रेणी के सरकारी कर्मचारी की नियत की गई श्रेणी से प्रधिक नहीं होगी। श्रयांत ऐसी श्रणी जो प्रथम श्रेणी के कर्मचारियों के लिए रेलों में उपलब्ध उच्चतम श्रेणी है श्रीर चाहे इसे किसी भी नाम से पुकारा जाता है. से यात्रा की जा मकती है।

(ii) बस याता:

बस में एक स्थान (सीट) लेकर या मोटर साइकल या स्कूटर से याद्रा करने पर ये वास्तविक किराए श्रीर साथ में माइलेज भते के रूप में 25 पैसे प्रति किलोमीटर मैदानी क्षेत्रों में और 33 पैसे प्रति किलोमीटर पहाड़ी क्षेत्रों में लेने के श्रीष्ठकारी होंगे। यदि पूरी टैक्सी के कर याद्रा की गई हो तो उस दशा में माइलेज भत्ता 60 पैसे प्रति किलोमीटर की दर से दिया जायेगा। इन दरों में हिमाचल प्रदेश के लिए 33-1/3 प्रतिश्वत तान्विक श्रीष्ठवृद्धि भी शामिल है भगनी कार में याद्रा करने पर 75 पैसे प्रति किलोमीटर मैदानी क्षेत्रों में श्रीर एक रूपया प्रति किलोमीटर पहाड़ी क्षेत्रों में माइलेज भत्ता दिया जायेगा।

(iii) जपर (i) और (ii) में निहित व स्तिविक किराये अथवा माइलेज के अतिरिक्त सदस्य अपने स्थायी-निवास स्थान से प्रस्थान और पुन: वहां वापसी के बीच की सम्पूर्ण अनुपस्थित के लिए उसी दर पर और उन्हीं नियमों के अनुकूल दैनिक भन्ता प्राप्त करेगा । अधिक प्रदेश सरकार के प्रथम श्रेणी के अधिकारियों को नागू होते हैं।

2. दैनिक मचा :

(1) गर सरकारी सदस्यों को बैठक के दौरान प्रत्येक दिवस के लिए उस उच्चतम दर पर दैनिक भत्ता दिया जायगा जो वहां के स्थानीय झेल के लिए प्रथम श्रेणी के सरकारी कमचारी को देय हो।

- (2) बैठक के दौरान प्रत्येक दिन/दिनों के लिए दैनिक मन्ते के तिरिका सदस्य समिति के कार्य निष्पादन में बाहर स्थान पर ठहरने के लिए भी दैनिक मन्ते का निम्नलिखित रूप मं प्रधिकारी होगाः
  - (त्र) यदि मुख्यालय से प्रनुपस्थिति 6 घण्टे से अधिक न हो
  - (व) यदि मुख्यालय से अनुपस्थिति 6 घण्टे में अधिक हो और 12 घण्टों में अधिक न बढे . . 50 प्रतिष

#### 3. वाहन मता:

यदि सदस्य उसी स्थान का निवासी है जहां सिमिन की बैठक हो तो उस दशा में वह सदस्य उपयुंक्त दरों पर याद्रा एवं दैनिक भने का श्रीधकारी नहीं होगा । बास्तिबिक खर्चा, श्रीधकाधिक 10 रुपये प्रति दिन को सोमा तक दिया जायेगा । इस प्रकार का भुगताक करन से पूर्व नियन्त्रक श्रीधकारी को कथित दावे (क्लेम) के सन्दर्भ में पुष्टि के लिए एसा व्योरा प्राप्त करना होगा जो बह स्रावश्यक समझे श्रीर तदीपरांत यह सत्यालेख देना होगा कि वास्तिबिक खर्चांदी जाने वाली धन राजि से कम नहीं हैं। यदि ऐसा सदस्य अपने वाइन का उत्योग करे तो उसे माइलेज भना उम दर पर दिया जायेगा जिस पर प्रथम श्रेणी के सरकारो कमंचारी को दिया जाता है, किन्तु जिसकी अधिकाधिक सीमा 10 रुपये प्रतिदिन होगी।

4. यात्रा भत्ता एवं दैनिक भत्ता सदस्य को तभी दिया जायेगा जब वह इस प्रकार का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करेगा कि कथित यात्रा एवं ठहरने के लिए उसने किमी भ्रन्य मरकारी स्रोत मे यात्रा भत्ता या दैनिक भत्ता नहीं लिया है।

5. सिमित की बैठकों के सम्बन्ध में मदस्य को अपनी बास्तिबक्त याता के लिए याता भत्ता लेने की पावता प्राप्त करने के लिए अपने निवास स्थान जहां से/पर याता आरम्भ/समाप्त होगो, का नाम पहले देता होगा। यदि कोई सदस्य सिमित की बैठक में भाग लेने के लिए ऐसे किसी स्थान से याता करता है जो उसका स्थायी निवासी नहीं है या बैठक के समाप्त होने पर वापिस ऐसे स्थान को लौटता है जो उसका स्थायी निवास नहीं है, तो याता भत्ता तय की गई बास्तिबक्त दूरी या स्थायी निवास ग्रीर बैठक के स्थान के मध्य की दूरी में जो कम हो के आने पर परिमणित किया जायेगा।

#### 6. विधान सभा सदस्य:

ऐसे गैर सरकारी सदस्यों को जो विधान सभा के सदस्य हैं, सिमिति के काम के सम्बन्ध में की गई याताओं के लिए याता भक्ता, दैनिक भक्ता समय-समय पर संशोधित विधान सभा सदस्यों के वेतन भ्रीर भक्ते श्रिधिनियम के अन्तर्गत निर्धारित णतीं के भ्राधार पर दिया जायेगा ।

7. इन सदस्यों को उनके नियत कार्य के सम्बन्ध में जब कि विधान सभा था विधान सभा समिति जिसके लिए उनकी सेवाएं ली गई हों, सब में हो तो दैनिक भत्ता नहीं दिया जायेगा क्योंकि वे प्रपत्ता दैनिक भत्ता हिमाचल प्रदेश विधान सभा सदस्यों के वेतन और भत्ते प्रधिनियम, 1971 के प्रधीन विधान सभा से लेंगे। यदि ये ऐसा प्रमाण-पत्न दें कि इस नियम कार्य के निष्पादन में विधान सभा या विधान सभा समिति की बैठक में भाग नहीं लिया है और उन्होंने उसके लिए विधान सभा से कोई दैनिक भत्ता प्राप्त नहीं किया है तो उन्हें निर्धारित दर पर दनिक भत्ता दिया जायेगा।

गैर सरकारी सदस्यों को यावा भत्ता के कारण यदि अतिरिक्त भुगतान हो गया हो तो हिमाचल प्रदेश राजकोष नियमों के नियम 4.17 और 6.1 में दिए गए प्रावधान पूर्णरूपेण (म्यूटेटिस म्यूटेंडिस) लागू होंगे ।

सदस्य ऐसा यान्ना भत्ता, दैनिक भत्ता घौर परिवहन भत्ता प्राप्त नहीं करेगा जिससे वह विधान सभा की सदस्यता से ग्रयोग्य हो जाए।

प्रतिलिपि संख्या 12-13/75-एन (सैक्ट) दिनांक 14 ग्रगस्त,

भाता है :-

1978 की (प्रधिसूचना) अनंत्र पाल, सचिव (कृषि), हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा महालेखाकार, हिमाचल प्रदेश तथा बण्डीनद, निमला-171003 को तथा भन्य को प्रेषित।

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि हिमाचन प्रदेश के जिलों में जिला कृषि प्रधिकारियों तथा सद्दायक भू-संरक्षण प्रधिकारियों के इलावा उप-कृषि निवेशक/परियोजना अधिकारी जो कि जिलों के नियन्त्रण प्रधिकारी होने के प्रतिरिक्त जिलों में इर प्रकार की बिभागीय गृतिविधियों के निष्पादन के प्रति भी उत्तरवायी हैं, तैनात हैं, हिमाचन प्रदेश के राज्यपाल, इस विभाग की सम संव्यक ग्रविसूचना दिनांक 5 मई, 1978 को ब्रांशिक रूप से संशोधित करते हुए सङ्गायक मू-संरक्षण ग्रधिकारियों की बजाए उन श्रधिकारियों की भर्यात् सम्बन्धित उप-कृषि निदेशकों/परियोजना अधिकारियों को पूर्व कथित अविसूचना द्वारा गठित जिला भूमि विकास समितियों के सहर्ष सचिव नियुक्त करते हैं।

## HIMACHAL PRADESH FIFTH VIDHAN SABHA

#### NOTIFICATION

Shimla-171004, the 18th February, 1983 No. 1-6/83-VS.—The following order by the Governor of the State of Himachal Pradesh, dated the 18th Peoruary, 1983 is published for general information:-

ंमै, ग्रजोक नाय बनर्जी, राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश, भारतीय मंबिधान के मनुच्छेद 174(1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के अनुसरण में हिमाबल प्रदेश विधान सभा का प्राष्ट्रान सोमबार, 7 मार्च, 1983 को अपराह्म 2.00 बजे से परिषद् सदन, शिनला-171 004 में समबेत होने के लिए करता हूं।

अशोक नाथ बनर्जी, राज्यपाता.

हिमाचल प्रदेश ।"

स्थान: গ্রিলন

शिमला

By order, V. VERMA Secretary.

#### हिनाचल प्रदेश पंचम विवान सभा श्रिवसचना

शिमला-171004, 18 फरवरी, 1983 सच्या 1-6/83-बि 0 स 0.-राज्यपाल महोदब का निग्नलिखित ग्रादेश दिनांक 18 फरवरी, 1983 सर्वसाधारण की सुचनार्थ प्रकाशित किया

 भौ. श्रकोक नाम बनर्जी, राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश, भारतीय संविधान के अनुक्छेद 174(1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के अनुसरण में हिमाचल प्रदेश विधान सभा का आह्वान सोमवार, 7 मार्च, 1983 को अपराह्म 2.00 बजे ते परिषद भवन, शिमला-171004 में समवेत होने के लिए करता हूं।

प्रशोक नाथ बनर्जी,

राज्यपाल,

हिमाचल प्रदेश।

भादेश द्वारा, **बि**श्वेश्वर वर्मा,

सचिव ।

ग्रह्यक्षों और जिला मैजिस्टेटों द्वारा अधिसचनाएं इत्यादि नाग 2--वैधानिक नियमों को छोड़ कर विमिन्न विभागों के

# PUBLIC WORKS DEPARTMENT NOTIFICATIONS

Dharamshala, the 29th January, 1983

No. SEV/WS/LA-381-84.—Whereas it appears to the Governor, Himachal Pradesh that the land is required to be taken by the Government at the public expense for a public purpose namely for construction of Bhawan-ladwara road km. 2/0 to 3/0 (Manooni Bridge) in Tehsil and District Kangra, Himachal Pradesh, it is hereby declared that the land described in the specification below is required for the above purpose.

The declaration is made under the provisions of section 6 of the Land Acquisition Act, 1894 to all whom it may concern and under the provisions of section 7 of the said Act, the Collector, Land Acquisition, Himachal Pradesh Public Works Department, is hereby directed to take order for the acquisition of the said land.

A plan of the land may be inspected in the office of Collector, Land Acquisition, Himachal Pradesh P. W. D., Kangra,

#### SPECIFICATION

District: KAN	IGRA	Tehsil:	KAGNRA
Mohal 1	Khasra No		rea in Hect.
TATEHAR	1/2		0 04 82
	10/2	<b>(</b> )	0 00 44
	21/2		0 03 35
	20/2		0 00 80
	482		0 00 16
	483		0 00 64
	481	e, e	0 03 55
	484		0 01 56
	485		0 01 76
	479		0 02 70
	467		0 27 30
2 × k	465		0 00 12
	466		0 00 09
8	539		. 0 58 09
*	4887	1	0 04 87

अञ्चला जार । प्रल	। माजस्ट्रेटा द्वारा	। जायसूचनाए	इत्याद
1	2	3	
	511/1	0	02 00
	406/1	Ŏ	04 17
16.5 E (6.4.5	464/1	o o	00 116
NI V	459/1	0	00 33
	458/1	0	00 66
	439/1	0	007,09
	438/1	0	00 09
	437/1	0	00 15
	436/1	0	00 09
ii .	427/1	0	00 68
	435/1	0	00 06
	434/1	0	00 18
N 9	. <b>42</b> 9/1	. 0	00 46
	428	0	00 77
Kitta	29	. 1	20 14
TAHAR PAURA	33/1	0	01 76
	37/1	0	00 16
	38/1	0	00 18
	42/1	. 0	00 35
	34	0	03 10
	- 35	0 -	04 83
	36	. 0	07 ,20
Kitta	7	0	17 58
Grand 7	Total	1	37 , 72

Superintending Engineer, 5th Circle, H.P.P.W.D. Dharamshala.

Sd/d

Mandi, the 4th February, 1983

No. SEI-R-25-135/82-1752-55. Whereas it appears to the Governor, Himachal Pradesh that the land is likely to be required to be taken by the Himachal Pradesh Government at the public expense for a public purpose, namely for Jarol-Behna road, it is hereby notified that the land in the locality described below is likely to be acquired for the above purpose.

This notification is made under the provisions of section 4 of the Land Acquisition Act, 1894 to all whom it. may concern.

5 4

6

1

17

10

17

16

5 15

3

0 2 10

ð

0

0

0

0

0

0

0

ż ø

In exercise of the powers conferred by the aforesaid section, the Governor, Himachal Pradesh is pleased to authorise the officers for the time being engaged in the undertaking with their servants and workmen to enter upon and survey any land in the locality and do all other acts required or permitted by that section.

Any person interested, who has any objection to the acquisition of the said land in the locality may, within thirty days of publication of this notification, file an objection in writing before the Collector of Land Acquistion, H.P. P.W.D., Mandi and Kulu.

#### SPECIFICATION

-	I ECH ICATION			1307/1	U	1	15
District: MANDI	Tehsil: SU	INDERNAGAR	- U	1529/1 1551 1552	.0	0 2	13 11 . 3
Locality 1	Khasra No.	Area Big. Bis. Bisw 3 4 5		1553/1 1550/1 3330/1774/1/1 1778/1/1	0 0	0 0 1 4	4 5 14 0
JAROL	1541/1 1557/1 1555/1 1556	0 1 3 0 0 11 0 1 10 0 3 9		1739/1 1531/1 1499/1 1543/1	0 0 0	5 2 6 3	13 6 8 0
e e	1777/1 1595/1 1781/1 1544/1 1782/1	0 4 8 0 5 3 0 15 18 0 0 18 1 3 3		G. N. RAMASW Superintendin			14
	1506/1	0 4 3		1st Circle, H.P.	P.W.D.	Ma	ındi.

भाग 3—अधिनियम, विधेयक और विधेयकों पर प्रवर समिति के प्रतिवेदन, वैधानिक नियम तथा हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट, फाइनैन्शल कमिश्नर तथा कमिश्नर आफ इन्कम-टैक्स द्वारा अधिसचित आदेश इत्यादि

#### PLANNING DEPARTMENT

#### NOTIFICATION

Simla-2, the 21st November, 1981

No. PLG(A) 3-1/78.—In exercise of the powers vested by proviso to Article 309 of the Constitution of India and all other powers enabling him in this behalf, the Governor, Himachal Pradesh, in supersession of Recruitment and Promotion Rules notified vide No. 8-28/60-Fin(R&E), dated 12th July, 1962 is pleased to frame the Recruitment and Promotion Rules in respect of the following Class-III posts in the Department of Economics and Statistics, Himachal Pradesh, as per Annexures 2 to 8.

- 1. Statistical Asstts./Investigators/Investigators (Scru-
- tiny). Field Investigators Grade-I. 2 Field Investigators Grade-II/Computors. 3
- 4. Draftsman.
- 5. Hindi Translator.
- Duplicating Machine Operator. 6.
- 7.
- 2. These rules shall come into force from the date of issue of this notification.

#### परिशिष्ट 2

- सांक्ष्यकीय सहायक 2 अन्वेषक 3 अन्वेषक (संविक्षा) 2. पदों की संख्या 16 तृतीय श्रेषी (ग्रराजपितत) 3. वर्गीकरण E0 570-15-600-20-700/25-4. वेतनमान 850-30-1000-40-1080
- क्या प्रवरण पद है अथवा अप्रवरण पद ग्रप्रवरण पद।
- ्राम् अप्रवरण पर त.सीघी भर्ती वालों के 18—30 वर्ष लिये आयु ।
  - 7. सीधी भर्ती के लिये किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से गणित/अर्थशास्त्र/वाणिज्य में दितीय ग्रपेक्षित न्यूनतम शैक्षिक श्रेणी में ग्रेजुये शनकी हो तथा या तो तथा श्रन्य श्रहेतायें ।

किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से स्टेटिस्टिक्स में एक वर्ष की ट्रेनिंग की हो ग्रथवा परिगणन कार्य में दो वर्षका ग्रनभव हो।

2

1510;1

1483/1

1500/1

1508/1

1562/1

1501

1505

1635/1

1634

1636/1

1509

- 8. क्या पदोन्नति की स्थिति नहीं में सीधी भर्ती के लिए निर्धारित ग्राय तथा गैक्षणिक ग्रहंतायें पदो-न्नत व्यक्तियों के लिये प्रयोज्य होगी ।
- 9. परिवीक्षा की सबधि 2 वृषं जिस को नियुक्ति प्राधिकारी यदि कोई हो। किन्हीं कारणों से जो लिखित रूप में होंगे एक वर्ष के लिए बड़ा सकते
- 10. भर्ती का ढंग 75 क्या सीधी भर्ती द्वारा ग्रथवा पदोन्तित द्वारा प्रतिनियुक्ति/ ग्रयवा स्यानांतरण द्वारा तथा विभिन्न ढंगों से रिक्त स्थानों को भरने की प्रतिशतता ।
- 11. पदोन्नति, प्रतिनियुक्ति/ स्थानान्तरण द्वारा भर्ती की स्थिति में वह वेतन कम जिस में से पदो-न्तति, प्रतिनियुक्ति/स्था-नान्तरण किया जाना है।

पदोन्नति द्वारा : क्षेत्रीय अन्वेषक-1 जिसका इन पदों पर ग्रनुभव कार्यकाल 3 वर्ष का हो।

प्रतिशत पदोन्नति द्वारा एवं

25 प्रतिशत सीधी भर्ती द्वारा।

- पदो-12. यदि 'विभागीय न्नति समिति विद्य-मान है तो इस की र्चना क्या है
  - सरकार द्वारा रची गई हो।

वह समिति जो समय-समय पर

13. परिस्थितियां जितके कान्त के अनुसार। अयोग का परामर्श भतों के लिये लेना

पाद टिप्पणियाः

1. उपयुंक्त सेवा या पद के लिये यह जरूरी है कि उम्मीदबार निम्नलिखित हो:-

(क) भारतीय नागरिक, या

(ख) नेपाल की प्रजा, या

(ग) भुटान की प्रजा. या

(घ) िंड्बनी विस्थापित हो जो कि 1 जनवरी, 1962 से पहले भारत में स्थाई रूप में रहने के उद्देश्य मे माया

(इ.) भारतीय मूल का व्यक्ति जो पाकिस्तान. बर्मा, श्रीलंका, पर्वी ग्रफोका कीनिया युगांडा, संयुक्त गणतन्त्र तंत्रानिया इससे पूर्व तांगानीका और जन्जीबार, जांबिया, मालवी, ज्येपर तथा इयोपिया से भारत में स्थाई रूप से रहने के उद्देश्य में प्राया हो :

उपबन्धित है कि वर्ग (ख), (ग), (घ), (ङ) से सम्बन्धित वही प्रत्याशी माना जायेगा जिस का भारत सरकार/राज्य मरकार ने पावता का प्रमाण-पव जारी किया हो ।

पत्याणी जिसके बारे में पावता का प्रमाण-पत ग्रनिवायं हो, को भी हिमाचल प्रदेश लोक मेवा ग्रायोग या ग्रन्य प्राधिकरण द्वारा ग्रायोजित साक्षात्कार या किसी परीक्षा में बैठने की याजा दी जा सकती है, परन्तु उसे नियुक्ति का प्रस्ताव तभी दिया जाये जब कि उसे पावता का ग्रावश्यक प्रमाण-पत भारत सरकार/हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा जारी किया गया हो ।

 ग्रनुम्चित जातियों/ग्रनुमूचित जन जातियों के उम्मीदवारों तथा ग्रन्य वर्गों के व्यक्तियों के लिये उच्चतम ग्रायू सीमा में उतनी छूट देय है जितनी हिमाचल प्रदेश सरकार के सामान्य अथवा विशेष अनुदेशों के अन्तर्गत अनुमत है।

3. मीबी भर्ती के लिये ग्रायु सीमा श्रीयोग द्वारा श्रावेदन-पत प्राप्त करने के लिये निश्चित की गई अन्तिम तिथि से गिनी जायेगी।

4. सीबी भर्ती की स्थिति में अन्यथा विशिष्ट योग्यता प्राप्त उम्मीदवारों के लिये आगु तथा अनुभव से सम्बन्धित योग्यताओं में श्रायोग के विवेकानुसार छूट देय होगी।

5. जब कभी खाना 2 के अधीन पदों की संख्या में वृद्धि अथवा कमी की गई हो तो हिमाचल प्रदेश लोक सेवा ब्रायोग के परामर्श न खाना मंख्या 10 ग्रीर 11 के उपबन्ध सरकार द्वारा मंशोधित हिस्ये जायेंगे।

6. जबिक सरकार की यह राय हो कि यह करना आवश्यक अपना उचित है तो वह लिखित रूप में इस के कारण रिकार्ड पर के तथा हिमाचन प्रदेश लोक संवा श्रायोग से परामर्श ले कर ाक्तियों अथवा पर की किसी भी श्रेणी अथवा वर्ग के सम्बन्ध में ्न नियमों के किसी भी उपबन्ध में छूट देने का प्रादेश कर सक्ती है।

7. सीधी भर्नी की स्थिति में नियुक्ति के लिये चयन, मौखिक पराक्षा के ग्राधार पर या यदि ग्रायोग ऐसा ग्रावश्यक ग्रथवा उचित मनमें तो लिखित परीक्षा द्वारा, जिसका स्तर, पाठ्यक्रम इत्यादि ग्रायोग द्वारा निर्धारित होगा ग्रयवा व्यवहारिक परीक्षा द्वारा किया

8. ऐसे मभी प्रकरणों में जबिक कोई कनिष्ठ व्यक्ति फीडर पद पर अपनी कुल सेवा अवधि (तदयं सेवा सहित) के आधार पर (पदोन्नित भादि) विचार पान्न होता है तो सम्बन्ध वर्ग में उससे वरिष्ठ मनी व्यक्ति ऐसे विचार के लिये पात्र माने जायेंगे और कतिष्ठ व्यक्तियों से उत्पर रखे जायेंगे :

उपबन्धित है कि ऐसे सभी व्यक्तियों, जो पदोन्निति।स्थाईकरण के लिये विवाराधीन हों, उन की कम से कम तीन वर्ष की न्युनतम अहरारी मेता होनी चाहिये अथवा वह अहँता जो कि ऐसे पद/सेवा के भर्ती तथा पदोन्नित नियमों में निर्धारित हो, दोनों में से जो भी

श्रागे उपबन्धित है कि जब कोई व्यक्ति पूर्ववर्ती परन्तुक में निर्धा-∙रित के कारण पदोन्निति स्थाईकरण हेतु विचार करने के लिये अयोग्य होता हो तो ऐसे व्यक्ति जो उससे कनिष्ठ हों, को भी ऐसी पदी-न्नति स्थाईकरण के लिये ग्रयोग्य समझा जायेगा ।

9 गासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत्त निकायों के सभी कर्मचारियों जो इन शासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत निकायों के प्रारम्भिक गठन के समय इन से पहले अन्तर्लयन सरकारी कर्म-चारी थे, को भी सरकारी कर्मचारियों की भांति सीधी भर्ती में भ्राय सीमा में छूट होगी । इस प्रकार की छूट शासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत्त निकायों के उन कर्मचारियों को उपलब्ध नहीं होगी जो उक्त निगमों/स्वायत्त निकायों द्वारा बाद में भर्ती किये गये हों ग्रीर इन शासकीय क्षेत्र में निगमों/स्वायत्त निकायों के प्रारम्भिक गठन के बाद अन्तिम रूप से उन निगमों/स्वायत्त निकायों में अन्त-र्लीन हो गये हों।

10. उनत सेवा में नियुक्ति अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों, पिछड़े वर्गी, अन्त्योदय के अन्तर्गत चयनित परिवारों इत्यादि के लिये सेवाश्रों में हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा समध-समय पर जारी किये गये ग्रादेशों के ग्रवीन होगा।

#### परिशिष्ट-3

1. पदकानाम

क्षेत्रीय म्रन्वेषक ग्रेड-1

पदों की संख्या

त्तीय श्रेणी (ग्रराजपन्नित)

वर्गीकरण वेतनमान

450-15-525/15-600/20-700-25-800

ग्रप्रवरण पद क्या प्रवरण पद है अथवा अप्रवरण पद।

6 सीधी भर्ती वालों के लिये श्राय ।

18 से 30 वर्ष

7. सीधी भर्ती के लिये अपेक्षित न्यनतम शैक्षिक नया अन्य श्रहंतायें।

किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालेथ से गणित/ **ग्रर्थशास्त्र/ वाणिज्य** इन्टरमोडियट या उसके समान परोक्षा पास की हो तथा गणना एवं परिगणन का ज्ञान रखता हो तथा हिमाचल प्रदेश के दूर दराज क्षेत्रों के दौरे का ग्रभ्यास रखता हो । उन व्यक्तियों को जो हिन्दी व

ग्रंग्रेजी टाइप जानते हों प्राथ-मिकता दी जायेगी।

 क्या पदोन्नित की स्थिति में सीधी भर्ती के लिये निर्धारित ग्रायू तथा गौक्षिक अर्ह तायें पदोन्नत व्यक्तियों के लिये प्रयो-ज्य होगी।

9 परिवीक्षा की अवधि यदि कोई हो।

2 वर्ष जिसे नियक्ति प्राधिकारी किन्हीं कारणों से जो लिखित रूप में होंगे एक वर्ष के ुलिये बढ़ा सकते हैं।

10 भर्ती का ढंग: क्या सीधी भर्ती द्वारा अथवा पदोन्नित द्वारा ग्रथवा प्रतिनियुक्ति/स्थानान्तरण द्वारा तथा विभिन्न ढंगों से रिक्त स्थानों को भरने की प्रतिशतता।

75 प्रतिशत पदोन्नति द्वारा व 25 प्रतिशत सीधी भर्ती द्वारा।

11. पदोन्नति, प्रतिनियक्ति/ स्यानान्तरण द्वारा भर्ती की स्थिति में वह वेतन

पदोन्नति द्वारा :-ः(i) क्षेत्रीय ग्रन्वेषक-॥

(ii) गणक

प्रतिनियक्ति/स्थानान्तरण किया जाना है।

12. यदि विभागीय पदो-न्नति ममिति विद्यमान है तो इस की रचना क्या है।

13. परिस्थितियां जिन के ग्रन्तर्गत लोक सेवा आयोग का परामर्श भर्ती करने के लिये लेना है।

कम जिस में से पदोन्नति, जिनका भ्रपने पद पर श्रनुभव कार्य-काल 3 वर्गका हो।

> बह समिति जो समय समय पर सरकार द्वारा रची गई हो।

कानृत के ग्रन्सार।

#### पाद टिप्पणियां :

- उप्यक्त सेवा या पद के लिये यह जरूरी है कि उम्मीदबार निम्नलिखित हों :-
  - (क) भारतीय नागरिक, या
  - (ख) नेपाल की प्रजा, या

(ग) भूटान की प्रजा, या

(घ) तिब्बती विस्थापित हो जो कि 1 जनवरी, 1962 में पहले भारत में स्थाई रूप में रहने के उद्देश्य से प्राया हो, या

(इ) भारतीय मूल का व्यक्ति जो पाकिस्तान, वर्मा, श्री लंका, पूर्वी अफ्रीका, कीनिया, यूगांडा, संयुक्त गगनन्त्र तेजानिया इससे पूर्व तागानीका ग्रीर जन्जावार, जाविया, मालवी, जेयर तथा इथोपिया से भारत में स्थाई रूप से रहने के उद्देश्य से श्राया हो :

उपबन्धित है कि वर्ग (ख), (ग), (घ), (ङ) से सम्बन्धित बही प्रत्याणी माना जायेगा जिस का भारत सरकार/राज्य सरकार ने पावता का प्रमाण-पव जारी किया हो।

प्रत्याणी जिसके बारे में पालता का प्रमाण-पल ग्रनिवार्य हो, को भी हिमाचल प्रदेश लोक सेवा ग्रायोग या ग्रन्य भर्ती प्राधिकरण द्वारा श्रायोजिल साक्षात्कार या किसी परीक्षा में बैठने की श्राज्ञा दी जा सकती है, परन्तू उसे नियुक्ति का प्रस्ताव तभी दिया जाये जब कि उस पावता का ग्रावश्यक प्रमाण-पव भारत सरकार हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा जारी किया गया हो।

2. अनुस्चित जातियों/अनसूचित जन जातियों के उम्मीदवारों तथा अन्य वर्गों के व्यक्तियों के लिये उच्चतम आयु सीमा में उतनी छूट देय है जितनी हिमाचल प्रदेश सरकार के सामान्य अथवा विशेष अनुदेशों के अन्तर्गत अनुमत है।

3. सीधी भर्ती के लिये श्रायु सीमा श्रायोग द्वारा श्रावेदन पत्र प्राप्त करने के लिये निश्चित की गई प्रन्तिम तिथि से गिनी जायेगी।

4 सोधी भर्ती की स्थिति में ग्रन्थथा विशिष्ट योग्यता प्राप्त उम्मीदवारों के लिये ग्रायु तथा ग्रनुभव से सम्बन्धित योग्यत ग्रों में त्राायोग के विवेकानुसार छूट देय होगी।

5. जब कभी खाना 2 के ग्रधीन पदों की संख्या में वृद्धि ग्रथवा कमी की गई हो तो हिमाचल प्रदेश लोक सेवा श्रायोग के परामर्श से खाना संख्या 10 भीर 11 के उपबन्ध सरकार द्वारा संशोधित किये जायेंगे।

6. जंबिक सरकार की यह राय हो कि यह करना स्रावश्यक ग्रथवा उचित है तो वह लिखित रूप में इसके कारण रिकार्ड करके तथा हिंसाचल प्रदेश लोक सेवा ग्रायोग से परामर्श लेवर व्यक्तियों प्रथवा पढ़ की किसी भी क्षेणी प्रथवा वर्ग के सम्बन्ध में इन नियमों के किसा भी उपबन्ध में छूट देने का ग्रादेश कर सकती है।

7. सोधी भर्ती की स्थिति में नियुक्ति के लिये चयन मीखिक परीक्षा के आधार पर या यदि आयोग ऐसा आवस्यक अथवा उचित समजे तो लिखित परीक्षा द्वारा, जिसका स्तर, पाठ्यकम इत्यादि त्रायोग द्वारा निर्धारित होगा ग्रथवा व्यवहारिक परीक्षा द्वारा किया

8. सुसे सभी प्रकरणों में जबिक कोई कनिष्ठ व्यक्ति कीडर पद पर ग्रंपनी कुल सेवा ग्रवधि (तदर्थ सेवा सहित) के ग्राधार पर (पदो-न्नति प्रादि) विचार पाने होता है तो सम्बंध वर्ग में उससे वरिष्ठ सभी व्यक्ति ऐसे विचार के लिये पात माने जायेंगे ग्रीर कनिष्ठ व्यक्तियों से अपर रखे जायेंगे:

उपबन्धित है कि ऐसे सभी व्यक्तियों, जो पदोन्निति।स्थाईकरण के लिये विचाराधीन हों, उन की कम से कम तीन वर्ष की न्युनतम ग्रर्हकारी मेवा होनी चाहियें ग्रथमा वह ग्रह ता जो कि ऐस पदें सेवा के भर्ती तथा पदोन्नति नियमों में निर्घारित हो, दोनों में से जो भी कम हो :

श्रागे उपविनिधत है कि जब कोई व्यक्ति पूर्ववर्ती परन्तुक में निर्धारित के कारण पदोन्नित/स्याईकरण हेतु विचार करने के लिये अयोग्य होता हो तो ऐमे व्यक्ति जो उससे कनिल्ट हो. को भी ऐसी पटोन्नति/ स्याईकरण के निये अयोग्य समझा जायेगा।

9. शासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत्त निकायों के सभी कर्मचारियों जो इन शासकीय क्षेत्र के निगमां तथा स्वायत निकायों के प्रारम्भिक गठन के समय इन से पहले ग्रन्तलंग सरकारी कर्मचारी थे, को भी सरकारी कर्म च।रियों की भांति सीधी भर्ती में ग्राय सीमा में छूट होगी। इस प्रकार की छूट भासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत निकायों के उन कर्मचारियों को उपलब्ध नहीं होगी जो उक्त निगमो/स्वायत्त निकायों द्वारा बाद में भर्ती किये गये हों श्रीर इन शासकीय क्षेत्र में निगमों/स्वायत्त निकायों के प्रारम्भिक गठन के बाद श्रन्तिम रूप में उन निगमों स्वायत निकायों में श्रन्तर्लीन हो गये

10 उक्त सेवा में नियुक्ति अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियां, पिछड़े बगाँ, अन्त्योदय के अन्तर्गत चयनित परिवारी इत्यादि के लिये मेवाओं में हिमाचल प्रदेश मरकार द्वारा समय-समय पर जारी किये गये आदेशों के अधीन होगा।

#### परिशिष्ट-4

1. पद क नाम

क्षेत्रीय अन्वेषक ग्रेंड-II

100

2. पदों की मंख्या वर्गीकरण

15

4. वेतनमान

तुतीय श्रेणी (ग्रराजपन्नित) FO 400-10-450/15-525/15-600/20-660

श्रप्रवरण पद क्या प्रवरण पद है

अथवा अप्रवरण पद। 6. सीधी भर्ती वालों के लिये

श्राय ।

.7. सीधी भर्ती के लिये ग्रपे-क्षित न्यूनतम शैक्षिक तथा अन्य अहँतायें। 18 वर्ष से 30 वर्ष तक

किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा बीड से मैटिक व उसके समान परीक्षा पास की हो तथा गणक मधीन को चलाने का अच्छा ज्ञान रखना हो।

उन व्यक्तियों को जो हिन्दी व अंग्रेजी टाइप जानते हों को प्राथमिकता दी जायेगी। नही

8. क्या पदोन्नति की स्थिति में सीधी भर्ती के लिये ग्रायु तथा निर्धारित अहंताएं **गैक्षिक** पदोन्नत व्यक्तियों के लिये प्रयोज्य होगी ।

9. परिवोक्षा की श्रवधि यदि कोई हो।

2 वर्ष जिसे नियुक्ति प्राधिकारो किन्हीं कारणों से जो लिखित रूप होंगे एक वर्ष के लिये बढ़ा सकते हैं।

10. भती का डंग: क्या सीधी भर्ती द्वारा ग्रथवा पदोन्नति द्वारा प्रतिनियुक्ति/ स्थानान्तरण द्वारा तथा विभिन्न इंगों से रिक्त स्थानों को भरने की प्रतिशतता ।

11. पदोन्नति, प्रतिनियुक्ति/ -स्थानान्तरण द्वारा भर्ती की स्थिति में वह वेतन कम जिसमें से पदोन्नति/

100 प्रतिशत सीधी भर्ती द्वारा।

प्रतिनियुक्ति, स्थानान्तरण किया जाना है।

12. यदि विभागीय पदो- वद समिति जी समय-समय पर स्ति समिति विद्यमान है सरकार द्वारा रची गई हो । तो इसकी रचना क्या है।

13. परिस्थितिया जिन के कानून के अनुसार । अन्तर्गत लोक सेवा अयोग का गरामणे भर्ती करन के निये लेना है।

पाद टिप्पणियां :

- 1 उपयुक्त सवा या पद के लिये यह जरूरी है कि उम्मीदवार निम्निविधित हों :-
  - (क) भारतीय नागरिक, या
  - (ख) नेयाल की प्रजा, या
  - (ग) भूटान की प्रजा, या
  - (घ) तिब्बती विस्थापित हो जो कि 1 जनवरी, 1962 से पहले भारत में स्थाई रूप से रहने के उद्देश्य से ग्राया हो, या
  - (ङ) भारतीय मूल का व्यक्ति जो पाकिस्तान, वर्मा, श्री लंका, पूर्वी ग्रफीका, कीनिया, यूगोड़ा, संयुक्त गणतत्त्व तेंजानिया इससे पूर्व तांगानिका ग्रीर जन्जीबार, आबिया, मालवी, जेयर तथा इथोपिया मे भारत में स्थाई रूप में रहने के उद्देश्य से श्राया हो:
  - उपबन्धित है कि वर्ग (ख), (ग), (घ), (ङ) से सम्बन्धित वही प्रत्याणी माना जायेगा जिस का भारत सरकार्∤राज्य सरकार ने पात्रता का प्रमाण-पत्र जारी किया हो।
  - .प्रत्याशी जिसके बारे में पात्रता का प्रमाण-पत्न स्नित्वायं हो, को भी हिमाचल प्रदेश लोक सेवा सायोग या अन्य भर्ती प्राधिकरण द्वारा स्नायोजित साक्षात्कार या किसी परीक्षा में बैठने की स्नाजा दी जा सकती है, परन्तु उसे नियुक्ति का प्रस्ताव तभी दिया जाये ज्या कि उसे पात्रता का स्नावश्यक प्रमाण-पत्र भारत सरकार/हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा जारी किया गया हो।
- 2. प्रनुसूचित जातियों/प्रनुसूचित जन जातियों के उस्मीदद्वारों तथा प्रत्य वर्गों के व्यक्तियों के लिये उच्चतम ग्रायु सीमा में उतनी छूट देय है जितनी हिमाचल प्रदेश सरकार के मामान्य ग्रयवा विशेष अनु-देशों के ग्रन्तर्गत ग्रनुमन है।
- 3. मीबी भर्ती के लिये श्रायु मीमा श्रायोग हारा श्रावेदन-पन्न प्राप्त करने के लिये निश्चित की गई अन्तिम तिथि से गिनी जायेगी।
- 4. मोधी भर्ती की स्थित में अन्यथा विशिष्ट यंत्रच्या प्राप्त उम्मीद-वार के लिये आयु तथा अनुभव में मस्विन्धित योगान्ध्या में आयोग के विवकानुसार छुट देय होगी।
- 5. जब कभी खाना 2 के अधीन पदों की संख्या यें बृद्धि अथवा कभी की गई हो तो हिमाचल प्रदेण लोक सेवा आयोग के परामर्श से खाना संख्या. 10 और 11 के उपबन्ध मरकार द्वारा संशोधित थिये जायेंगे।
- 6. जबिक सरकार की यह राय हो कि यह करा, आवश्यक अथवा उचित है तो वह लिखिल रूप में उसके कारण रिकार्ड करके तथा हिमाचल प्रदेश लोक मेवा आयोग से परामर्श लेकर व्यक्तियों अथवा पद को किसी भी श्रेणी अथवा वर्ग के सम्बन्ध में इन निधमों के किसी भी उपवन्ध में छट देने का आदेश कर महती है।
- 7. मीधी भर्ती की स्थिति में नियुक्ति के लिये चयन, गौखिक परीक्षा के प्राधार पर या यदि आयोग ऐसा आवश्यक अथवा उचित समझे तो लिखित परीक्षा द्वारा, जिस का स्तर, पाठ्यकम इस्यादि आयोग द्वारा निर्धारित होगा अथवा व्यवहारिक परीक्षा द्वारा किया जायेगा।
- 8. ऐसे सभी प्रकरणों में जबिक कोई कनिष्ठ व्यक्ति फीडर पद पर प्रपनी कुल सेवा श्रविध (तदर्थ सेवा सहित) के श्राधार पर (पदोन्नित श्रादि) विचार पात्र होता है तो स्थबन्द्र वर्ग में उससे

वरिष्ठ सभी व्यक्ति ऐसे विचार के लिये पात्र माने जायेंगे भीर कनिष्ठ व्यक्तियों से ऊपर रखे जायेंगे:

उपबिश्वत है कि ऐसे सभी व्यक्तियों, जो पदोन्नति/स्थाईकरण के लिये विवाराधीन हों, उनकी कम से कम तीन वर्ष की न्यूनतम अर्हकारी सेवा होनी चाहिये प्रथवा वह अर्हता जो कि ऐसे वद/सेवा के भर्ती तथा पदोन्नति निथमों में निर्धारित हो, दोनों में से जो भी कम्हते:

आगे उपबन्धित है कि जब कोई व्यक्ति पूर्ववर्ती परन्तुक में निर्धा-रित के कारण पदान्नित/स्थाईकरण हेतु विचार करने के लिये अयोग्य होता हो तो ऐसे व्यक्ति जो उससे कनिष्ठ हो, को भी ऐसी पदोन्नित/ स्थाईकरण के लिये अयोग्य समझा जायेगा।

9. णासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत्त निकायों के सभी कर्म-चारियों जो इन णासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत्त निकायों के प्रारम्भिक गठन के समय इन से पहले ग्रन्तलंग सरकारी कर्मचारी थे, को भी सरकारी कर्मचारियों की भांति सीधी भर्ती में प्रायु सीमा में छूट होगी। इस प्रकारकी छूट जासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत्त निकायों के उन कर्मचारियों को उपलब्ध नहीं होगी जो उक्त निगमों/स्वायत्त निकायों द्वारा बाद में भर्ती किये गये हों और इन णासकीय क्षेत्र में निगमों/स्वायत्त निकायों के प्रारम्भिक गठन के बाद ग्रन्निम रूप से उन निगमों/स्वायत्त निकायों में श्रन्त लीन हो गये हों।

10. उक्त सेवा में नियुक्ति अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों, पिछड़े वर्गों, अन्त्योदय के अन्तर्गत चयनित परिवारों इत्यादि के लिये सेवाओं में हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किये गये श्रादेशों के श्रधीन होगा।

#### परिशिष्ट-5

1. पद्का नाम

2. पदों की संख्या

वर्गीकरण
 वेतनमान

नक्शानबीस (ड्राप्टसमॅन)
2
तृतीय श्रेणी (अराजपिवर्स)
80 570-15-600-20-700/25-850-30-1000-40-1086>

- क्या प्रवरण पद है अथवा अप्रवरण पद अप्रवरण पद।
- 6 मीधी भर्ती वालों के 18 वर्ष से 39 वर्ष तक लिये आयु। लिये आयु।
- 7 सीधी भर्ती के लिये ग्रेपेक्षित न्यूनतम शैक्षिक तथा ग्रन्य ग्रहेताए।

किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा बोर्ड से मिट्टिक व उस के समान परीक्षा पास तथा किसी सांख्यकौय कार्या-लय में नक्शे, चार्ट्स एवम् ग्राफ्स बनाने का 3 वर्ष का प्रमुभव।

किसी मान्यता प्राप्त मंस्थान से नक्शानवीस में डिप्लोमा प्राप्त व्यक्ति को प्राथमिकता दी जायेगी।

8. क्या पदोन्नति की स्थिति में सीधी भर्ती के लिये निर्धारित प्रायु तथा शैक्षिक अर्हुताएं पदोन्नत व्यक्तियों के लिये प्रयोज्य होगी।

 परिवीक्ष। की ग्रविव यदि कोई हो। दो वर्ष जिसे नियुक्ति प्राधिकारी किन्हीं कारणों से लिखित रूप में होंगे एक वर्ष बढ़ा सकते हैं।

10 भर्तीका ढंगः

क्या सोधी भर्ती द्वारा श्रवबा पदोन्नति द्वारा श्रयबा प्रतिनियुक्ति/ स्थानान्तरण द्वारा तथा विभिन्न दंगों से रिक्त 100 प्रतिशत सीधी भर्ती द्वारा

स्थानों को भरने की प्रतिशतता।

- 11 पदोन्नति, प्रतिनियुनित तथा स्श्रानान्तरण द्वारा भूतीं की स्थिति में वह देतनक्रम जिस में से भदोन्नति, प्रतिनियुन्ति तथा हे स्थानान्तरण किया जाना है।
- 12. यदि विभागीय पदो- वह सिमिति जो समय समय पर न्नित सिमिति विद्यमान सरकार द्वारा रची गई हो। हो तो इस की रचना क्या है।
- 13. परिस्थितियां जिल के कानून के अनुसार अन्तर्गत लोक सेवा आयोग का परामर्श भर्ती करने के लिये लेना है।

पाद टिप्पणियाः

- उप युंक्त सेवा या पद के लिये यह जरूरी है कि उम्मीदणार निम्नलियत हो :
  - (क) भारतीय नागरिक, या (ख) नेपाल की प्रजा, या

(ग) भूटान की प्रजा, या (घ) तिब्धती विस्थापित हो जोकि 1 जनवरी, 1962 से ९ पहले भारत में स्थाई रूप से रहने के उद्देश्य से धाया हो, या

(अ) भारतीय मूल का व्यक्ति जो पाकिस्तान, बर्मा, श्री लंका, पूर्वी प्रफीका, कीनिया, यूगांडा, संयुक्त गणतन्त्र तेंजानिया इससे पूर्व तांगानिका श्रीर जन्जीवार, जांबिया, मालकी, जैयर तथा इथोपिया से भारत में स्थाई रुप से रहने के उद्देश्य से भाया हो:

उपबन्धित है कि वर्ग (ख), (ग), (घ) और (ङ) से सम्बन्धित वही प्रत्यामी माना जायेगा जिस का भारत सरकार/राज्य सरकार ने पानुता का प्रमाण-पन्न जारी किया हो।

प्रत्याणी जिसके बारे में पात्रता का प्रमाण-पत्न प्रनिवार्य हो, को भी हिमाचल प्रदेश लोक सेवा प्रायोग या प्रत्य भर्ती प्राधिकरण द्वारा आयोजित साक्षात्कार या किसी परीक्षा में बैठने की प्राञ्चा दी जा सकती है, परन्तु उसे नियुक्ति का प्रस्ताव तभी दिया जायेगा जब कि उसे पात्रता का प्रावश्यक प्रमाण-पत्न भारत सरकार / हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा जारी किया गया हो।

- 2. धनुसूचित जातियों / धनुसूचित जन जातियों के उम्मीदिवारों तथा अन्य वर्गों के व्यक्तियों के लिये उच्चतम आयु सीमा में उतनी छूट देय है जितनी हिमाचल प्रदेश सरकार के सामान्य अधवा विशेष अनुदेशों के अन्तर्गत अनुमत है।
- 3. सीधी भर्ती के लिये श्रायु सीमा श्रायोग द्वारा भावेदन-पत्न प्राप्त करेंसे के लिये निश्चित की गई श्रन्तिम तिथि से गिनी जायेगी।
- 4. सिधी भर्ती की स्थिति में प्रत्यथा विशिष्ट योग्यता प्राप्त जम्मीदवार के लिये श्राय तथा अनुभव से सम्बन्धित योग्यताश्रों में श्रायोग के विवेकानुसार छूट देय होगी।
- 5. जब कभी खाना 2 के अधीन पदों की संख्या में बृद्धि अथवा कभी की गई हो तो हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के परामर्श से खाना संख्या 10 और 11 के उपबन्ध सरकार द्वारा संशोधित किये जियेंगे।
- 6. जबिक सरकार की यह राय हो कि यह करना भ्रावश्यक भ्रथवा उचित है तो वह लिखित रूप में इसके कारण रिकार्ड करके तथा हिमाचल प्रदेश लोक सेवा भ्रायोग से परामर्श लेकर व्यक्तियों भ्रथवा पद की किसी भी श्रेणी भ्रथवा वर्ग के सम्बन्ध में इन नियमों

के किसी भी उपबन्ध में छूट देने का आरदेश कर सकती है।

- 7. मीधी भर्ती की स्थित में नियुक्ति के लिये च्यन, मौखिक परीक्षा के आधार पर या यदि अत्योग ऐसा ब्रावण्यक ब्रथना उचित समझे तो लिखित परीक्षा द्वारा, जिस का स्तर, पाठ्यक्रमे इत्यादि ब्रायोग द्वारा निर्धारित होगा ब्रथवा व्यवहारिक परीक्षा द्वारा किया जायेगा।
- 8. ऐसे सभी प्रकरणों में जबकि कोई कनिष्ठ व्यक्ति कीडर पद पर प्रपनी कुल सेवा ग्रविध (तदर्य सेवा सिहत) के ग्राधार पर (पदोन्नति ग्रादि) विचार पान्न होता है तो सम्बन्ध वर्ग में उससे वरिष्ठ सभी व्यक्ति ऐसे विचार के लिये पान माने जायेंगे ग्रीर कनिष्ठ व्यक्तियों से ऊपर रखे जायेंगे:

उपबन्धित है कि ऐसे सभी व्यक्तियों, जो पदोन्निति,स्थाइकरण के लिये विचाराधीन हों, उनकी कम से कम तीन वर्ष की न्यूनर,म अहं कारी सेवा होनी चाहिये अथवा वह अहं ता जो कि ऐसे पदेसेवा के भर्ती तथा पदोन्नित नियमों में निर्धारित हो, दोनों में मे जो भी कम हो:

श्रागे उपबन्धित है कि जब कोई व्यक्ति पूर्व वर्ती प्रन्तुक में निर्धारित के कारण पदोन्नति/स्थाइकरण हेतु विचार करने के लिये अयोग्य होता हो तो ऐसे व्यक्ति जो उससे किन्छ हों, को भी ऐसी पदोन्नति/ स्थाइकरण के लिये अयोग्य समक्षा जायेगा।

- 9. जासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायन निकायों के सभी कर्म -चारियों जो इन जासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायन निकायों के प्रारम्भिक गठन के समय इन से पहले अन्तर्लयन सरकारी कर्मचारी थे, को भी सरकारी कर्म चारियों की भांति सीधी भर्ती में आयु सीमा में छूट होगी। इस प्रकार की छूट जासकीय क्षेत्र के निकामों तथा स्वायन निकायों के उन कर्म चारियों को उपलब्ध नहीं होगी जो उन्त निकामों/ स्वायन निकायों द्वारा बाद में भर्ती किये गये हों शीर इन जासकीय क्षेत्र के निकामों/स्वायन्त निकायों के प्रारम्भिक गठन के बाद अन्तिम रूप से उन निकामों/स्वायन्त निकायों में अन्तर्कीन हो गये हों।
- 10. उक्त सिषा में नियुक्ति प्रनुसूचित जातियों, प्रनुसूचित जन-जातियों, पिछड़े चर्गों, प्रन्त्योदय के प्रन्तगंत चयनित परिषारों इत्यादि के लिए सिषामों में हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा समय समय पर जारी किये गये आदेशों के प्रधीन होगा ।

परिशिष्ट-6 हिन्दी ग्रनुबादक

पद का नाम
 पूदों की संस्था

एक

3. द्याीकरण

म्लास तीन (ग्रराजपवित)

4. वेतनमान

TO 570-15-600-20-700/25-850/30-1000-40-1080.

 क्या प्रकरण पद है अचका अप्रकरण अप्रकरण पद ।

6. सीधी भर्ती दालों के कम से कम 18 दर्पधिक से धरिक लिये प्रायु। 30 दर्ष। 7. मीधी भर्ती के लिए फ्रिनिदार्य:

 तीधी मर्ती के लिए प्रपेक्षित न्यूततम गैक्षिक तथा भ्रन्य ग्रह्ताएं।

किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से कम से कम स्नातक की डिग्री जिस में एक विषय हिन्दी हो।

डिजायरेबल:

हिमाचल प्रदेश की रीति रिवाजों तथा बोलियों का ज्ञान तथा प्रदेश के चिद्यमान विशिष्ट परिस्थितियों में नियुक्ति के लिये उपयुक्तता।

 क्या पदोल्ति की नहीं स्थिति में सीधी भर्ती के लिये निर्धारित ग्रायु तथा शैक्षणिक ग्रहेताए पदोल्तत व्यक्तियों के लिये प्रयोज्य होगी।

9. परिवीक्षा की ग्रविध दो वर्ष लिखित रूप में विशेष यदि कोई हो। परिस्थितियों में यह निधुक्ति अधिकारी द्वारा एक वर्ष तक ग्रीर बढ़ाई जा सकती है। 10. भर्ती का ढंगः क्या भर्ती द्वारा पदोन्तित द्वारा/पदोन्तित के लिये उप- अथवा पदोन्तित द्वारा पुक्त व्यक्ति न मिलने पर सीधी अथवा प्रतिनियुक्ति/स्था- भर्ती द्वारा। नान्तरण द्वारा नथा विभिन्न ढंगों से रिक्त स्थानां की भरने की प्रतिगतता।

11 पदान्तितः प्रतिनियुक्तिः विरिष्ठ लिपिक जो कम से कम हिन्दी स्थानान्तरण द्वारा विषय के माथ इंटरमीडियेट या इसके अतीं की स्थिति में बरावर शैक्षिक योग्यता रखता हो वह वेतन कम जिसमें स्रोर जिस का पद पर कम में कम पांच पदोन्नितः प्रतिनियुक्तिः वर्ष का अनुभव हो ।

स्यानान्तरण किया

जाना है । 12. यदि विभागोय पदोन्तनि जैसा समय समय पर सरकार द्वारा गठित ममिति विद्यमान है तो | की गई हो ।

इसकी रचना क्या है।

13. परिस्थितियां जिन के जैसा इस सम्बन्ध में कानून में हो
अन्तर्गत लोक संबा
आयोग का परामशं
भर्ती करने के लिये
नेता है।

पाद टिप्पणियाः

 उपयुंक्त सेवा या पद के लिये यह जरूरी है कि उम्मीदवार निम्नलिखित जो :-

(क) भारतीय नागरिक, या

(ख) नैपाल की प्रजा, या

(ग) भूटान को प्रजा, या

(ष) तिञ्जती विस्थापित हो जो कि 1 जनवरी, 1962 में पहले मारत में स्थाई रूप मे रहने के उद्देश्य से ग्राया हो, या

(इ) भारतीय मूत्र का व्यक्ति जो पाकिस्तान, बर्मा, श्री लंका, पूर्वी अफीका, कीनिया, पूर्योडा, संयुक्त गणतन्त्र तेंजानिया इमसे पूर्व तांगानिका और जन्जीबार, जांबिया, मालवी, जेयर तथा इचोपिया से भारत में स्वाई रूप से रहने के उद्देश्य में आया हो

उपबन्धित है कि वर्ग (ख),(ग),(घ) और(ङ) से सम्बन्धित वही प्रत्याची माना जायेगा जिस को भारत सरकार/राज्य सरकार/ ने पात्रता का प्रमाण-पत्र जारी किया हो।

प्रत्याशी जिसके बारे में पायता का प्रमाण-पत्र प्रतिवार्य हो, को भी दिसाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग या अन्य भर्ती प्राधिकरण द्वारा आयोग सा अन्य भर्ती प्राधिकरण द्वारा आयोगित साक्षात्कार या किसी परीक्षा में बैठने की आजा दी जा सकती है. परन्तु उसे नियुक्ति का प्रस्ताव तभी दिया जायेगा जब कि उसे पात्रता का आवश्यक प्रमाण-पत्र भारत संस्कार/हिमाचल प्रदेश संस्कार द्वारा जारी किया गया हो।

- 2. अन्तर्ज्ञित जातियों/अनमूचित जन जातियों के उम्मीदवारों तथा अन्य वर्गों के व्यक्तियों के नियं उच्चनम श्रायु मीमा में उत्तनी छूट देय है जितनी हिमाचन प्रदेश सरकार के सामान्य श्रयवा विशेष अनुदेशों के अन्तर्गत अनुमत है।
- मीधी भर्ती के लिये ब्रायु मीमा बायोग द्वारा ब्रावेदन-पत प्राप्त करने के लिये निश्चित की गुई ब्रिलिम तिथि से मिनी जायेगी।
- 4. सीघी भर्ती की स्थित में अन्यथा विशिष्ट योग्यता प्राप्त उम्मीद-बार के लिये आयु तथा अनुभव में सम्बन्धित योग्यताओं से आयोग के विवेकानुसार छूट देय होगी।
- 5. जब कभी खाना 2 के अधीन पदों की संख्या मे वृद्धि अथवा कमी की गई हो तो हिमावन प्रदेण लोक सेवा अथोग के परामणें से खाना मध्या 10 और 11 के उपबन्ध मरकार द्वारा संजोधित किये जायेंगे।
- 6. जबिक सरकार की यह राम हो कि यह करना आव्ययक अयवा जिनत है तो वह लिखित रूप में इसके कारण रिकार्ड करके तथा हिमाचल प्रदेग लोक सेवा प्रायोग से परामणे लेकर व्यक्तियों प्रथवा पद को किसी भी श्रेणी प्रथवा वर्ग के सम्बन्ध में इन नियमों के किसी भी उपबन्ध में छुट देने का प्रादेण कर सकती है।

7. सीधी भर्ती की स्थित में नियुक्ति के लिये चयन, मीखिक परीक्षा के श्राधार पर या यदि श्रायोग ऐसा श्रावश्यक श्रथवा उचित समझे तो लिखित परीक्षा द्वारा, जिस का स्तर, पाठ्यकम इत्यादि श्रायोग द्वारा निर्वारित होगा श्रथवा व्यवहारिक परीक्षा द्वारा किया जायेगा।

8. ऐसे सभी प्रकरणों में जबकि कोई कनिष्ठ व्यक्ति फीडर पद पर प्रपती कुल सवा ग्रवधि (तदर्थ सवा सहित) के ग्राधार पर (एदोन्नति ग्रादि) विवार पात होता है तो सम्बन्ध वर्ग में उससे बरिष्ठ सभी व्यक्ति ऐसे विवार के लिये पात माने जायेंगे ग्रीर कनिष्ठ व्यक्तियों से उत्तर रखे जायेंगे:

उपबन्धित है कि ऐसे सभी व्यक्तियों, जो पदोन्नति/स्थायीकरण के लिये विवाराधीन हों, उनकी कम संकम तीन वर्ष की न्यूनतम प्रहंकारी सेवा होनी चाहिये प्रथवा वह प्रहुंता जो कि ऐसे पद/ भेवा के भर्ती तथा पदोन्नति निथमों में निर्धारित हो, दोनों में से जो भी कम हो :

प्रागे उपबन्धित है कि जब कोई व्यक्ति पून वर्ती परन्तुक में निर्वारित के कारण पदोन्निति/स्थाइकरण हेतु विचार करने के लिये प्रयोग्य होता हो तो ऐसे व्यक्ति जो उत्तसे कनिष्ठ हो, को भी एसी पदोन्निति/ स्थाइकारण के लिये ग्रयोग्य समझा जायेगा।

9. शासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत्त निकायों के सभी कर्मचारियों जो इन शासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत्त निकायों के
प्रारम्भिक गठन के समय इन से पहले अन्तर्लयन सरकारी कर्मचारी थे,
की भी सरकारी कर्मचारियों की भांति सीधी भर्ती में श्रायु सीमा में छूट
होगी। इस प्रकार की छूट शासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत्त निकायों
के उन कर्मचारियों को उपलब्ध नहीं होगी जो उक्त निथमों/स्वायत्त
निकायों द्वारा बाद में भर्ती किये गये हों श्रीर इन शासकीय क्षेत्र में निगमों/
स्वायत्त निकायों के प्रारम्भिक गठन के बाद श्रन्तिम रूप से उन निगमों/
स्वायत्त निकायों में श्रन्तर्लीन हो गयें हों।

10. उक्त सेवा में नियुक्ति अनसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों पिछड़े वर्गों अन्त्योदय के अन्तर्गत चयनित परिवारों इत्यादि के लिये सेवाओं में हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा समय समय पर जारी किये गये आदेशों के अधीन होगा।

परिशिष्ट-7

1. पद का नाम

अनुलिपिक चालक (बुप्लिकेटिंग मंगीन आपरेटर)

2: पदों की संख्या

3. वर्गीकरण

तृतीय श्रेणी (ग्रराजपवित)

4. वेतनमान

हपये 400-10-450/15-525/ 15-600.

 क्या प्रवरण पद है अथवा अप्र- अप्रवरण पद वरण पद।

सीधी भर्ती वालों के लिये श्राय 18 से 30 वर्ष तक

7. सीघी भर्ती के लिये अपेक्षित दसवीं तक (स्कूल शिक्षा पास) तथा न्यूनतम ग्रीक्षक तथा अन्य अर्हताएं। अनुलिपिक (बुष्तिकेटिंग मणीन) चलाने का 2 वर्ष का

ग्रनुभवं । नहीं ।

8. क्या पदोन्नति की स्थिति में मीधी भर्ती के लिये निर्धारित ग्रायु तथा मैंक्षिक ग्रह तायें पदो-न्नत व्यक्तियों के लिये प्रयोज्य होगी।

 परिवीक्षा की प्रविधि, यदि कोई हो।

2 वर्ष जिसे नियुक्ति प्राधिकारी किन्हीं कारणों से जो लिखित रूप से होंगे एक वर्ष बढ़ा सकते हैं।

10. भर्तीका ढंगः

क्या सीधी भर्ती द्वारा प्रथवा पदोन्नित द्वारा धयवा प्रति-नियुक्ति / स्यानान्तरण द्वारा तथा विभिन्न ढंगों से रिक्त स्यानों को भरने की प्रति-शतता। 100 प्रतिमत पदोन्नितृ द्वारा लेकिन उपयुक्त पात्र न मिलने पर सीघी भर्ती द्वारा ।  पदोन्नति, प्रतिनियुक्ति/स्था-नान्तरण द्वारा भर्ती की स्थिति में बह वेतन कम जिसमें से पदोन्नति, प्रतिनियुक्ति/स्थाना-न्तरण किया जाना है।

दफतरी से जिस का इस पद पर 3 वर्ष का अनुभव हो।

अपनी कुल सेवा अवधि (तदर्थ सेवा सहित) के आधार पर (पदी-न्नति न्नादि) विचार पान होता है। तो मम्बन्धित वर्ग में उसमे बरिष्ठ सभी व्यक्ति एसे बिचार के लिये पात माने जायेंगे और कनिल्ड व्यक्तियों से उपर रखे जायेंगे।

12 वर्ष विभागीय पदोन्नति रीमिति विद्यमान है तो इस की रचना क्या है।

वह समिति जो समय-समय पर सरकार द्वारा रची गई हो।

उपबन्धित है कि ऐसे सभी व्यक्तियों, जो पदौन्नति/स्थाईकरण के लिये विवाराधीन हो, उनकी कम में कम तीन वर्ष की न्यूनतम ग्रहकारी सेवा होनी चाहिये ग्रथवा वह ग्रह ता जीकि ऐसे पद/सवा के भर्ती तथा पदोन्नति नियमों में निर्धारित हो, दोनों में से जा भी

3. परिस्थितियां जिन के अन्त -गंत लोक सेवा स्रायोग का गरामर्ग भर्ती करने के लिये लेना है।

कानून के अनुसार।

श्रागे उपबन्धित है कि जब कोई व्यक्ति पूर्ववर्ती परन्तुक में निर्वा-रित के कारण पदोन्नति/स्थाईकरण हेतु विचार करने के लिय भ्रयोग्य होता हो तो ऐसे व्यक्ति जो उससे कनिष्ठ हो, को भी एसी पदोन्नति/ स्वाईकरण के लिय ग्रायोग्य समझा जायेगा।

पाद टिप्पणियां :---

1,

1. उपयुंक्त सेवा या पद के लिये यह जरुरी है कि उम्मीदवार निम्नलिखित हों :-

9. शामकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत निकायों के सभी कम -चारियों जो इन शामकीय क्षेत्र निगनों तथा स्वायन निकायों के प्रारम्भिक गठन के समय इनसे पहले अन्तेलयन सरकारी कर्मचारी ये को भी सरकारी कर्मचारियां की भांति मीबी भर्तों में ब्रायु मीमा में छूट होगी। इस प्रकार की छूट शासकीय क्षेत्र के निगमों तया स्वायत्त निकायों के उन कर्मवारियों को उपलब्ध नहीं होगी जो उक्त निगमों/स्वायक्त निकायों द्वारा द्वाद में भर्ती किये गय हों ग्रीर इन जामकीय क्षेत्र में निगमो स्वायत्त निकायों के प्रारम्भिक गठन के बाद श्रन्तिम रूप में उन निगमों: म्बायन निकायों में अन्तंतीन हो गये हों।

(क) भारतीय नागरिक, या (ख) नेपात्र की प्रजा, या

10. उक्त सेवा में नियुक्ति अनुमूचित जातियों, अनुमूचित जन जातियों,

(ग) भुटान की प्रजा, या (घ) तिञ्चती विस्थापित हो जोकि एक जनवरी , 1962 स

> पिछड़ वर्गों, अन्त्योदय के अन्तं गत चयनित परिवार इत्यादि के लिय सेवाओं में हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किये गये ब्रादेशों के मधीन होगा।

पहले भारत में स्थाई रुप से रहने के उदेश्य से ग्रामा हो, या (इ) भारतीय मूल का व्यक्ति जो, पाकिस्तान, वर्मा, श्री लंका, पूर्वी अफ़ीका, कीनिया, यूगांडा, संयुक्त गणतन्त्र, तजानिया, इससे पूर्व तागानीका और जन्जीवार, जाबिया, मालवी, जेयर तथा इयोपिया से भारत में स्थाई रूप से रहने के उदेश्य से आया हो।

#### परिशिष्ट-8

उपबन्धित है कि वर्ग (ख) (ग) (घ) (ङ) संसम्बन्धित वही प्रत्याशी माना जायेगा जिसको भारत सरकार/राज्य सरकार ने पात्रता का प्रमाण पत्र जारी किया हो।

1 पद का नाम वाहन चालक 2. पढ़ों की संख्या 3 3. वर्गोकरण तृतीय श्रेणी (ग्रराजपवित )।

 प्रत्याशी जिसके बारे में पालता का प्रमाण पत्र ग्रनिवार्य हो, को भी हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग या अन्य भर्ती प्राधिकरण द्वारा श्रायोजित साक्षात्कार या किसी परीक्षा में वैठने की स्राज्ञा दी जा सकती है, परन्तु उसे नियुक्ति का प्रस्ताव भी दिया जाये जब कि उसे पानता का आवश्यक प्रमाण पन भारत सरकार हिमाचन प्रदेश सरकार द्वारा जारी किया गया

4. वेतनमान TO 400-10-450/15-525/ 15-600 1

2. 📺 वित जातियों/प्रनुसूचित जन-जातियों के उम्मीदवारों तथा अन्य वना में व्यक्तियों के लिये उच्चतम आयु सीमा में उतनी छूट देय है जितनी हिस्स्या प्रदेश सरकार के सामान्य ग्रयवा विशेष श्रनुदेशों के श्रन्तं गत अनुमत् 🤄 ।

5. क्या प्रवरण पद है अवधा अप्रवरण पद । पद । श्र**प्रवर्**ण

3. सीधी भर्ती के लिये आयु सीमा आयोग द्वारा आवेदन पत प्राप्त करने के लिये निश्चित भी गई अन्तिम तिथि से गिनी जायेगी।

6. सीधी भर्ती बालों के लिये . 18 से 30 वर्ष । श्राय्।

 सीधी भर्ती की स्थिति में प्रन्यथा विशिष्ट योग्यता प्राप्त उम्मीद-वारों के लिये भायुं तथा अनुभव से सम्बन्धित योग्यताओं में आयोग के विवेकानुसार छूट देय होगी।

7. सीघी भर्ती के लिये अपेक्षित न्यनतम शक्षिक तथा अन्य श्रह ताएं।

> वह व्यक्ति जो दसवी पास हो। उसे प्राथमिकता दी जायेगी। नहीं

चलाने का नाईसैन्स

ज्ञान ।

हैं।

पहाड़ी स्थानों पर छोटी गाडी

इन्जन व इस की सम्भाल का

5. जब कभी खाना 2 के अधीन पदों की संख्या में वृद्धि अथवा कमी की एई हो तो हिमाचल प्रदेश लोक मेवा आयोग के परामर्श से खाना असंख्या 10 ग्रीर 11 के उपवन्ध सरकार द्वारा संगोधित किये जायेंगे ।

 क्या पदोन्नित की स्थिति में सीधी भर्ती के लिये निर्धारित श्राय तथा शैक्षिक सर्हतायें पदोन्नत व्यक्तियों के लिये प्रयोज्य होगी ।

दो वर्ष जिसे नियुक्ति प्राधिकारो 9. परिवीक्षा की प्रविधि. यदि किन्हीं कारणों से जो लिखित कोई है। रुप में होगें एक वर्ष बढ़ासकते

 जबिक सरकार की यह राथ है कि यह करना ग्रावश्यक ग्रथवा उचित है तो यह लिखित रूप में इस के कारण रिकार्ड करके तथा हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग से परामर्श लेगर व्यक्तियों अथवा पद की किसी भी श्रेणी अथवा वर्ग के सम्बन्ध में इन नियमों के किसी भी उपबन्ध में छट देने का भ्रादेश कर सकती है।

10 भर्ती का इग :--क्या सीधी भर्ती द्वारा अथवा पदोन्नति द्वारा ग्रंबना प्रति-नियुक्ति।/स्थानान्तरण द्वारा तथा विभिन्न ढंगों से रिक्त स्थानों को भरन की प्रति-

शतता ।

100 प्रतिशत सीधी पर्ती दारा ।

प्र. सीधी भर्ती की स्थिति में नियुक्ति के लिये चयन, मौखिक परीक्षा के आधार पर या यदि आयोग ऐसा आवश्यक अथवा उचित समझे तो निखित परीक्षाद्वारा, जिसका स्तर, पाठयक्रम इत्यादि आयोग द्वारा निर्द्वारित होगा प्रथमा व्यवहारिक परीक्षा द्वारा किया जायेगा।

प्रतिनियुक्ति/ 11. पदोन्नति, स्थानान्तरन द्वारा भर्ती की स्थिति में वे वेसन कम जिस

ऐसे सभी प्रकरणों में जबकि कोई कनिष्ठ व्यक्ति फीडर पद पर

में से पदोन्नति प्रतिनिधिक्त स्थानान्तरण किया जाना है।

12. यदि विभागीय पदोन्नति वह समिति जो समय-समय पर समिति विद्यमान है तो इसकी सरकार द्वारा रची गई हो। रचना नया है।

13 परिस्थितियां जिन के घन्तगंत कानून के अनुसार। लोक सेवा ग्रायोग का परामर्शा मर्ती करने के जिये लेना है।

#### बाद टिप्पणियां :--

- उपयुंक्त सेवा या पद के लिये यह जबरी है कि उम्मीदवार निम्न-लिखिस हो :--
  - (क) भारतीय नागरिक, या
  - (ख) नेपाल की प्रजा, या

(ग) भुटान की प्रजा, या

(घ) तिञ्बती विस्यापित हो जोकि एक जनवरी, 1962 से पहले भारत में स्थाई रूप से रहने के उदेश्य से प्राया हो, या

(इ) भारतीय मूल का व्यक्ति जो पाकिस्तान, वर्मा, श्री लंका, पूर्वी ग्रफीका, कीनिया, यूगांझा, संयुक्त गणतंत्र, तजानिया इससे पूर्व तागानिका भीर जन्जीवार, जांबिया, मालवी, जैयर तथा इयोपिया से भारत में स्थाई रूप से रहने के उदेश्य से भाया हो ।

उपवन्धित है कि वर्ग (ख) (ग) (घ) (ङ) से सम्बन्धित वही प्रत्याशी माना जायेगा जिसका भारत सरकार/ राज्य सरकार ने पानता का प्रमाण पत्र अगरी किया हो ।

प्रत्याशी जिसके बारे में पालता का प्रमाण पत्र प्रनिवार्य हो, को भी हिमाचल प्रदेश लोक सेवा ग्रायोग या ग्रन्य भर्ती प्राधिकरण द्वारा ग्रायोजित साक्षात्कार या किसी परीक्षा में बैठने की ग्राजा दी जा सकती है, परन्तु उसे नियक्त का प्रस्ताव भी दिया जाये जब कि उसे पावता का ग्रावश्यक प्रमाण पत्न भारत मरकार/ हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा जारी किया गया हो ।

- 2. प्रनुसूचित जातियों/ प्रनुसूचित बनजातियों के उम्मीदवारों तथा प्रन्य बगों के व्यक्तियों के लिये उच्चतम प्रायु सीमा में उतनी छूट देय है जितनी हिमाचल प्रदेश सरकार के सामान्य प्रथवा विशेष भनुदेशों के अन्तर्गत अन्मत है।
- 3. सीधी भर्ती के लिये भाय सीमा भायोग द्वारा भावेदन पत्र प्राप्त करन के लिये निश्चित की गई मन्तिम तिथि से गिनी जायेगी।
- 4. मीधी भर्ती की स्थिति में घन्यया विशिष्ट योग्यता प्राप्त उम्मीद-वारों के निये प्रायु तथा अनुभव से सम्बन्धित योग्यताओं में आयोग के विवेकानुसार छूट देव होंगी ।
- 5. जब कमी खाना 2 के प्रधीन पदों की संख्या में वृद्धि ग्रयका कमी की गई हो तो हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के परामर्श मे बाना संख्या 10 ग्रीर 11 के उपबन्ध सरकार द्वारा संशाधित किये जायेंगे।
- 6 जबकि सरकार की यह राय हो कि यु ा ना भावश्यक ष्मया उचित है तो वह लिखित रूप में इसके कारण रिकार्ड करके तथा हिमाचल प्रदेश लोक सेवा ग्रायोग से परामर्श लकर व्यक्तियों ग्रयवा पद की किसी भी श्रेणी ग्रयवा वर्ग के सम्बन्द में इन नियमों के किसी भी उपबन्ध में छूट देने का भादेश कर सकती है।
- 7. मीधो भर्ती की स्थिति में नियक्ति के लिये चयन, मौखिक परीक्षा के प्राधार पर या यदि ग्रायोग ऐसा ग्रावण्यक ग्रथवा उचित समने तो निश्चित परीक्षा द्वारा, जिसका स्तर, पाठयकम इत्यादि भायोग द्वारा निर्धारित होगा अयदा व्यावहारिक परीक्षा द्वारा किया
- 8. ऐसे सभी प्रकरणों में जबकि कोई कनिष्ठ व्यक्ति फीडर पद पर ग्रपनी कुल सेवा ग्रवधि (तदर्थ सेवा सहित) के ग्राधार पर (पदोन्नित ग्रादि) विचार पात्र होता है तो सम्बन्धित वर्ग में उससे वरिष्ठ समी व्यक्ति ऐसे विवार के लिये पात्र माने जायेंगे। ग्रीर कनिष्ठ व्यक्तियों में ऊपर रखे जायेंगे।

उपबन्धित है कि ऐमें सभी व्यक्तियों, जो पदोन्नति/स्थाईकरण के लिए विवाराधीन हो, उनकी कम से कम तीन वर्ष की न्यूनतम महंकारी सेवा होनी चाहिए अयवा वह झहंता जांकि ऐसे पद/सेवा के भर्ती तथा पदोन्नति नियमों में निर्धारित हो, दोनों में से जो भी

ग्रागे उपबन्धित है कि जब कोई व्यक्ति पूर्ववर्ती परन्तुक में निर्धारित के कारण पदोन्नति/स्थाईकरण हेतु विचार करने के शिलये ग्रयोग्य होता हो तो ऐसे व्यक्ति जो उससे कनिष्ठ हो, को भी ऐसी पदो-न्नति/स्थाईकरण के लिये त्रायोग्य समझा जायेगा।

9. शासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत्त निकायों के लीभी कर्मचारियों जो इन शासकीय क्षेत्र निगमों तथा स्वायत्त निकायों के प्रारम्भिक गठन के समय इनसे ग्रन्तंलयन सरकारी कर्मचारी थे को भी सरकारी कर्मचारियों की भांति सीधी भर्ती में श्राय सीमा में छुट होगी। इस प्रकार की छुट शासकीय क्षेत्र के निगमों तथा स्वायत्त निकायों के उन कर्मचारियों को उपलब्ध नहीं होगी जो उक्त निगमों/स्वायत्त निकायों द्वारा बाद में भर्ती किये गये हों श्रीर इन शासकीय क्षेत्र में निगमों/स्वायत्त निकायों के प्रारम्भिक गठन के बाद ग्रन्तिमारूप से उन निगमों (स्वायत्त निकायों में ग्रन्त्लीन हो गये हों।

10. उक्त सेवा में नियुक्ति ग्रनुसूचित जातियों, जन-जातियों, पिछड़े वर्गी, ग्रन्त्योदय के ग्रन्तगंत चयनित परिवारों इत्यादि के लिये सेवाग्रों में हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किये गये आदेशों के आधीन होगा।

> M. S. MUKHERJI. Secretary.

#### कस्याण विभाग

#### **प्रधिसूचना**

शिमला, 20 मार्च, 1982

संख्या कल्याण-क (3)-2/79.--हिमाचल प्रदेश नियम 1979 की धारा 65 के प्रधीन निहित शक्तियों का प्रयोग करत हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल सहर्ष निम्नलिखित नियम बनाते हैं:--

#### हिमाचल प्रदेश बाल-नियम, 1981

- 1. संक्षिप्त नाम भौर प्रारम्म (1) यह नियम हिमाचल प्रदेश बालक नियम, 1981 कहे जा सकते हैं।
  - (2) तुरन्त प्रवृत होंगे।
- 2. परिभाषाएं --- इन नियमों में जब तक सन्दर्भ से झन्यथा पपेक्षित न हो:--

(क) 'श्रिधिनियम' से हिमाचल प्रदेश बाल ग्रिधिनियम 1979 (1979 का प्रधिनियम संख्यक 21) ग्रिभिन्नेत है;

(ख) ''उपस्थिति केन्द्र'' से प्रभिष्ठेत है, वह स्थान जो निरीक्षक द्वारा समय-समय पर नियुक्त बाल प्रथवा माता-पिता सरक्षक ग्रयवा ग्रधिनियम के उपबन्धों के ग्रधीन उपयक्त व्यक्ति की देख रेख में रखे गए, बालकों ऐसे-एसे दिन ऐसे समय जो इस निमित मुख्य निरीक्षक द्वारा निर्णय किया जाए उपस्थिति हेतु नियत किया गया है;

(ग) "मुख्य निरीक्षक" से भ्रधिनियम भ्रथवा इन नियमों के प्रयोजनार्थ मुख्य निरीक्षक के रूप में नियुक्त हिमाचल प्रदेश सरकार का ग्रधिकारी अभिप्रेत है;

(घ) "न्यायालय" से बाल न्यायालय अभिप्रेत है

(ङ) "प्रपत्न" से इन नियमों से संलग्न प्रपत्न ग्रिभिप्रेत है;

(च) "गृह" से बाल गृह अथवा प्रेक्षण गृह अभिप्रेत है;

(छ) प्रबन्धक से धारों 9, 10 ग्रथवा 11 की उप-घारा (2) के प्रधीन राज्य सरकार द्वारा प्रमाणित गृह अयवा स्कूल का प्रबन्ध करने वाला व्यक्ति भ्रभिष्रेत रि

(ज) "संस्था" से अभिन्नेत है और उसम अन्तर्गत भाग है बाल गृह, विशेष स्कूल, ग्रथवा प्रेक्षण गृह । (झ) "धारा" से श्रविनियम की धारा ग्रीभप्रत है;

(न) स्कूल से विशेष स्कूल ग्रभिप्रेत है;

(ट) "ग्रधीक्षक" से इन नियमों के नियम-25 के उप-नियम

(1) के अधीन गृह अथवा स्कूल के नियन्त्रण अथवा अधीक्षण हेतु नियुक्त कोई व्यक्ति अभिन्नेत है

(ठ) प्रत्य सभी प्रयुक्त शब्दों तथा पदों, के अर्थ जो परिभा-षित नहीं है। वहीं होंगे जो उन्हें प्रभिनियम में दिए गए हैं।

3. प्राधिकारियों की नियुक्ति.— प्राधिनियम तथा नियमों के प्रयोद्धानों को कार्योन्वित करने हे तु सरकार समय-समय पर नियन लिखित प्रधिकारियों को सेवा निर्वन्धनों एवं शतों पर जैसी कि बह समय-समय पर बिहित करे, नियुक्त कर सकती है:—

(क) मुख्य निरीक्षक,

- (ख) निरीक्षक तथा सहायक निरीक्षक।
- (ग) ऐसे अन्य अधिकारी जैसे आवश्यकता हो।
- 4. भरती, प्रशिक्षण तथा सेवा के निर्वेन्धन व गर्ते प्रधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने हेतु नियुक्त व्यक्तियों के भूती एवं प्रशिक्षण को शासित करने वाले नियम और उनको सेवा निर्वेन्धन एवं शर्ते ऐसी होंगी जैसी समय-समय पर सरकार विहित की जाएगी।
- 5. परिवीक्षा श्रधिकारी की श्रहुँताएं श्रौर कत्वंय.—(1) परि-वीक्षा श्रधिकारी की श्रहुँताएं ऐसी होगीं जैसी कि सरकार द्वारा समय समय पर विहित की जायेगीं।
- (2) पुलिस स्टेशन के प्रभारी अधिकारी से अधिनियम की धारा 19 के खण्ड (ख) के अन्तंगत जानकारी प्राप्त होने पर और इन नियमों के नियम 12 के अन्तंगत बाल कल्याण वोर्ड के आदेश पर परिवीक्षा अधिकारी बच्चे, को पूर्व निस्त और परिवार के पूर्ण इतिहास की, तथा ऐसे अनुदैहिक परिस्थितियों की जो आवश्यक है जांच पड़ताल तथा प्रारम्भिक रिपीट अपन 1 के अनुसार सक्षम अधिकारी को, यथा सम्भवें शीझ परन्तु 10 सन्ताह के भीतर और ऐसी अगली अविध के भीते; जैसी कि सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुमत की जाएगी।
- े ९(3) प्रत्येक परिवीक्षा अधिकारी सक्षम प्राधिकारी तथा मुख्य निरीक्षक द्वारा दिए गए समस्त निर्देशों को कार्यान्वित करेगा और निम्नलिखित कर्तव्यों का अनुपालन करेगा:—
  - (1) अपनी देखरेख में गृह और स्कूल दशा, शिशुओं के आचरण चरित्र और स्वास्थ्य की जांच पड़ताल करना।
  - (2) अधिकारी के न्यायालय में नियमित रुप से उपस्थित होने और अपनी रिपॉट प्रस्तुत करने।
  - (3) डायरी, केस फाईल तथा ऐसे रजिस्टर व्यवस्थित करने जो समय-समय पर विहित किए जाएंगें।
  - (4) अपनी देख-रेख के अन्तंगत रखे गए बच्चों के स्थानों और नियोजन के स्थानों अथवा ऐसे बालकों द्वारा उपस्थित हुए स्कूलों का दौरा करने और प्रपत्न-II में यथा शीघ्र नियमित रूप से मासिक रिपोट प्रस्तुत करने।
  - (5) बालकों को सक्षम प्राधिकारी के न्यायालय या प्रेक्षण गृह से यथा सम्भव बाल गृह, स्कूल या अनुरक्षण संस्था में ले जाता ।
  - (6) उन बालकों को जो देख-रेख की ग्रवधि के दौरान श्रच्छे श्राचरण के न रहे हों, तत्काल सक्षम प्राधिकारी के समक्ष लाना ।
  - (7) परिवाक्षा ग्रधिकारी, ग्रपनी देख-रेख के ग्रन्तगत रखे गए वालक को ग्रपने निजि काम में नहीं लगाएगा ग्रौर न ही उससे निजि सेवा प्राप्त करेगन।
  - 6. सक्षम प्राधिकारी द्वारा बैठकों का ग्रायोजन करना सक्षम प्राधिकारी इसकी बैठक का गृह के परिसर में ऐसे दिन श्रौर ऐसे समय पर ग्रायोजन करेगा जो सरकार द्वारा समय-समय नियत किया जाएगा।
- 7. जांच पड़ताल में सक्षम प्राधिकारी द्वारा अपनाई जाने वाली प्राक्रिया.—(1) इस अधिनियम के अन्तं मत सभी मामले में कार्य-वाहियां यथा सम्भव सरल ढंग से संचालित की जाएगी और किसी भी तरह की अनावश्यक औपचारिकता नहीं की जाएगी। इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि जिस बाल के विरुध कार्यवाही की जा रही है वह कार्यवाही के दौरान घरेलू वातावरण ही अनुभव करें।

- (2) सक्षम प्राधिकारी इस बात का भी ध्यान रखेगा कि उसके समक्ष लाया गया बाल पुलिस अधिकारी की निगर तो के अन्ते गत न रखा जाए अपितु वह, अपने किसी रिफ्तेदार या मिन्न या परिवीक्षा अधिकारी की संगित में किसी सुविधाजनक स्थान पर जो इसके लिए यथा सम्भव निकट हो, उठ वैठ सकें।
- 8. गवाह जिनसे सक्षम प्राधिकारी द्वारा प्रक्न पुछे जाने हैं.— जब परीक्षण के लिए गवाह प्रस्तुत किए जाते हैं तो मक्षम प्राधिकारी भारतीय साक्ष्य प्रधिनियम, 1872 की धारा 165 के ग्रन्त मत प्रवत्त शक्तियों का खुला प्रयोग करते हुए उनसे वह सभी प्रण्न पूछ सकता है जिससे वालक के पक्ष में कोई सूत्र निकलते हों।
- 9. बाल बच्चे का परीक्षण.—बाल के परीक्षण तथा उसके कथन अभिलेख करते समय, सक्षम अधिकारी दण्ड प्रक्रिया सहिता की धारा 281 के उपबन्धों से बाध्य नहीं होगा। परन्तु वह बालक से किसी भी उचित हंग से जिससे बालक स्वयं को निष्चित समझें वह न केबल उन अपराधों के सम्बन्ध जिनके लिए वह अभियु वत है परन्तु अपने घर के बातावरण तथा जिनका उस पर प्रभाव है उन सबके दारे में तथ्य बता सकें, सम्बोधित करेगा और परीक्षण का अभिलेख इस हंग से होगा जिसे सक्षम अधिकारी, कथनों के अन्तंगत और परिस्थितियां जिन में वे की गई है को ध्यान में रखते हुए उचित समझेगा।
- 10. वालकों की आयु, णारीरिक तथा मानसिक प्रवस्था के वारे डाक्टरी राय.—वालक से सम्बन्धित प्रत्येक मामले में, सक्षम प्रविकारी बालक को उम्र, उसकी णारीरिक तथा मानमिक प्रवस्था के वारे में डाक्टरी राय प्राप्त करेगा और ऐसे मामले में आदेण पारित करते समय डाक्टरी राय और ऐसे अन्य सक्षम जो प्राप्य हो, को ध्यान में रखते हुए उसकी अग्यु के बारे में अपना अभिलेख करेगा।
- 11 बाल क्ल्याण बोर्ड द्वारा परिवीक्षा श्रीधकारी की रिपोर्ट का मांगा जाना.—धारा 14 की उप-धारा (1) के अन्तर्गत रिपोर्ट प्राप्त होने पर या धारा 13 की उप-धारा (1) के अन्तर्गत वार्ड कभी गिरफ्तार व्यक्ति को धारा 13 की उप-धारा (3) के अन्तर्गत वोर्ड के समक्ष लाया जाती है या जब कभी धारा 17 के अन्तर्गत वाल के मां बाप या सरक्षक द्वारा शिकायत की जाती है तो बोर्ड प्रायः परिवीक्षा अधिकारी को प्रपत्त—III में आदेश दे सकता है कि वह बाल के चरित्र तथा उसकी सामाजिक पूर्वनस्ति बारे में जांच पड़ताल करें।
- 12. सक्षम अधिकारी द्वारा बालक संस्विनिश्चत सूचना देना.—जब कभी सक्षम प्राधिकारी बाल को टाल गृह या स्कून में रोकने के आदेश देता है तो इसके निर्णय या आदेशों को प्रति, जिसके साथ प्रपत्न । में रोकने के बारट तथा बाल उम्र तथा पते संस्वन्धी कोई जानकारी, यदि हो और उसमें घर का कोई विवरण, व पूर्व रिकार्ड जिसका पता लगाया गया है, भी होगें, गृह या स्कूल के अधीक्षक को प्रेषित की आएगी।
- 13. देखरेख आदेश का प्रपत्न.—(1) जब जल मा बाप या संरक्षक की देखरेख में रखा गया हो और सक्षम प्राधिकारी बाल को परिवीक्षा अधिकारी की देखरेख में रखाना समीवीन समझें तो वह प्राय: देख रेख ब्रादेग, प्रपत्न-5 में जारी करेगा।
- (2) जब बाल को बाल त्यायालय द्वारा धारा 21 की उप-धारा (1): के खण्ड (घ) के अन्तर्गत जुर्माना अदा करने के आदेश दिए गए हों और उसे परिवीक्षा अधिकारी की देखरेख में रखने के आदेश दिए गए हो तो बाल न्यायालय, देखरेख आदेश प्रपत्न-IV में जारी करेगा।
- 14: बाल कल्याण बोर्ड का गठन.—(1) अध्यक्ष की अनुपस्थित में बोर्ड के कारोबार के संचालन के लिए उपस्थित सदस्य श्रपने में से एक अध्यक्ष चुनेग ।
- (2) प्रत्येक सदस्य अपनी नियुक्ति की तिथि से 2 वर्ष तक की अविध के लिए अपने पद पर बना रहेगा और ऐसी आगामी अविध के लिए यदि कोई हो जसा सरकार इस सम्बन्ध में साधारण या विशेष आदेश द्वारा उन्हें निर्देश देगी।
- (3) सरकार, बिना कोई कारण बताए सदस्य की परावधि किसी भी समय समाप्त कर सकती है।
- (4) गैर सककारो सदस्य किसी भी समय अपनी नियुक्ति से यथा सम्भव एक महीने का लिखित नोटिस देकर त्याग पत्र दे सकता है।

- (5) प्रत्येक सदस्य धपनी पदावधि के समापन पर पुनैनियुक्ति के लिए पात होगा ।
- (6) मब्स्यों में कोई भी आकस्मिक रियुक्ति दूसरे सदस्य की नियुक्ति से पूरी की जाएगी और सदस्य जो उस स्थान पर मनोनीत है उस मनय तक कार्यभार सम्भालेगा । मानों कि रियुक्ति घटित न हुई होती ।
- 15. बाल न्यायालय का गठन.—(1) बाल न्यायालय, में प्रथम श्रेणी के तीन न्याय दण्डाधिकारियों की पीठ से समाविष्ट होगा जिनमें से एक को प्रमुख दण्डाधिकारी का स्थान दिया जाएगा।
- (2) मुनवाई के दौरान किसी कारणवश प्रमुख दण्डाकारी की प्रनुपरिस्थिति में सब से बरिष्ठ प्रथम श्रेणी न्याय दण्डाधिकारी प्रमुख दण्डाधिकारी के रूप में कार्य करेगा।
- 16. प्रबन्धक का दायित्ब.—(1) सरकार द्वारा धारा 9 या 10 की उप-धारा (2) के अन्तर्गत प्रमाणित बाल गृह या चिशेष स्कूल के प्रबन्धक को, किसी भी बाल को बहुा समर्पित करवाने से पूर्व सक्षम प्रधिकारी द्वारा प्रक्रिम सूचना दी आयेगी।
- (2) जानकारी प्राप्त होने पर कथित गृह या स्कूल का प्रवस्थक बच्चे की मुपर्दगी से सम्बन्धित यदि कोई प्रापत्तियां हों तो उन्हें लिखित रूप में मूचित करेगा और कथित गृह या स्कूल में बाल की सुपर्दगी में पूर्व उन पर पूर्णतया विवार किया जाये जाएगा।

परन्तु जब ऐसे स्कूल या गृह द्वारा बाल को एक बार स्वींकार कर लिया जाता है ता वह उसकी पढ़ाई, प्रशिक्षण, प्रांवास, करड़े तथा भोजन ग्रांदि के लिये बाध्य होगा । ग्रीर ऐसी ग्रवधि के लिए उसे ऐसे गृह ग्रयवा स्कूल में रखा गया है तब तक बाल के कल्याण को पुनिष्टिन करना उसका तब तक दायित्व होगा जब तक कि गृह प्रथवा स्कूल से प्रत्याहार नहीं करता है ग्रथवा गृह ग्रथवा स्कूल से प्रमाण पत्र वापिस नहीं लेता है। उस पूरी ग्रवधि बाल जिसके लिए इस गृह ग्रथवा स्कूल में रखा जाता है।

- 17. धातक रोगों से या मार्नासक बीमारी से ग्रस्त बच्चों से व्यवहार करने का ढंग (1) जब, ग्रिधिनियम के उपबन्धों के ग्रन्तगंत गृह या स्कूल में रोका गया बाल या उचित व्यक्ति की देख रेख में रखा गया बान किसी ऐसी बीमारी से ग्रस्त पाया जाए । जिसे लम्बे उपचार की ग्रावश्यकता हो या उसे कोई शारीरिक या मार्नासक बीमारी हो जिसके लिए बच्चे को उपचार की जरूरत हो तो उन्हें सक्षम श्रिष्ठकारी के श्रादेशानुसार नियम 13 के श्रन्तगंत श्रनुमोदित स्थान पर या नियम 10 के श्रधीन स्थापित किसी मस्था में उस शेष श्रवधि के लिए रखा जाएगा। जिसके लिए सक्षम श्रिष्ठकारों के श्रादेशानुसार उसे श्रिष्ठरक्षा में रखा गया है श्रयबा ऐसी श्रवधि जो चिकिरसा श्रिष्ठकारी द्वारा बच्चे के उचित उपचार के लिये श्रावश्यक समझकर की जाए।
- (2) जहां उप-घारा (1) के अधीन बाल को हटाने हेतु आदेश देने वाल प्राधिकारी को यह प्रतीत हो कि बच्चे की बीनारी या गारिरिक प्रौर मानिसक शिकात ठीक हो गई है और यदि अभी भी भा अभिरक्षा में रखा जाना हो तो वह बच्चे के प्रभारी व्यक्ति को मृहल या बाल गृह या उचित व्यक्ति जिसके पात्र से उसे ले जाया गा या, के पास में अने के प्रादेग दे सकता है। अथवा यदि बच्चे का और अधिक अभिरक्षा में रखने की प्रावण्यकता हो तो उसे छोड़ देने के आदेश दे सकता है। तो उसे छोड़
- (3) जहां पर छूत एवं संकामक बीमारी से ग्रस्त बाल-के लिए उप-नियम (1) के प्रधीन कार्यवाही की गई है। तो उसके जीवन मध्यी यदि ऐसा कोई हो या संरक्षक की देने से पूर्व विवाह वाले मध्यम प्रधिकारी, का समाधान हो जाता है कि ऐसी कार्यवाही बाल के हित में है तो वह उसके साथी ध्रयवा सरक्षक को यथा स्थिति विकित्सा परीक्षण के लिए भेजकर इस बात से सन्तुष्ट होने के लिए ऐसा, साथी धीर संरक्षक काल को पूर्व, संक्रमित नहीं करेगा बुलाएगा।
- 18. प्रनुमोदित स्थान की मान्यता.—हिमाचल प्रदेश में श्रीर उसके बाहर किसी श्रस्पताल भ्रयवा प्रत्य उचित स्थान श्रयवा संस्था की जिसका श्रीधमोगी भ्रयवा प्रवत्यक धातक बीमारी श्रयवा मानिसक णिकायत से ग्रस्त बाल को ऐसी श्रवधि के लिए जो श्रावश्यक ही श्रस्थायी रूप में नेने के लिये तैयार हो तो श्रिधनियम की धारा 33 की उप-धारा (1) श्रीर नियम 1 के प्रयोजनाय सरकार द्वारा श्रनुमोदित स्थान की मान्यता दी जा सकती है।
- 19. घानक वीमारियों से ग्रस्त बालकों के लिये संस्था:—यदि दिमाचल प्रदेश या उसके निकटवर्ती राज्य में, घातक रोग से ग्रस्त

बालकों को मेजने के लिये जैसा कि धारा 33 की उप-धारा (1) में तथा इन नियमों के नियम 17 के उप-नियम (1) में अपेक्षित हैं, कोई संस्थान हो तो, सरकार द्वारा ऐसे स्थानों पर जिन्हें वह उचित समझे प्राबक्धक संस्थाएं संस्थापित की जायेगी ।

20. संस्थाओं का प्रमाणिकरण अथवा मान्यता. पित किसी संस्था जो प्रमाणित न हो अब ग मान्यता न हो, को प्रबन्धक प्रधिनियम की धारा 9, 10 प्रयथा 11 के अधीन चाहता है कि ऐसी संस्था प्रमाणित अब बा काम्यता प्राप्त हो, यथा स्थिति के लियम, उप-नियम सांभेदारी अनुच्छेद का प्रत्येक प्रति सोसाईटी या सांभेदारी के सदस्यों की सूची जो मंस्था को चला रहे हैं व प्रदाधिक कारियों की सूची के साथ और विवरणी जिसमें पद दर्शाए गए हूँ और संस्था के सामाजिक अब बात लोक सिवा के और संस्था चलाने वाली सोसाईटी के अभिनेख के साथ, मुख्य निरीक्षक को एक लिखित आवेदन करेंगे। यह प्रमुख निरीक्षक या तो उस संस्था का एवं निरीक्षक करवायेगा और छावावास, आवास, सहवासी के सामान्य स्वास्थ्य, साक्षरता, स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा निरीक्षक करवायेगा और छावावास, आवास, सहवासी के सामान्य स्वास्थ्य, साक्षरता, स्वास्थ्य अधिकारी करी सामान्य स्वास्थ्य, साक्षरता, स्वास्थ्य अधिकारी के सामान्य स्वास्थ्य, साक्षरता, स्वास्थ्य अधिकारी के सामान्य स्वास्थ्य, साक्षरता, स्वास्थ्य अधिकारी के सामान्य स्वास्थ्य, साक्षरता, स्वास्थ्य अधिकार के बारे सरकार को रिपोर्ट देगा और आयु वर्ग और लिंग से बिणिष्ट संन्दर्भ के साम प्रमाणीकरण अथवा मान्यता की सिफारिश कर सकता है।

2. सरकार, मुख्य निरीक्षक से रिपोर्ट प्राप्त करने पर और इक्ष बात का समाधान होने पर संस्था के पास अपने दायित्वों को निभाने के लिए प्रयाप्त वित्तीय साधन है तो संस्था की धारा 9, 10 या 11 के अन्तर्गत जैसी भी स्थिति हो, इस शर्त पर मान्यता या प्रमाणितकर्ता प्रदान करेगी कि उन्हें निस्निलिखित कार्य करने होंगे:—

(क) सरकार द्वारा समय-समय पर निर्धारित किए गए स्तरों के अनुसार कालकों को पढ़ाना प्रशिक्षित करना, आवास प्रदान करना, कपड़े तथा भोजन का देना।

 (ख) मुख्य निरीक्षक या प्राधिकारी द्वारा समय-सूत्रय पर अपेक्षित परिवीक्षणा श्रीधकारी तथा ग्रन्य स्टाफ का व्यवस्था की जानी ।

- (ग) इन नियमों भौर मुख्य निरीक्षक या सक्षम अधिकारी द्वारा जारी किए गए किन्हीं भी निदेशों का पालन करना और इस बात को भी ध्यान में रखना कि उनका अनुपालन परिवीक्षा अधिकारियों और संस्था के कर्मियों द्वारा किया जाता है।
- (घ) जब कभी भी प्रपेक्षित हो, मुख्य निरोक्षक को इसके बित्तीय स्थिति को जिसमें तुलन पत्न ग्रीर लेखा परीक्षा रिपोर्ट यदि कोई सम्मिलित है, भेजा जाना ।
- 21. प्रमाण-पत्न या मान्यता का प्रत्याहार.—(1) मुख्य निरीक्षक की रिपोर्ट पर सरकार यदि प्रधिनियम के प्रधीन प्रमाणित अथवा मान्यता प्राप्त संस्था की अवस्थाओं, नियमों, उप-विधियों, श्रीर उसके प्रबन्ध प्रथवा प्रधीक्षण से असन्तुष्ट हो तो यह किसी भी समय संस्था के प्रबन्धकों को नोटिस की तामील करके घोषणा कर सकती है कि संस्था का प्रमाणीकरण अथवा मान्यता यथा क्थित नोटिस में विनिर्दिष्ट तिबि से प्रत्यहार्य होगा भीर उनत तिथि से संस्था घारा 9, 10 व 11 के प्रधीन यथा स्थित प्रमाणित अथवा में मान्यता प्राप्त संस्था नहीं रहेगी।
- (2) सरकार उप-नियम (1) के ग्रन्तगंत मान्यता के प्रमाण-पत्न को वापिस लेने की बजाए संस्था के प्रबन्धक को नोटिस में विनिद्धिट समय के लिए या जब तक नोटिस का प्रतिसहरन नहीं होता, जो पहले हो, उस संस्था में बालकों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध नमा सकती है।

परन्तु उप-नियम (1) या उप-नियम (2) के प्रन्तर्गत नोटिस जारी करने से पूर्व संस्था के प्रवत्यक को यथा स्थिति, कारण बतात्रो धवसर दिया जायेगा कि क्यों न प्रमाण-पत्न या मान्यता वापिस ली जाए प्रयवा क्यों न बच्चों के प्रदेश पर प्रतिबन्ध लगाया जाए ।

22. प्रबन्धक द्वारा मान्यता या प्रमाण-पत्न को छोड़ना.—संस्था का प्रबन्धक सरकार की मुख्य निरीक्षक द्वारा, ऐसा करने के ऑर्ट्स्भ से 6 महीने का लिखित नोटिस देने पर संस्था के प्रमाणिकरण पत्न या मान्यता को त्याग सकता है। भौर तदनुसार नोटिस की तिथि से 9 मास समाप्त होने पर, यदि नोटिस वापस नहीं लिया जाता, मान्यता प्राप्ति या प्रमाण-पत्न का त्याग प्रभावी हो जाएगा और अधिनियम के अन्तर्गत यह संस्था प्रमाणित या मान्यता प्राप्त नहीं रहेगी।

23. प्रत्याहर्ण प्रथम प्रमाणपत ग्रयमा मान्यता वापस लेने का प्रभाव.—संस्था के प्रबन्धक द्वारा मान्यता या प्रमाण-पत्र को वापिस लेने के नोटिस प्राप्त होने या मान्यता या प्रमापत्र को त्यागने के नोटिस के पंत्रवात बालक को इस उस संस्था में नहीं लिया जायेगा।

परन्तु उक्र तिथि पर संस्था में रखे गए किसी भी बालक को पढ़ाने शिक्षित्ती करने, आवास के लिये, कपड़े और भोजन के लिये प्रकट्यकों का दाधित्व करेगा । इस के अतिरिक्त कि सरकार अन्यया निर्देश दे, रहे खु जब कि प्रमाणक अयथा मान्यता वापिस नहीं ली जाती अथवा उसका त्याग नहीं हो पाता है।

- 24. प्रमाणक प्रयवा मान्यता के वापिस लेने पर ग्रथवा त्यागने पर सहवासियों की व्यवस्था—(1) जब कोई संस्था घारा, 9, 10, प्रयवा 11 के अधीन प्रमाणित ग्रथवा मान्यता प्राप्त संस्था नहीं रहती है तो इस निर्मित सरकार द्वारा रखे गए बालक या तो:
  - (1) पूर्णतया मुक्त कर दिया जाएगा या ऐसी शतों के प्रनुसार प्रमुक्त किया जायेगा । जैसा अधिकारी अधिरोपित करें।
    - (2) धारा, 9, 10, 11 के अधीन स्थापित प्रमाणित अथवा मान्यता प्राप्त किसी अन्य संस्था को, प्रभुक्त और अन्तरण सम्बन्धी अधिनियम और नियमों के श्रनुसार अन्तरित ।
- ऐसे भृक्ति करेगा या श्रन्तरण को सूचना न्यायालय/बोर्ड को दी जायेगी।
- 25. बाल गृह विशेष स्कूल या संप्रेक्षण गृह का प्रबन्ध—(1) धारा 9, 10 तथा 11 की उप-धारा (1) के अधीन स्थापित तथा व्यवस्थित काल गृह विशेष स्कूल या संप्रेक्षण गृह के प्रबन्ध के नियन्त्रण भीर धुबन्ध के लिये सरकार द्वारा एक अधीक्षक नियुक्त किया जायेगा ।
- (2) धारा 9, 10 या 11 की उप-धारा (2) के मधीन प्रमाणिक अथवा मान्यता प्राप्त प्रत्येक, बाल गृह, विशेष स्कूल तथा संप्रेक्षण गृह का प्रबन्ध शासी निकाय द्वारा किया जायेगा।
- 26. बाल गृह, विशेष स्कूल तथा संप्रेक्षण गृह का म्रान्तरिक प्रबन्ध.—बाल गृह, विशेष स्कूल तथा संप्रेक्षण गृह के म्रान्तरिक प्रबन्ध से सम्बन्धित नियम तथा उनके द्वारा कायम किया जाने बाला स्तर तथा सेवा का स्वरुप ऐसा होगा जैसा सरकार द्वारा समय पर किया जायेगा।
  - 27. बाल गृहों, विशेष स्कूलों तथा संप्रेक्षण गृहों के कृत्य तथा उत्तरदायित्व बाल गृहों, विशेष स्कूलों तथा संप्रेक्षण गृहों के कृत्य तथा उत्तरदायित्व ऐसे होंगे जो सरकार द्वारा समय-समय पर विहित किए जायेंगे।
  - 28. विशेष स्कूलों, बाल गृहों, संप्रेक्षण गृहों और अनुरक्षण संस्थानों का निरीक्षण.—प्रत्येक बाल गृह और स्कूल और अनुरक्षण संस्था, मुख्य निरीक्षक प्रथवा सहायक निरीक्षक द्वारा हर समय निरीक्षण के लिए खुला रखा जाएगा और कम से कम प्रति तैमासिक उसका निरीक्षण किया जायेगा।

परन्तु जहां कोई स्कूल, गृह या धनुरक्षण संस्था मुख्यतः लड़कियों के लिए ही है ब्रीर ऐसा निरीक्षण₄मुख्य निरीक्षण द्वारा नहीं किष्य गया है तो निरीक्षण जहां व्यवहार्यहो महिला द्वारा किया जायेगा।

- 29. निरीक्षण करने वाले कमँचारी बृन्द के कर्तव्य (1) प्रत्यक मुख्य निरीक्षक, निरीक्षक तथा सहायक निरीक्षक प्रपने निरीक्षण या संस्था में दौरे के दौरान समिपत या उसकी देख रेख में सुपुर्दे गिए गए बच्चे को किसी भी तरह की शिकायत करने का या उसे धावेदन करने का जो कोई बालक करना चाहे का पूरा पूरा ध्रवसर प्रदान करेगा।
- (2) प्रत्येक ऐसा निरोक्षक ग्रपने निरोक्षण की समाप्ति पर संस्था की निरोक्षण पुस्तिका में यह दर्ज करेगा कि उसने उस विशेष तिथि को संस्था का निरोक्षण किया है।
- (3) प्रत्येक निरीक्षक तथा सहायक निरीक्षक भ्रपने निरीक्षण का विवरणित रिपोर्ट मुख्य निरीक्षक को प्रस्तुत करेगा।

- (4) मुख्य निरीक्षक प्रपने निरीक्षण रिपोर्ट पर यह प्रन्य निरीक्षण निरीक्षण करदे वाले कर्मचारी वृन्द की रिपोर्ट पर ऐसी निरीक्षण की गई संस्था के प्रधीक्षक/प्रबन्धक को ऐसे मुझाव तथा निदेण देगा जिन्हें वह उचित और प्रावश्यक समझेगा।
- 30. मुरिक्षत भ्रिभिरक्षा स्थान का निरीक्षण.—(1) मुरिक्षत भ्रिभिरक्षा का कि प्रत्येक स्थान जहां बालक को ग्या गया है। जिला के प्रत्येक दण्डाधिकारी उस द्वारा प्रतिनियुक्त किसी दण्डाधिकारी, बाल कल्याण बोर्ड की सदस्य बाल न्यायालय को दण्डाधिकारी, मुख्य निरीक्षक या उसके निरीक्षण कर्मचारियों द्वारा निरीक्षण हेतु खुला रहेना।
- (2) मुरक्षित प्रभिरक्षा के ऐसे स्थान के प्रधिभोगी या प्रकट्धक परिवीक्षा ग्रिधिकारी, जो बाल के पास उसके मामले से सन्वन्धित जांच पड़ताल करने भ्राता है, की प्रत्येक मुविधा प्रदान करेगा।
- 31. चिकित्सा निरीक्षण.—सरकार द्वारा इस निमिन्त सणक्त कोई भी चिकित्सा श्रविकारी था पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी किसी भी संस्था का श्रयदा श्रनुरक्षण संगठन का किसी भी समय नोटिंस देकर श्रयदा नोटिंस दिए बिना हो सहवासियों के स्वास्थ्य श्रीर संस्था की सफाई श्रवस्थाशों के बारे मुख्य निरीक्षक की रिपोर्ट करने हेतु, किसी भी समय दौरा कर सकता है।
- 32. शैक्षिक निरोक्षण.—नियम 3 के अन्तरातं नियुक्त निरोक्षण करने वाले अधिकारियों के अतिरिक्त प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारियों के अतिरिक्त प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारी अपन स्वानीय क्षेत्राधिकार में स्थित विशेष स्कूल तथा बाल गृहों का पदेन निरोक्षक भी होगा । वह उन संस्थाओं जिसका पाठयकमें के अनुमोदित पाठयकमों के अनुमार है का केवल शैक्षिक निरोक्षण करेगा । वह संस्था के ऐसे पाठ्यकम का भी निरोक्षण करेगा जो निदेशालय द्वारा निहित किया जाए । वह उन सभी निदेशों का अनुपालन करेगा जिल्हें मुख्य निरोक्षक, निदेशक शिक्षा हिमाचल प्रदेश के माध्यम से निरोक्षक को देना उचित समझेगा और वह संस्था की निरीक्षण रिपोर्ट शिक्षा निदेशक के माध्यम से मुख्य निरीक्षक को प्रस्तुत करेगा ।
- 33. ब्रौद्योगिक कक्षाक्रों का निरीक्षण.— संस्था द्वारा चलाई जा रही ब्रौद्योगिक तकनीकी कृषि तथा अन्य कक्षाक्रों का निरीक्षण हिमाचल प्रदेश के रोजगार तथा प्रशिक्षण के निरोक्षक या इस निमिन्त उस द्वारा प्राधिकृत भ्रधिकारी अववा सरकार द्वारा कृषि अथवा अन्य विभागों के प्राधिकृत श्रधिकारी द्वारा किया जायेगा। रोजगार और प्रशिक्षण के निदेशक अथवा सम्बन्धित विभाग का श्रधिकारी, ययास्थित निरीक्षक रिपोर्ट की मुख्य निरीक्षक को प्रस्तुत करेगा।
- 34. श्रनुरक्षण संस्त्थाओं की संयापना, मान्यता प्रबन्ध तथा कृत्य.—श्रनुरक्षण संस्थाओं की स्थापना, मान्यता और कृत्यों को शास्त्रित करने वाले नियम, परिस्थितियां जिनमें, और शर्ते जिनके भध्याधीन संस्था श्रनुरक्षण के संगठन के रूप में मान्यता दी जाए और ऐसे मामले जो धारा 12 में निर्दिष्ट हो, ऐसे होंगें जो समय-समय पर सरकार द्वारा बनाए जाएं।
- 35. स्थितियां जिनके अनुसार उपेक्षित लड़की या अपचारी, बालकों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर मागरक्षण किया जा सकता है। तथा ढंग जिसके अनुसार सक्षम प्राधिकारी के क्षेत्राधिकार से बाहर भेजा, जा सकता है:—(1) बाल के मामले में जहां सक्षम प्राधिकारी धारा, 36 के अधीन बाल को अपने जन्म स्थान वापिस भेजने के लिए सभीचीन समझे तो वह रिश्तेदार अथवा उचित व्यक्ति को, जो बाल की प्राप्त करने में योग्य हो, सूचित करेगा और उक्त रिश्तेदार और योग्य व्यक्ति को, ऐसी तिथि पर जो सक्षम प्राधिकारी द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए बाल को संरक्षण में लेने के लिए सप्रेक्षण गृह में आमन्त्रित करेगा।
- (2) सक्षम प्राधिकारी, उप-नियम (1) के ब्रधीन रिफ़्तेदार प्रथवा उपयुं क्त व्यक्ति को प्रामन्त्रित करने पर यदि ब्रावण्यक हो निर्देश दे सकता है। निम्न श्रेणी के रिफ़्तेदार ब्रथवा उपयुक्त व्यक्ति के दोनों तरफ की याता खर्चे ब्रौर बाल के संप्रेक्षण गृह से निकास स्थान के सामान्य स्थान पर भेजने के लिये बाल के याता खर्चे भुगतान संप्रेक्षण गृह के श्रिधिक द्वारा किया जायेगा।
  - (3) यदि रिश्तेदार या उचित व्यक्ति नियुक्त तिथि पर बाल को

संरक्षण में ले सके तो बाल को संप्रपेक्षण गृह के श्रनुरक्षक में उसे साधारण निवास स्थान पर ले जाया जायेगा।

परन्तु लड़को की स्थिति में संप्रेक्षण गृह का मार्ग रक्षण महिला मार्ग रक्षक द्वारा किया जायेगा ।

36. ढंग जिसमें बच्चे के भरणपोषण के लिए मां बाप या सरक्षण को, यंगदान देने के भादेश दिए जा कसते हैं:— धारा 56 की उप-धारा (1) के अधीन भ्रादेश करने वाला सक्षम प्राधितारी बाल के माता पिता अथवा, बाल का भरण पोषण करने वाले भ्रत्य व्यक्ति के प्रति ऐसा राशि जो 100 रुपये से अधिक जैसाकि संरक्षण प्राधिकारी वाल के भरणपोषण के लिए उचित समझे, प्रत्येक मास के आरम्भ में अधिम रूप में अदा करने के आरम्भ में अधिम रूप में अदा करने के आरोश दे सकता है।

(2) ऐसे सभी योगदान सक्षम प्राधिकारी द्वारा सरकारी कोष में विविध सरकारी प्राप्तियों के रूप में जमा करवा दिए जायेंगे।

37 प्रनुक्रिय (1) के प्रन्तर्गत रखना — (1) धारा 53 की उप-धारा (1) के प्रन्तर्गत प्रनुक्रिय के प्रधीन शर्त जिन में बान रखा जा सकता है वे यथा सम्भव प्रपत्न-V में होगें।

- (2) श्रनुज्ञप्ति पर किसी बाल को निर्मुक्त करने पर इसकी सूचना गृह या स्कूल के श्रधीक्षक द्वारा सक्षम श्रधिकारी को जिसके श्रादेशानुसार बाल को संस्था में रखा गया था थाल की मुक्ति को वास्त्रिक निथि सहित दी जायेगी।
- (3) प्रधिनियम की धारा 53 की उप-धारा (3) के प्रन्तगंत जब प्रमुज्ञाप्त का प्रतिसंहरण कर दिया गया है और बाल विशेष स्कूल या बाल गृह में जहां उसे वापिस धाने को कहा हो इन्कार करता है या वापिस धाने में असफल रहता है पुलिस अधिकारी भ्रमुज्ञिप्त को प्रतिसंहरण करने वाले आधिकारी की सलाह पर बालक को बिना वारण्ट गिरफतार कर सकता है और उसे विशेष स्कूल या वाल गृह में यथास्थित भेज देगा।
- 38. टंग निसके अनुसार बाल को मां-वाप, मंरक्षक या अन्य उपयुक्त व्यक्ति की देख-रेख में रखा जा सकता है.—धारा 16 की उप-धारा (1) के खण्ड (ख) के अधीन बाल को माता-पिता, संरक्षक, रिश्तेदार अथवा उपयुक्त को देख-रेख में रखाने के आदिश देत हुए ऐसे माता-पिता, रिश्तेदार अथवा उपयुक्त को देख-रेख में रखाने के आदिश देत हुए ऐसे माता-पिता, रिश्तेदार अथवा उपयुक्त व्यक्ति का बाल को उचित देख-रेख और नियन्त्रण में रखाने के लिए अपन्न VIII में प्रतिभू सहित या उसके बिना और ऐसी राणि के लिए जो सक्षम प्राधिकारी उचित समझे बच्ध पत्र उसने के लिदेश दे सकता है। प्रपत-8 में विहित शातों के अतिनित्त समक्ष अधिकारी, ऐसी और शत भी लगा सकता है जिन्हें बाल को उचित देख-रेख और ईमानदार और मेहनती जीवन मनिष्टित करने के लिए उचित समझे।
- (2) जहां काल को परिवीक्षा अधिकारी को पर्यवेक्षण में रख। गया हो सक्षम प्राधिकारी गर्त अधिरीपित करेगा कि अपेक्षित सभी नहारता अथवा अन्य उपयुक्त व्यक्ति द्वारा यथा स्थिति, परिविक्षा अधिकारी को सभने पर्यवेक्षण कार्य को कायान्त्रित करने हेतु दी जाएगी।
- 39. वाल की धार्मिक धारणा.—भाता-पिता संरक्षण ब्रिधिनियम अथवा इन नियनों के अधीन वाल के वारे में कोई आधिश करते मनय, आदेश करने वाला, प्राधिकारी वाल की धार्मिक धारणा की, यदि पना लगा मंत, ध्यान में रखेन, और इस वात को सुनिश्चित करेगा, कि धार्मिक निदेश जो वाल की धार्मिक धारणा के विरुद्ध है उमे नहीं दिए आते हैं।
- 40. माता-पिता, संरक्षक अथवा उपयुक्त व्यक्ति के दायित्व.— मक्षम अविकारो धारा 21 की उप-धारा (1) के खण्ड (ख) के अन्तर्गत या धारा 16 की उप-धारा (1) के अन्तर्गत माता-पिता, मंरक्षक या अन्य उपयुक्त जिनकी देख-देख में बाल रखा गया है:—
  - (क) वाल की पहाई, प्रशिक्षण, ठहरने, कगड़े, भोजन ग्रादि का उचित प्रवश्व करेंगे।
  - (ख बाल के लिए जय कभी आवश्यक हो उचित चिकित्सा का प्रवन्ध करेंगे।
  - (ग) इस बात का ध्यान रखेंगे कि बाल की इस ढ़ंग से प्रहार नहीं किया जता है, उसे छोड़ नहीं दिया जाता है या परित्याम नहीं किया जाता है प्रथवा जानवृक्ष कर उसकी अवहेलना नहीं की जाती है जिससे बाल ग्रनीयश्यक

- मानसिक प्रथवा भारीरिक पीड़ा से ग्रस्त हो जाए।
- (घ) काल को अपना चरित्र तथा प्रतिका उभारने के लिए मुविधाए प्रदान करेंगे।
- (ङ) बॅल को नैतिक खतरे तथा शोषण से बद्धाएंगे।
- (च) बाल के अच्छे व्यवहार तथा भ्राचरण के लिए उत्तरदायी होंगे।
- (छ) भाल को अवाछनीय व्यक्तियों तथा सोसाइटी से सभ्वत्य होने से रोकेंगे।
- (ज) बाल को हर तरह के सामाजिक दोषों से बवायेंगे और बाल के सामान्य कल्याण के लिए उत्तरदायी होंगे।
- 41 सक्षम अधिकारी के क्षेत्राधिकार से बाल को बाहर भेजने के लिए अपनाई जाने वाली पढ़ित.——(1) बाल की स्थित में जिसका सामान्य निवास स्थात सक्षम प्राधिकारी के क्षेत्राधिकार से बाहर पड़ता है और यदि सक्षम प्रधिकारी धारा 36 के अधीन कार्यवाही, करना उचित समझता है तो वह परिवीक्षा अधिकारी को रिश्तेदार अन्य व्यक्ति द्वारा वाल को अपने निवास स्थान के सामान्य स्थान में प्राप्ति करने की उपयुक्तता और त्तरारता और क्या ऐसा रिश्तेदार अथवा अन्य उपयुक्त व्यक्ति बाल को उचित देख भाल कर सकता है और नियन्त्रण में रख सकता है के बारे जांच पड़ताल करने के निदेश देशा।
- (2) परिवोक्षा अधिकारी की रिपोर्ट पर सन्तुष्ट होने पर सक्षम अधिकारी उपेक्षित या उपचारी बालक को यथास्थिति यदि आवश्यक हो, यथा सम्भव प्रपत्न-IV में पत्न निष्पादन करने पर उसके रिश्तेदार अथवा उपयुक्त व्यक्ति द्वारा प्रपत्न-V पर जिम्मेवारी लेंने पर उक्तं रिश्तेदार अथवा उपयुक्त व्यक्ति के पास भेज सकता है।
- (3) धारा 36 के अन्तर्गत सक्षम अधिकारी द्वारा पारित श्रादेशों की प्रति:—
  - (क) परिवीक्षा अधिकारी को भेजी जाएगी जिसे क्येन-नियम (1) के अधीन रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया था;
  - (ख) जिस स्थान पर वाल भेजा जाना है उस पर क्षेक्सीधिकार
     रखने वाले परिवीक्षा अधिकारी को यदि कोई हो भेजी जाएगी;
  - (ग) जहां पर बाल को भेजा जाना है। उस परक्षेत्राधिकार रखने वाले न्यायालय श्रथवा दण्डाधिकारी को भेजी जाएगी;
  - (घ) उस रिश्तेदार श्रथवा व्यक्ति को भेजी जाएगी जिसने बाल को प्राप्त करना है।
- (4) किसी बन्ध पत्न प्रथवा उप-नियम (2) के प्रधीन की गई किसी प्रतिज्ञा के उप उलंघन पर वाल को यदि वह हिमाचल प्रदेश राज्य में किसी स्थान पर पाया जाता है सक्षम प्रधिकारी, के सम्मुख लाया जाएगा जो कि वाल को गृह ग्रथवा स्कूल में भेजने के प्रादेश दे सकता है।
- (5) उप-निथन (3) के अन्तर्गत आदेशों के लग्वित रहने के दौरान थाल को सक्षम प्राधिकारी द्वारा संरक्षण गृह में भेजा जाएगा।
- 42 बाल न्यायालयं के सहयोग देने बाले अवैतिनिक सामाजिक कार्यकर्त्ता की हर्ताएं:- अवैतिनिक सामाजिक कार्यकर्ताओं की अर्हताएं जो धारा 5 की उप-धारा (3) के अधीन बालक न्यायालय बूएँ सहयोग देगें, एसी होंगी जो समय-समय पर सरकार द्वारा विहित की जाएंगी।
- 43. पुलिस श्रिधकारी का सादा कपड़ों में होना.—श्रिधिनथम के ने उपबन्धों तथा इन नियमों के अन्तर्गत बालकों से व्यवहार करते समय, गिरफतारी के समय, के अतिरिक्त पुलिस श्रिधकारी सादा कपडे पहनेगें न कि पुलिस वर्दी।
- 44. हथकड़ी अथवा वेडियों का प्रयोग.—श्रधिनियम अथवा इन नियमों के उपबन्धों के अधीन संव्यवहार्य वाल को हथकड़ी अथवा वेडिया नहीं लगाई जाएंगी।
- 45. वाल को उसी संस्था की दूसरी शाखा में स्थानान्तरित करने सम्बन्धा प्रबन्धक की शक्ति.—बाल को सक्षम प्राधिकारी धारा 9,10 तथा 11 के अन्तंगत मान्यता प्राप्त प्रमाणित संस्था या उचित व्यक्ति को सुपुर्द करने के पण्चात ऐसी संस्था का प्रबन्धक बाल को संस्था की

किसी भी पाखा में, सक्षम प्रधिकारी जिसके ब्रादेणानुसार बाल को बहा रखा गया था श्रीर मुख्य निरीक्षक को सूचना देने के पण्यान क्षेत्र सकता है।

46. सहवास्त्रियों को अनुपस्थिति का लघु अव काम.—(1) बाल गृह, स्कूल या उचित संस्था का अधीक्षक जिसके पास बाल सपुर्व किया गया है अपनी सन्तुष्टि के लिए बताए गए कारणों पर सहवासी की लघु अवधि के लिए जो कुल मिलाकर पूरे वर्ष भर में 15 दिन (जिसमें अपने काता पिता, रिण्तेदारों को मिलने जाने के उद्देश्य हैतु अपने गतव्य तक आने जाने का समय शामिल नहीं होगा) से अधिक नहीं होगी के लिए लिखित रूप से अनुपस्थित अनुजा प्रदान कर सकता है.—

परन्तु जहां तक सम्भव होगा एक समय सात दिन से प्रक्रिक श्रवधि की अनुपस्थिति अनुजा के लिए मुख्य निरीक्षक का पूर्वानुभोदन प्राप्त किया जाएगा।

- (2) उप-नियम (1) के प्रस्तर्गत प्रदान की गई प्रमुक्ता किसी भी समय प्रवीक्षक के लिखित श्रावेशों द्वारा रह की जा सकती है श्रीर सहवामी को उस द्वारा बिना कोई कारण बताए पुनः बुलाया जा सकता है।
- (3) स्कूल, बालक गृह, प्रथमा उचित संस्था के अधिक्षक द्वारा संस्तुत अविदन-पत्न पर मुख्य निरीक्षक वर्ष में एक बार सहवासी को छः सप्ताह तक का अधिक अवकाश प्रदान कर सकता है। ऐसा अवकाश, मुख्य निरीक्षक द्वारा लिखित आदेश द्वारा रह किया जा सकता है और इसमें कोई कारण बताए बिना सहवासी को बापिस बुलाया जा सकता है।

(4) मनिवास, जिसके दौरान सहबासी उप-नियम (1) ग्रथना (2) भीर (3) के अधीन संस्था से अनुपस्थित है, संस्था ने उसका अबरोधन अवधिक का एक भाग समझी जाएगी।

- (5) यदि कोई सहबासी, उप नियम (1) प्रथवा उप-नियम (3) के भ्रधीन भागुमत अवधि के रामापन पर प्रथवा जब उप-नियम (2) अथवा उप-नियम (3) के भ्रधीन पुनः बुलाया जाता है संस्था को वापिस भाने में भ्रभक्त रहता है तो अधीक्षक मामले की मूचना मुख्य निरीक्षक की देशा और कोई भी पुलिस भ्रधिकारी प्रधीक्षक भ्रथवा मुख्य निरीक्षक की लिखित रिपोर्ट पर सहवासी को बारण्ट के बिना गिरफ्तार कर सकता है और संस्था को बापिस भेज सकता है।
- (6) उप-धारा (5) के प्रधीन संस्था में वापिस होने में प्रसफल होने के पश्चात् बीता हुआ समय, संस्था में उसके अवरोधन की श्रविध जणना करते समय निकाला जाएगा।
- (7) किसी भी माता-पिता या संरक्षक को जो संस्था में बाल की देख-रेख हेतु धारा 56 की उप-धारा (1) के ग्रन्तगंत सक्षम अधिकारी द्वारा पारित आदेशानुसार ग्रंगदान रहे हैं, उप-नियम (1) या (3) के ग्रन्तगंत संस्था से बाल की श्रनुपस्थित की श्रवधि के लिए ग्रंग-दान के भृगतान की छूट दी जाएगी।
- 47. प्रधिनिथम की धारा 18 की उप-धारा (2) के प्रन्तर्गत संप्रेक्षण मृह में प्राप्त बालकों को रखने का ढंग — जब कभी भी प्रधि-नियम की घारा 18 को उपधारा (2) के प्रन्तर्गत बाल को संप्रेक्षण गृह में प्राप्त किया जाए तो —
  - (1) सही ढग से साफ किया जाएगा;
  - (2) ऐसे विस्तर और कपड़े दिए जाएंगे जो समय-समय पर विहित किए जाएंगे;
  - (3) ऐसा भोजन दिया जाएगा जो समय समय पर विहित किया जाएगा;
  - (4) प्रवेश के पश्चात् शीझातिशीझ परिवीक्षा प्रविकारी से मिलाया जाएगा जो उसका वृतान्त प्रभिलेख करेगा और ऐसे कदम उठाएगा जो बाल को भय तथा दुविधा को दूर करने में सहायता प्रदान करेंग ; और
  - (5) यदि वह 12 वर्ष से ऊपर की प्रायु का है विपरीत लिंग भ वाले व्यक्ति के साथ नहीं रखा जाएगा।
- 48. प्रपत्त -- जहां तक सम्भव होगा प्रत्येक प्रयोजन के लिये उसमें सामने दिए गए निम्नलिखित प्रपत्न प्रयोग किए जाएँगे:--
  - (क) प्रपत्र I.-भारा 19 (क) के अन्तर्गत बाल के माता-पिता

- या सरकार की उसकी गिरफ्तारी की सूचना का प्रपत्त ।
  (ख) प्रपत्त.—धारा 19 (ख) के अन्तर्गत परिवाक्षा प्रविकारी की बाल विरक्तारी की सूचना का प्रपत्न ।
- (ग) प्रमद-XIII.—अधिनियस को धारा 16 की उप-व्रारा (3) या धारा 2 की उपधारा (2) के परन्तुक प्रयोजनार्व परी-बीक्षा प्रविकारी की रिपोर्ट।
  - (घ) प्रपत-XIV -- अधिनियम के उपबन्धों के अन्तर्गत काल को बालक गृह व स्कूल भेजने का आदेश।
  - (ङ) प्रपत-XV- अधिनियम की वारा 14 की जपधारा (2) के अर्मा नव बाल को उसके माता-पिता या मंरक्षक के संरक्षण से हटाने बाले आदेशों का प्रपत्न।
  - (च) प्रपत्त XVI.—धारा 14 की उप-धारा (2) के भ्रन्तर्गत कारण बताओं नोटिस।
  - (छ) प्रपत्न-XVII. प्रधिनियम की घारा 14 की उप-धारा (2) के श्रन्तर्गत तलाशी का बारण्ट।
- 49. निरसन श्रीर व्यावृत्ति.—हिमाचल प्रदेश बाल नियम, 1962 तथा पंजाब बाल नियम, 1960 जो 1-11-1966 से पूर्व कमणः तुरल हिमाचल प्रदेश क्षेत्र में पंजाब पुनर्गठन श्रविनियम, 1966 की घारा के श्रवीन समाविष्ट केलों में लागू थे, एनद्दारा निय्वित किए जाते हैं: परन्तु नियमों के श्रवीन की गई कोई बात श्रयवा की गई कार्यवाही इन नियमों के श्रवीन की गई समझी जाएगी मानों ये नियम उस निथि को जब कोई बात श्रयवा कार्यवाही की गई प्रवान थे।

#### प्रपत्र—!

नियम 5 के उप-नियम (2) के प्रनुसार प्रारम्भिक जांच पड़ताल पर रिपोर्ट

	कम संख्या	
ñ	····ः बालक न्यायानय/घाल कल्याण परिषद् समझ प्रस्तुतः · · · · · न्यायलय में ।	
	न्भायालय केस संख्या	
	केस का शीर्षक पुलिस स्टेशन अनुरोपित श्रपराधी का स्वरूप (केवल श्रपचारी बालकों की स्थिति में)	•
	नाम धर्म पिता का नाम जाति स्थाई पता जन्म वर्ष गिरफ्तारी से पहले प्रायु प्रन्तिम पता लिंग पूर्व न्यायालय या संस्थायिक विकरण	

#### परिवार

परिवार के सदस्य	नाम	भ्रायु	तन्दुरुस्ती	व्यवसाय यास्कूल 5	नेतन यदि कोई हो 6
		<del>.</del>			

भितेता बाप
माता
सौतेली माता
सबलिंग
सबिंदाहित हो तो
सम्बद्ध विचरण।
भ्रत्य निकट सम्बन्धी या
सम्बद्ध प्रभिकरण
धर्म, भ्रावरण तथा गृह इत्यादि
की जातीय संहिता।

202 <sup>इ</sup> राजपत्न, हिमाचल प्रदेश, 26	फरवरो, 198 <b>2</b> /7 फालंगुन, 1904
1 2 3 4 5  सामाजिक तथा प्राधिक स्थिति परिवार के सदस्यों का प्रपचार प्रभिलेख वतं मान रहने की श्रवस्थाएं माता-पिता श्रीर बालको में सम्बन्ध विशेष तौर पर जांच पड़ताल के श्रधीन बाल के महत्व के श्रन्य तथ्य, यदि कोई हों।	<ol> <li>जहां बाल रह रहा है</li> <li>किसी शिक्षक प्रशिक्षण कोसे में की गई प्रगति</li> <li>यह क्या कार्य कर रहा व रही है और उसका मासिक श्रीसतन कमाई यदि नियोजित हो</li> <li>डांकचर में रखी बक्त, उसके नाम पर बचत वैंक⊹लेखा</li> <li>बंग्ल की सेहत</li> <li>उसके सामान्य श्रीचरण और प्रगति पर श्रध्युक्तियां</li> <li>क्या सम्पत्ति की देख भाल की गई</li> <li>भाग 3</li> </ol>
बालक का विवरण  भूतकालिक तथा वर्तमान  मानसिक ग्रवस्थाएं  भूतकालिक तथा वर्तमान  गारीरिक ग्रवस्थाएं  ग्रादनें, रुचियां (नितिक तथा मनोरंग्जनात्मक इत्यादि)  विणिष्ट विणिष्टताएं श्रीर व्यक्तित्व विशेषताएं  सहचर तथा उनका प्रभाव  घर से भगांडापन यदि कोई हो  पूर्व वर्ती ग्रन्थार यदि कोई हो  स्कूल (स्कूल, ग्रध्यापकों, सहपाठियों तथा ग्रीर विलोमतः रवैया)  कार्य ग्रभिलेख, नौकरियां, उन्हें छोड़ने के कारण, व्यवसायिक रुचियां नौकरी तथा मालिक के प्रति रवैया)  पड़ोसी तथा पड़ोसी की रिपोर्ट	के लिए सक्षम प्राधिकारी के बन्ध पत्न की समक्ष कोई भी कार्यवाहियां प्रतों में परिवर्तन ।  (ख) निवास स्थान का परिवर्तन ।  (ग) ग्रन्य मामले
माता-पिता तथा घर में अनुशासन प्रति रवैया और बालकों की प्रतिक्रिया कोई अन्य अन्युक्तियां जांच पड़ताल का परिणाम	ग्रपेक्षित हैं प्रेषित : परिवीक्षा ग्रधिकारी,
भावात्मक कारण- गारीरिक ग्रवस्थाएं ममझ सामाजिक तथा प्रार्थिक कारण- धार्मिक कारण- ममस्याओं के मुझाए गए कारण- ममस्याओं के मुझाए गए कारण- मामले का विश्लेषण जिससे पता चले कि ग्राचारी का व्यवहार किस तरह विकसित हुग्रा - वर्ताय मध्यत्वी शिफारिशों ग्रीर परिवीक्षा प्रधिकारी द्वारा उसकी	यतः (1) हिमाचल प्रदेश बाल ग्रधिनियम, 1979 की धारा के भन्तगंत (बच्चे का नाम) पुत्न/पुती , निवासी की प्रति हुई हैं।  या  (2) पुत्न/पुती की हिमाचल प्रदेश बाल कल्याण ग्रधिनियम, 1979 की धारा 13 की उप-धारा (3) के उपबन्धों के भ्रन्तगंत बाल कल्याण परिषद् के समक्ष प्रस्तुत किया गया।  ग्रापको उक्त बाल के पूर्ववर्ती, ग्रीर चरित्न ग्रीर सामाजिक स्थिति के बारे जांच पड़ताल करने का ग्रीर जांच पड़ताल की भ्रपनी रिपोर्ट
परिवोक्षा श्रिष्ठकारी के ————————————————————————————————————	की श्रयवा से पूर्व श्रीर ऐसी प्रविध के भीतर जो तुम्हें बाल कल्याण परिषद् द्वारा श्रनुमत की जाए, रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया जाता है।  प्राज दिनांक दिन को 19
परिवीक्षार्थी की प्रगति का मासिक विवरण भाग-1	(हस्ताक्षर) मोहर। प्रध्यक्ष, बाल कल्याण परिषद्। प्रपत्न 4
परिवीक्षा प्रधिकारी का नाम — में रिजस्टर मंख्या — मक्षम प्रधिकारी — किम मंख्या — वाल का नाम — म	(नियम 12 देखिए) हिमाचल प्रदेश बाल श्रीधिनियम, 1979की धारा 15 की उप-धारा (2) ग्रीर धारा 21 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) के श्रधीन ग्रवरोधन के वार्ण्ट
निरीक्षण श्रीदेश की तिथि ——————————————————————————————————	प्रेषक : प्रघीसक,
माक्षात्कार का स्थान दिनांक	यत:— को 19 के दिन को (बन्चे का नाम) पुत/पुती— , प्रायु— में उपेक्षित का लक के रूप में धारा— के प्रन्तगंत प्रपराध करते पाया गया है। मेरे द्वारा— प्रध्यक्ष बाल कह्याण बोर्ड/
	मुख्य दण्डाधिकारी बाल न्यायालय

प्रदेश वाल तियम, 1979 की धारा वाल गृह्य स्वार्गन स्वार्गन के मान्यांने वाल गृह्य स्वार्गन स्वर्गन के मार्रण विष्य पर । इससे अपने अपिकृत किया जाता है भीर प्राप्त से उन्मत वाल गृह्य स्वयं प्रस्त अपने अपिकृत किया जाता है भीर प्राप्त से उन्मत वाल गृह्य स्वयं प्रस्त के प्रयं के मार्गन के प्रयं वाल को के साम्य कर्य से पाल करने हेलु पीर्थ अपने अपिकृति की प्रयंक्ष को को प्रयंक्ष को प्रवंक्ष को को प्रयंक्ष को को प्रयंक्ष को को प्रयंक्ष को को प्रयंक्ष को कार्यों किया जायेगा । विषय जायेगा । विषय को प्रयंक्ष को प्रवंक्ष को प्रयंक्ष को प्रयंक्ष को प्रयंक्ष को प्रयंक्ष को प्रयंक्ष कार्यों किया जायेगा । विषय जायेगा । विषय के सित को है हो या आदेश पर का विषयण तया पूर्ववर्ती अभिनेष्व बालक प्रधिनियम, 1979 के अधीन पूर्ववर्ती विकरण । विलय अपने किया जायेगा प्रयंक्ष प्रवंक्ष के साम्य अपने के प्रयंक्षण कार्यों के साम्य प्रयंक्षण कार्यों के प्रवंक्षण के साम्य कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों कार्यों कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों कार्यों कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों कार्यों के प्रयंक्षण कार्यों कार
्विष्ठीय स्कृत में अवरोध करने के आदेशा दिए तए । इससे अपत्रोध आधिक करने के आदेशा विर त्या । इससे अपत्रोध आधिक में एकते की प्रोधा तो तो ती है। इस अपत्रोध अपित्र में प्रयोग तो तो ती है। इस 19 के दिन को मेरे इस्ताक्षर और बाल कर्याण परिवद व बाल न्यायालय की मोहर के अन्तर्गत दिया गया । अध्यक्ष, बाल कर्याण परिवद, मोहर ।  परिवद व बाल न्यायालय की मोहर के अन्तर्गत दिया गया । अध्यक्ष, बाल कर्याण परिवद, मोहर ।  पर्विद व बाल न्यायालय की मोहर के अन्तर्गत दिया गया । अध्यक्ष, बाल कर्याण परिवद, मोहर ।  पर्विद व बाल न्यायालय की मोहर के अन्तर्गत दिया गया । अध्यक्ष, बाल कर्याण परिवद, मोहर ।  पर्विद व बाल ने मेरे इस्ताक्षर प्रथा मार्थ पर का विदरण तथा पुनेवर्ती अभिनेष बालक सिर्मित्रम, 1979 के अधीन पुनेवर्ती विदयण । वितार अवरोध वाल अधिनियम, 1979 के अधीन पर्विद काई है या आदेश पर का विदयण तथा पुनेवर्ती अभिनेष बालक सिर्मित्रम, 1979 के अधीन है ।  पर्वित अवरोध वाल का विद्या गया हो ।  पर्वित अवरोधन सिर्मा अपत्र काई है आमिल है ।  पर्वित अवरोध वाल का वाल करने सुनेवर वाल सिर्मित्रम मार्थिक वाल करने वाल वाल करने वाल वाल करने वा
इससे अपलो प्रिमिक्त किया जाता है और आप से उक्त बाल को प्रिमिक्त में प्राप्त धर्मिल्ला में प्राप्त कर और कोन
स्थान स्कूल में रखने की स्पेक्षा की जाती है।  की दिन को मेरे हस्ताहार और बाल कल्याण परिषद, महिर।  स्थान क्लाण मी मोहर के सन्तर्गत दिया गया।  स्थान कल्याण परिषद, महिर।  प्रवास किया जायेगा।  विनाक की 19 के दिन को स्थास क्षास का का प्रवास की मोहर के सन्तर्गत दिया गया।  स्थास किया जायेगा।  विनाक की 19 के दिन को स्थास का क्षायालय।  प्रवास किया जायेगा।  विनाक की 19 के दिन को स्थास का का स्थास का का प्रवास की मोहर।  प्रवास का कल्याण परिषद, मुख्य दण्डाधिकारी, बालक न्यायालय।  प्रवास की प्रवित विदरण।  विनाक प्रवास अर्थ जिससे हो ।  प्रवास प्रवास किया जायेगा।  विनाक की 19 के दिन को स्थास का कारों होने की तिवि से 14 के भीतर प्रावेश में प्रवेश के सादेश के सादेश करने का सादेश का सादे
स्पेष्ठल स्कूल में रखने की अपेक्षा की जाती है। हैरा 19— के दिन को मेरे हस्ताक्षर और बाल कल्याण परिचद, बाल त्यायालय की मोहर के अस्तर्गत दिया गया। अध्यक्ष, बाल कल्याण परिचद, मुख्य दण्डाधिकारी, बालक त्यायालय। मोहर। प्रवास की अप्रति अपिलेख बालक प्रधिनियम, 1979 के अधीन पूर्ववर्ती विवरण। विलाक पारिक्त अप्रवेश जिससे धारा अवरोधन प्रवेश जिससे धारा अवरोधन प्रवेश जिससे धारा अवरोधन प्रवेश जिससे धारा अवरोधन प्रवेश जिससे धारा। प्रवास के उपमान करेंग हो। प्रवेश
हैस 19—के दिन को मेरे हस्ताक्षर खोर बाल कल्याण परिषद, वाल कल्याण परिषद, वाल कल्याण परिषद, वाल कल्याण परिषद, पुष्य दण्डाधिकारी, बालक ल्याणावाय। सानुबर्ग की प्रतित यदि कोई हो या आदेश पर का विवरण तया पूर्ववर्ती अभिलेख बालक प्रधित्तियम, 1979 के अप्रधान, वें विवरण । विलाक प्राप्तित आदेश जिससे धारा अवरोधन सर्वाध, यदि कोई है शामिल है ।  पर्यत प्रवित को भोसित न हो ।  पर्यत प्रवित को भोसित न हो ।  पर्यत पर्ववित को के सर्वच का निम्तित के स्वर्ण के अप्रवेत के स्वर्ण दिया गया हो ।  पर्यत पर्ववित को भोसित न हो ।  पर्यत पर्ववित को के सर्वच का निम्तित करें विवर्ण पर्ववित को देख-रेख में स्वर्ण का निम्तित करने में अप्रवित पाया गया है और ज्यायालय इस बात से सन्तुष्ट है कि उसे पर्ववित परिवाधा प्रधान के स्वर्ण पर्ववित पर्या गया है और ज्यायालय इस बात से सन्तुष्ट है कि उसे पर्ववित पर्या निम्तित है ।  को के सर्वच पत्र निम्पादन करने पर का से सन्तुष्ट है कि उसे पर्ववित पर्या निम्ति के साम्रा पर्ववित परिवाधा प्रधिकारों के समक्ष उप होगा और प्राप्ति के साम्रा पर्ववित परिवाधा प्रधिकारों के समक्ष उप होगा और प्राप्त के साम्रा पर्ववित परिवाधा प्रधिकारों के समक्ष उप होगा और प्राप्त के साम्रा पर्ववित परिवाधा प्रधिकारों के समक्ष उप होगा और प्रवित्व परिवाधा प्रधिकारों के समक्ष उप होगा और प्राप्त के साम्रा वित्व करने साम्रा वित्व करने साम्रा विवर्ध के साम्रा विवर्ध के स्वर्ध के साम्रा विवर्ध करने के साम्रा विवर्ध के साम्रा विवर्ध करने के साम्रा विवर्ध के साम्रा विवर्ध करने विवर्ध के साम्रा विवर्ध करने करने साम्रा विवर्ध करने करने साम्रा विवर्ध करने विवर्ध करने साम्रा विवर्ध क
पहिलद् व बाल त्यायालम की मीहर के अस्तर्गत दिया गया।  प्रध्यत, वाल कत्याण परिवर, मुख्य दण्डाधिकारी, बालक त्यायालय।  प्रमुद्ध प्रमुद्ध विवरण।  विनांक प्रार्टिंग विवरण।  विनांक प्रार्टिंग विवरण।  विनांक प्रार्टिंग विवरण।  विनांक प्रमुद्ध विवरण।  विनांक प्रमुद्ध विवरण।  विनांक प्रमुद्ध विवरण।  प्रमुद्ध विवर्ध प्रमुद्ध विवरण।  प्रमुद्ध प्रमुद्ध विवरण।  प्रमुद्ध प्रमुद्ध विवरण।  प्रमुद्ध प्रमुद्ध विवरण।  प्रमुद्ध विवर्ध प्रमुद्ध विवरण।  प्रमुद्ध प्रमुद्ध विवरण।  प्रमुद्ध विवरण प्रमुद्ध विवरण।  प्रमुद्ध प्रमुद्ध विवरण।  प्रमुद्ध विवरण प्रमुद्ध विवरण।  प्रमुद्ध विवरण प्रमुद्ध विवरण।  प्रमुद्ध विवरण प्रमुद्ध विवरण प्रमुद्ध विवरण व
प्रध्यक्ष, वाल कल्याण परिषद्, पृथ्य दण्डाधिकारी, बालक न्यायालय। मोहर । पृथ्य क्षेत्र व्यक्ति क्षेत्र हें हो या प्रादेश घर का विवरण तया पूर्ववर्ती विवरण । विलाक प्राप्तित प्रादेश जिससे धारा प्रवर्ती विवरण । विलाक प्राप्तित प्रादेश जिससे धारा प्रवर्ती क्षेत्र प्रवर्ति काई है जामिल है । प्राप्त प्रविक्रा प्रविक्रारी । विलाक प्राप्तित प्राप्त प्रविक्रा प्रविक्रारी । विलाम प्राप्तिकारी । विलाम प्राप्तिकारी । विलाम प्राप्तिकारी । विलाम प्राप्तिकारी । प्राप्त का को हिमाचन प्रदेश बाल प्राप्तितमा, 1979 की उपार्तिकार प्राप्त करने है आदेश विष्त प्राप्ता हो । प्रप्त का नाम निवासी (जिस का नाम) कि का केस संख्या पर्यवेक्षण प्रादेश प्रविक्रा प्राप्त प्रविक्रा प्राप्त प्रविक्रा प्राप्त प्रविक्रा प्राप्त प्रविक्रा प्राप्त प्रविक्रा प्राप्त प्रविक्रा
सोहर।  प्रवास कल्याण परिषद, पुच्य रण्डाधिकारी, बालक त्यायालय।  प्रमुख्य रण्डाधिकारी, बालक त्यायालय।  प्रमुख्य रण्डाधिकारी, बालक त्यायालय।  प्रमुख्य रण्डाधिकारी, बालक त्यायालय।  प्रमुख रण्डाधिकारी, बालक त्यायालय।  प्रमुख रण्डाधिकारी, बालक त्यायालय।  प्रमुख रण्डाधिकारी, बालक त्यायालय।  प्रमुख रण्डाधिकारी विवरण।  वितास प्रारित प्रविक्ष बालक प्रधितियम, 1979 के प्रमुख प्रविक्षण प्रविक्षण प्रविक्षण प्रमुख प्र
मोहर।  पुरुष दण्डाधिकारी, बालक त्यायावय।  प्राप्तानः निर्णय की प्रति यदि कोई हो या यादेश घर का विबरण तथा पूर्ववर्ती अभिलेख बालक प्रधिनियम, 1979 के अधीन पूर्ववर्ती विवरण ।  दिनांक पारित प्रति काई है या यादेश पर का विवरण प्रयाप्त प्रयाप्त प्रयाप्त प्रवेश विवरण ।  दिनांक पारित प्रति काई है आमिल है ।  प्रथा परित काई है शामिल है ।  प्रथा परित काई है शामिल है ।  प्रथा परित का प्रधान प्रयाप्त करने का प्रधिनियम, 1979 की अप्रति का प्रधान करने हैं स्लिम प्रधिकारी ।  प्रथा परित को हिमाचन प्रदेश बालक न्यायात्र ।  प्रवाप प्रयाप्त प्रथा को हिमाचन प्रदेश बाल आधिनियम, 1979 की अपराप्त करने का प्रादेश दिया गया हो)  काट दिया जाए जो अभिलत न हो ।  प्रथा प्रयाप प्रयाप्त प्रथा का प्रथा करने का प्रयोदेश दिया गया हो)  काट दिया जाए जो अभिलत न हो ।  प्रथा प्रयाप प्रयाप प्रयाप करने के अपरेत का प्रयाप के अपराप के लिए दोषी पाया गया प्रीर उसे स्वाप का प्रयाप करने के प्रयोदेश दिए जाते हैं कि की प्रयोदेश करने से अभिलत पाया गया है और प्रयाप करने में अभिलत पाया गया है और प्रयाप करने में अभिलत पाया गया है और प्रयाप करने के अपरेत करने पर कि के अपरेत करने के प्रयोदेश करने में अभिलत पाया गया है और प्रयाप करने के अपरेत करने पर कि के अपरेत करने पर कि के अपरेत करने पर कि के अपरेत करने वाल से व्यवहार करना करने पर कि अपरेत करने के अपरेत कि अपरेत कि अपरेत करने पर कि अपरेत करने कि अपरेत क
महिरा मुख्य दण्डाधिकारी, बालक न्यायालया मोहर ।  प्रविद्या प्रविद्या प्रिति प्रवि कोई हो या प्रादेश घर का विदयण तथा पूर्वदर्शी प्रितिच्य बालक प्रधिनियम, 1979 के अधीन पूर्वदर्शी विदयण ।  दिनांक पारित प्रदिश जिससे धारा प्रविद्या अप्रविद्या अप्य
हिमाचन प्रदेश बालक न्यायाल तथा पूर्ववर्ती व्याप्त व्याप्त व्याप्त तथा पूर्ववर्ती व्याप्त व्या
तया पूर्ववर्ती अभिलेख बालक प्रधिनियम, 1979 के प्रधीन पूर्ववर्ती विवरण ।  दिनांक पारित प्रदेश जिससे धारा प्रवर्शिक प्रविध जिससे धारा प्रवर्शिक प्रविध प्रविक्ष करे है जामिल है ।  प्रपत्न प मिलम प्राधिकारी ।  काट दिया जाए जी भ्रोक्षित न हो ।  प्रपत्न प मिलम प्रधिकारी ।  प्रपत्न करने का भ्रादेश विष्य ग्रादेश विद्या गया हो ।  प्रपत्न प मिलम प्रदेश प मिलम प्रधिकार में के भ्रादेश विष्य गया निवासी प्रपत्न के भ्रादेश विष्य निवास गया निवासी प्रपत्न करने करने करा वा न्याया निवासी प्रपत्न करने करने करा वा न्याया निवासी प्रपत्न करने करने करने करने करने करने करने करन
अधीन पूर्ववर्ती विवरण ।  दिनांक पारित अदिया जिससे धारा अवरोधन अविध, यदि कोई है  शामिल है ।  सक्षम प्राधिकारो ।  पर्या सक्षम प्राधिकारो ।  पर्या पर्या के सिंदी है  प्राप्त प  चिया जाए जो भ्रोक्षित न हो ।  पर्ये के पर्य
अधान पूर्वस्ता विवरण ।  दिनांक पारित प्रतिक जिससे घारा प्रविद्धांक प्रविद्धा जिससे घारा प्रविद्धांक प्रविद्धा जिससे घारा प्रविद्धांक प्रविद्धा जिससे घारा प्रविद्धांक प्रविद्धा अविद्धा , यदि कोई है प्राप्तिक है ।  सक्षम प्राप्तिकारी ।  सक्षम प्राप्तिकारी ।  सक्षम प्राप्तिकारी ।  पर्वेद्धांक स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के प्रविद्धा करने के प्रविद्धा के प्रविद्धा करने के प्रविद्धा के प्रविद्धा करने के प्र
अवरोधन अवधि, यदि कोई है  शामिल है ।  सक्षम प्राधिकारी ।  सक्षम प्राधिकारी ।  प्राप्त प  [तियम 13 (1) देखिए]  पर्येवेक्षण आदेश  पर्येवेक्षण आदेश  को केस संख्या  पर्यविक्षा अधीन इस दिन,  में रखा गया है ।  प्राप्त प  को अधीन इस दिन,  प्राप्त ध विल्य को हिमाचन प्रदेश बान अधितयम, 1979 की केस संख्या  पर्येवेक्षण आदेश  पर्येवेक्षण आदेश  को केस संख्या  पर्येवेक्षण में रखने के आदेश करके उन्त बान से सन्पुष्ट है कि उसे प्रयंवेक्षण में रखने के आदेश है ।  प्रत्वा गया है और न्यायानय इस बान से सन्पुष्ट है कि उसे प्रयंवेक्षण में रखने के आदेश करके उन्त बान से सन्पुष्ट है कि उसे प्रयंवेक्षण में रखने के आदेश करके उन्त बान से सन्पुष्ट है कि उसे प्रयंवेक्षण में रखने के आदेश है ।  वह एतद्वारा आदेश दिए गते हैं कि कि विल वान प्रित्त की विल से अवदार करना समीचीन है ।  एतद्वारा यह आदेश दिए गते हैं कि कि कि विल वान प्रवंवेक्षण में रखने के अदोग करके उन्त बान से सन्पुष्ट है कि उसे प्रयंवेक्षण में रखने के आदेश करके उन्त बान से सन्पुष्ट है कि उसे प्रयंवेक्षण में रखने के आदेश करके उन्त बान से सन्पुष्ट है कि उसे प्रयंवेक्षण में रखने के आदेश करके उन्त बान से सन्पुष्ट है कि उसे प्रयंवेक्षण में रखने के आदेश करके उन्त बान के स्ववहार करना ।  2. कि वह स्वयं को परिवीक्षा प्रधिकारी के प्रवंवेक्षण हैं एं के सामने व शिक्षा स्वा को प्रति वेक्ष में प्रवंवेक्षण में रखा जाएगा नामतः  (1) बानक किथान विल प्रविक्षा प्रविक्षाण प्रविक्षाण प्रविक्षाण प्रविक्षाण प्रविक्षाण प्रविक्षाण में प्रवंवेक्षण में रखा जाएगा नामतः  (1) बानक किथान विल प्रविक्षा प्रविक्षण प्रवंवेक्षण में रखा जाएगा नामतः  (1) बानक किथान विल प्रवंवेक्षण में रखा जाएगा नामतः  (1) बानक किथान विल प्रवंवेक्षण में रखा जाएगा नामतः  (1) बानक किथान विल प्रवंवेक्षण में रखा जाएगा नामतः  (1) बानक किथान प्रवंवेक्षण में रखा जाएगा नामतः  (2) किथान को प्रवंवेक्षण में रखा जाएगा नामतः  (3) कि वह इसमे निविष्ट प्रविक्ष के दौरान परिवीक्षा अधिकार से प्रवंवेक्षण होता से प्रवंवेक्षण से प्रवंवेक्षण होता से
शामिल है ।  सक्षम प्राधिकारी ।  सक्षम प्राधिकारी ।  सक्षम प्राधिकारी ।  पर्या करने का प्रादेश दिया गया हो)  पर्या पर्या पर्या पर्या के लिए दोषी पाया गया और उसे र्ष्या के प्राप्त पर्या के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त करने के प्राप्त कर के प्राप्त के प्रप्त के प्राप्त के प्रप्त के प्राप्त के प्र
शामिल है।  सक्षम प्राधिकारी।  सक्षम प्राधिकारी।  सक्षम प्राधिकारी।  प्रथन प  [नियम 13 (1) देखिए] पर्यवेक्षण प्रादेण पर्यवेक्षण प्रादेण पर्यवेक्षण प्रादेण (जब बच्चा माता-पिता/संरक्षक या ग्रन्य व्यक्ति की देख-रेख में रखा गया है)  पत्रव्या माता-पिता/संरक्षक या ग्रन्य व्यक्ति की देख-रेख में रखा गया है  को केस संख्या  पत्रव्या माता-पिता/संरक्षक या ग्रन्य व्यक्ति की देख-रेख में रखा गया है  पत्रव्या माता-पिता/संरक्षक या ग्रन्य व्यक्ति की देख-रेख में रखा गया है  पत्रव्या माता-पिता/संरक्षक या ग्रन्य व्यक्ति की देख-रेख में रखा गया है  पत्रव्या माता-पिता/संरक्षक या ग्रन्य व्यक्ति की देख-रेख में रखा गया है ग्रीर व्यापालय हम बात से सन्तुष्ट है कि उसे  पर्यवेक्षण में रखने के आदेण करके उक्त बाल से व्यवहार करना होगा श्रीर जिल्लिखत परिवोक्षा प्रधिकारी के समक्ष उप होगा श्रीर ग्रादेश के प्रतिवेक्षण प्रवेक्षण में रखने के आदेण त्वा लागा है कि उक्त बाल से व्यवहार करना हमानिविक्त करके पर व्यक्ति करके उक्त बाल से व्यवहार करना हमानिविक्ति क्राधीन प्रयवेक्षण में रखने के आदेण त्वा लागा है कि उक्त बाल से व्यवहार करना हमानिविक्ति क्राधीन प्रयवेक्षण में रखने के अपनेवेक्षण में रखनेविक्त प्रविक्ति विक्ति के विक्ति विक्ति विक्ति के प्रवेक्षण होतु प्रविक्ति के प्रवेक्षण होतु के समक्ष उपविक्ति के प्रवेक्षण में रखनेविक्ति विज्ञा ग्रीकिति विक्ति विक्ति के प्रवेक्षण में रखनेविक्ति विक्ति
प्राप्त प प्राप्त करते न हो।  प्राप्त प प्राप्त प प्राप्त करते न हो।  प्राप्त प प्राप्त प प्राप्त करते प्राप्त करते न हो।  प्राप्त प प्राप्त करते प्राप्त करते प्राप्त करते ज्ञान करते ज्ञान हो।  प्राप्त करते के प्राप्त करते के प्राप्त करते ज्ञान करते ज्
प्रपत्न प्रपत्न प्रविद्या जाए जो भ्रोक्षित न हो ।  प्रपत्न प्रपत्न प्रविद्या होगा प्रविद्या को भाष्ट्य प्रविद्या के प्रविद्या होगा प्रविद्या को भाष्ट्य प्रविद्या के प्रविद्या होगा प्रविद्या के प्रविद्या होगा प्रविद्या के प्रविद्या होगा प्रविद्या के प्रविद्या होगा होगा हिता प्रविद्या होगा प्रविद्या होगा हिता प्रविद्या होगा प्रविद्या होगा हिता प्रविद्या होगा हिता प्रविद्या होगा हिता हिता प्रविद्या होगा हिता हिता होगा हिता हिता हिता हिता हिता हिता हिता हित
प्रपत्न प्र प्रविद्या जाए जो भ्रोक्षित न हो।  प्रपत्न प्र प्रविद्या निष्म 13 (1) देखिए] पर्यवेक्षण माता 13 (1) देखिए] पर्यवेक्षण माता 13 (1) देखिए] पर्यवेक्षण माता प्रता है।  भें रखा गया है)  पत्रद्वारा यह माता समीचीन है।  भें रखा गया है)  पत्रद्वारा यह मादेश दिए जाते हैं कि कथित वाल परिवीक्षा मात्रा मात्र में उल्लिखित शर्तों का पालन करेगा, नार परिविक्षा में उल्लिखित परिवीक्षा मात्र हमान के मात्र मान्य हम मात्र हमान के मात्र मान्य हम मात्र हमान के मात्र मान्य हम मात्र हमान के मात्र मान्य मान्य हमान के मान्य हमान हमान हमान हमान हमान हमान हमान हमान
प्रपत्न प  [नियम 13 (1) देखिए] पर्यवेक्षण ब्रादेश  (जब बच्चा माता-पिता/संरक्षक या अन्य व्यक्ति की देख-रेख  में रखा गया है)  पत्र कि अधोन इस दिन, प्रत्य क्षा करने में अपेक्षित पाया गया है ब्रोर कि समक्ष उप क्षित वाला मां के अधोन इस दिन, प्रत्य करने में अपेक्षित पाया गया है ब्रोर करने देख-रेख में रखा पत्र विवास करने पर की देख-रेख में रखा पत्र विवास करने पर की देख-रेख में रखा पत्र विवास करने पर की देख-रेख में होगा और निम्निलिखित शर्तों का पालन करेगा, नार रखा ने के अधोन इस दिन, प्रत्य क्षा पत्र विवास करने पर की देख-रेख में होगा और अप्रदेश के जारी होने की तिथि से 14 के भीतर आदेश में उल्लिखित परिवोक्षा अधिकारी के समक्ष उप होगा और आदेश में उल्लिखित परिवोक्षा अधिकारी के समक्ष उप होगा और आदेश में उल्लिखित परिवोक्षा अधिकारी के समक्ष उप होगा और अप्रदेश की प्रति उसे प्रस्तुत करेगा।  2. कि वह स्वयं इस आदेश के जारी होने की तिथि से 14 के भीतर आदेश में उल्लिखित परिवोक्षा अधिकारी के समक्ष उप होगा और आदेश में उल्लिखित परिवोक्षा अधिकारी के समक्ष उप होगा और अप्रदेश की प्रति उसे प्रस्तुत करेगा।  2. कि वह स्वयं को परिवोक्षा अधिकारी के पर्यवेक्षण हेतु करेगा:  3. कि वह इसमें निर्दिष्ट अविध के दौरान परिवीक्षा अधिकारी को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थ त्र अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थ त्र अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थ त्र अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थ त्र निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थ त्र निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थ त्र निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थ त्र निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थ त्र निवास स्थान के वार प्रवास कर वेश ते साधनों के साधनों के अपने निवास स्थान के वार प्रवास कर वेश ते साधनों के स
श्वित प्रावित के अप्रविद्वारा अप्रवित की देख-रेख में रखा गया है और विद्वारा
श्वित प्रावित के अप्रवित का अप्र
[नियम 13 (1) देखिए] पर्यवेक्षण आदेश  (जब बच्चा माता-पिता/संरक्षक या अन्य व्यक्ति की देख-रेख  में रखा गया है)  (जब बच्चा माता-पिता/संरक्षक या अन्य व्यक्ति की देख-रेख  में रखा गया है)  (जब बच्चा माता-पिता/संरक्षक या अन्य व्यक्ति की देख-रेख  में रखा गया है)  (जब बच्चा माता-पिता/संरक्षक या अन्य व्यक्ति की देख-रेख  में रखा गया है)  (जब बच्चा माता-पिता/संरक्षक या अन्य व्यक्ति की देख-रेख  में रखा गया है)  (जब बच्चा माता-पिता/संरक्षक या अन्य व्यक्ति की देख-रेख  में रखा गया है)  (जब बच्चा माता-पिता/संरक्षक या अन्य व्यक्ति की देख-रेख  में रखा गया है कि उसे संख्या  के अधीन इस दिन, (नाम)  इस्सा बन्ध पत्र निष्पादन करने पर  की देख-रेख में होगा और आदेश के जारी होने की तिथि से 14 के भीतर आदेश में उल्लिखित परिवीक्षा अधिकारी के समक्ष उप होगा और आदेश की प्रति उसे परस्तुत करेगा।  2. कि वह स्वयं को परिवीक्षा अधिकारी के पर्यवेक्षण हेतु प्रक्ति के आदेश करके उस्त बाल से व्यवहार करना समीलीन है।  वह एतद्दारा आदेश दिया जाता है कि उस्त बाल निम्नलिखित बहु एतद्दारा आदेश पर्यवेक्षण में रखा जाएगा नामत:  (1) बालक कथित हारा निष्पादित कन्य पत्र तथा आदेशों की प्रतियां सहित आपरा परिवीक्षा अधिकारी  (1) बालक कथित हारा निष्पादित कन्य पत्र तथा आदेशों की प्रतियां सहित आपरा निष्पादित कन्य पत्र तथा आदेशों की प्रतियां सहित आपरा परिवीक्षा अधिकारी  4 कि वह नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
पर्यविक्षण ब्रादेण (जब बच्चा माता-पिता/संरक्षक या ग्रन्य व्यक्ति की देख-रेख में रखा गया है)  पत्द्द्वारा यह ब्रादेश दिए जाते हैं कि कथित वाल—पित्रीक्षा प्रधिकारों की देख-रेख पत्द्द्वारा यह ब्रादेश दिए जाते हैं कि कथित वाल—पित्रीक्षा प्रधिकारों की देख-रेख में पित्रीक्षा प्रधिकारों की देख-रेख में प्रदेशित पाया गया है ब्रोर — की देख-रेख में रखा गया है ब्रोर — की देख-रेख में रखा गया है ब्रोर — की देख-रेख में रखा गया है ब्रोर न्यायालय इस बात से सन्तुष्ट है कि उसे पर्यवेक्षण में रखाने के ब्रादेश करके उनते बाल से व्यवहार करना पर विकास प्रधिकारों के प्रवेशिण हेतु करेगा :  वह एतद्द्वारा ब्रादेश करके उनते बाल से व्यवहार करना समीचीन है ।  वह एतद्द्वारा ब्रादेश करके उनते बाल से व्यवहार करना समीचीन है ।  वह एतद्द्वारा ब्रादेश करके उनते बाल से व्यवहार करना समीचीन है ।  वह एतद्द्वारा ब्रादेश करके उनते बाल से व्यवहार करना समीचीन है ।  वह एतद्द्वारा ब्रादेश के प्रदेश के जारी होने की तिथि से 14 के भीतर प्रादेश में प्रति उसे प्रस्तुत करेगा ।  2. कि वह स्वयं को परिवीक्षा प्रधिकारों के पर्यवेक्षण हेतु करेगा :  3. कि वह इसमें निदिष्ट प्रविध के दौरान परिवीक्षा प्रधिकार स्वर्ध को प्रति उसे प्रवन्त करवाएगा ।  (1) बालक कथित — द्वारा निष्पादित कन्य परिवीक्षा प्रधिकारों की प्रतियां सहित प्रावरण परिवीक्षा प्रधिकारों के वह नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
(जब बच्चा माता-पिता/संरक्षक या ग्रन्य व्यक्ति की देख-रेख  में रखा गया है)  प्तद्द्वारा यह ग्रादेश दिए जाते हैं कि कथित दाल—पितीक्षा ग्राधिकारी की देखरेख में— ग्रादिश करने में अपेक्षित पाया गया है ग्रीर — की देख-रेख में लिए रखा जायेगा और निम्निलिखित शर्तों का पालन करेगा, नार कि वह स्वयं इस ग्रादेश के जारी होने की तिथ से 14 के भीतर ग्रादेश में उल्लिखित परिवीक्षा ग्राधिकारी के समक्ष उप होगा और ग्रादेश के ग्रादेश करने उनते बात से सन्तुष्ट है कि उसे पर्यवेक्षण में रखने के ग्रादेश करके उनते बात से व्यवहार करना समीचीन है।  वह एतद्द्वारा ग्रादेश करने उन्ते बात से सन्तुष्ट है कि उसे पर्यवेक्षण में रखने के ग्रादेश करके उनते बात से व्यवहार करना होगा और ग्रादेश की प्रति उसे प्रस्तुत करेगा।  2. कि वह स्वयं को परिवीक्षा ग्राधिकारी के पर्यवेक्षण हेतु करेगा:  2. कि वह स्वयं को परिवीक्षा ग्राधिकारी के पर्यवेक्षण हेतु करेगा:  3. कि वह इसमें निदिष्ट ग्रविध के दौरान परिवीक्षा ग्राधिकारी को ग्रापने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थितों के ग्रापने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थित तथा में प्रति के बारे ग्रावनत करवाएगा।  (1) बालक कथित————————————————————————————————————
चित्र विकास माता-पिता/संरक्षक या ग्रन्य व्यक्ति की देख-रेख में रखा गया है।  में रखा गया है।  पत्द्द्वारा यह ग्रादेश दिए जाते हैं कि कथित वाल—पितीक्षा ग्राधिकारी की देखरेख में पितीक्षा ग्राधिकारी की जारी होने की तिथि से 14 के भीतर ग्रादेश में उल्लिखित परिवीक्षा ग्राधिकारी के समक्ष उप होगा और ग्रादेश में उल्लिखित परिवीक्षा ग्राधिकारी के समक्ष उप होगा और ग्रादेश की प्रति उसे प्रस्तुत करेगा।  वह एतद्द्वारा ग्रादेश कि जक्त बाल से व्यवहार करना समीलीन है।  वह एतद्द्वारा ग्रादेश कि जक्त बाल में व्यवहार करना समीलीन है।  वह एतद्द्वारा ग्रादेश की प्रति उसे प्रस्तुत करेगा।  2. कि वह स्वयं को परिवीक्षा ग्राधिकारी के प्रयंवेक्षण हेतु करेगा:  3. कि वह इसमें निर्दिष्ट ग्रविध के दौरान परिवीक्षा ग्राधिकारी को ग्रापते को ग्रापते के निर्दाह के साधनों विश्वास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों विश्वास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों विश्वास स्थान स्थान करेगा स्थान के प्रति के निर्दाह के साधनों विश्वास स्थान स्थान के विश्व से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
में रखा गया है)  एतद्द्वारा यह ब्रादेश दिए जाते हैं कि कथित वाल— परिवीक्षा श्रिष्ठकारी की देखरेख में — श्रुवि लिए रखा जायेगा और निम्निलिखित शर्तों का पालन करेगा, नार  गर्पा करने में अपेक्षित पाया गया है श्रीर — की देख-रेख में ते स्वा गया है श्रीर न्यायालय इस बात से सन्तुष्ट है कि जस  पर्यवेक्षण में रखने के आदेश करके जनत बाल से व्यवहार करना  समीलीन है ।  बह एतद्द्वारा ब्रावेश दिया जाता है कि जनत बाल निम्निलिखत  सतों के श्रुष्ट्याधीन प्रयंवेक्षण में रखा जाएगा नामत :—  (1) बालक कथित —
परिवीक्षा प्रविक्तारी की देखरेख में किए रखा जायेगा और निम्निलिखित शर्तों का पालन करेगा, नाम के प्रविद्या पत्र विद्या के प्रविक्ता पत्र विद्या के प्रविक्ता परिवीक्षा प्रविक्तारी के समक्ष उप होगा और ज्ञादेश के प्रविक्तारी के समक्ष उप होगा और प्रादेश की प्रति उसे प्रस्तुत करेगा।  2. कि वह स्वयं इस प्रादेश के परिवीक्षा प्रविक्तारी के पर्यवेक्षण हेतु करेगा :  2. कि वह स्वयं को परिवीक्षा प्रविक्तारी के पर्यवेक्षण हेतु करेगा :  3. कि वह इसमें निर्दिष्ट प्रविद्या के दौरान परिवीक्षा प्रविक्तारी के प्रयवेक्षण हेतु को प्राप्त करेगा :  3. कि वह इसमें निर्दिष्ट प्रविद्या के दौरान परिवीक्षा प्रविक्तार को प्रपन्त निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थ को प्रपन्त करवाएगा ।  4. कि वह नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
किए रखा जायेगा और निम्निलिखित शर्तों का पालन करेगा, नार क्रिया करने में अपेक्षित पाया गया है और (नाम) की वेख-रेख में स्वाद पत्न निष्पादन करने पर की देख-रेख में स्वाद पत्न निष्पादन करने पर की देख-रेख में रखा गया है और न्यायालय इस बात से सन्तुष्ट है कि उसे एयंवेक्षण में रखने के आदेश करके उस्त बाल से व्यवहार करना समीलीन है । वह एतदहारा आदेश दिया जाता है कि उस्त बाल निम्निलिखित स्वाद करने वह इसमें निर्दिष्ट अविध के दौरान परिनीक्षा अधिकारी के अध्याधीन प्रयंवेक्षण में रखा जाएगा नामत:—  (1) बालक किथित हिरा किपिदित क्षाव परिनीक्षा अधिकारी कि वह नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
के अधीन इस दिन, अपराध करने में अपेक्षित पाया गया है और (नाम) हारा बन्ध पन निष्पादन करने पर की देख-रेख में स्वादिश के निर्मालिख ते अपेक्षित पाया गया है और व्यायालय इस बात से सन्तुष्ट है कि उसे एपँवेक्षण में रखने के आदेश करके उक्त बाल से व्यवहार करना समीलीन है ।  बह एतद्द्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्नलिखत करेगा :  वह एतद्द्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्नलिखत करेगा :  3. कि वह इसमें निर्दिष्ट अविध के दौरान परिवीक्षा अधिकार को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थान करेगा :  (1) बालक कथित हारा निष्पादित कन्ध पत्र तथा आदेशों की प्रतियां सहित आचरण परिवीक्षा अधिकारी 4. कि वह नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
अपराध करने में अपेक्षित पाया गया है और (नाम) हारा बन्ध पत्र निर्मालित परिवीक्षा अधिकारी के समक्ष उप होगा और श्रादेश की प्रति उसे प्रस्तुत करेगा।  वहारा बन्ध पत्र निष्पादन करने पर की देख-रेख में रखा गया है और न्यायालय इस बात से सन्तुष्ट है कि उसे एग्वेक्षण में रखने के आदेश करके उक्त बाल से व्यवहार करना समीलीन है।  वह एतद्द्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्निलिखत करेगा:  वह एतद्द्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्निलिखत करेगा:  3. कि वह इसमें निदिष्ट अविधि के दौरान परिवीक्षा अधिकारों के अध्याधीन प्रयवेक्षण में रखा जाएगा नामत:—  (1) बालक कथित हारा निष्पादित कन्ध पत्र तथा आदेशों की प्रतियां सहित आचरण परिवीक्षा अधिकारी 4. कि वह नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
अपराध करने में अपेक्षित पाया गया है और (नाम) हारा बन्ध पत्र निर्मालित परिवीक्षा अधिकारी के समक्ष उप होगा और श्रादेश की प्रति उसे प्रस्तुत करेगा।  वहारा बन्ध पत्र निष्पादन करने पर की देख-रेख में रखा गया है और न्यायालय इस बात से सन्तुष्ट है कि उसे एग्वेक्षण में रखने के आदेश करके उक्त बाल से व्यवहार करना समीलीन है।  वह एतद्द्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्निलिखत करेगा:  वह एतद्द्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्निलिखत करेगा:  3. कि वह इसमें निदिष्ट अविधि के दौरान परिवीक्षा अधिकारों के अध्याधीन प्रयवेक्षण में रखा जाएगा नामत:—  (1) बालक कथित हारा निष्पादित कन्ध पत्र तथा आदेशों की प्रतियां सहित आचरण परिवीक्षा अधिकारी 4. कि वह नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
<ul> <li>रखा गया है श्रीर न्यायालय इस बात से सन्तुष्ट है कि उसे पर्यवेक्षण में रखने के आदेश करके उक्त बाल से व्यवहार करना करेगा : वह एतद्द्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्निलिखत सतों के श्रद्ध्याधीन प्रयवेक्षण में रखा जाएगा नामत:—</li> <li>(1) बालक कथित———द्वारा निष्पादित कथ्य पत्र तथा श्रादेशों की प्रतियों सहित श्राचरण परिवीक्षा श्रिष्ठकारी</li> <li>(2) कि वह स्वयं को परिवीक्षा श्रिष्ठकारी के प्रयवेक्षण हेतु करेगा :</li> <li>3. कि वह इसमें निद्ध्य प्रविध के दौरान परिवीक्षा श्रीष्ठ को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थाता करें श्रद्धा के प्रविध के स्थापन करें श्रद्धा के प्रविध के दौरान परिवीक्षा श्रीष्ठ को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के स्थान करें श्रद्धा के प्रविध के दौरान परिवीक्षा श्रीष्ठ को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के स्थान करें श्रद्धा के प्रविध के दौरान परिवीक्षा श्रीष्ठ को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के स्थापने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्थान करें श्रिष्ठ के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्थान करें स्थान के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्था के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्था के साधनों व शिक्य के साधनों व शिक्ष के साधनों व शिक्ष साधनों के साधनों व शिक्ष साधनों व शिक्य साधनों व शिक्ष साधनों व</li></ul>
<ul> <li>रखा गया है श्रीर न्यायालय इस बात से सन्तुष्ट है कि उसे पर्यवेक्षण में रखने के आदेश करके उक्त बाल से व्यवहार करना करेगा : वह एतद्द्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्निलिखत सतों के श्रद्ध्याधीन प्रयवेक्षण में रखा जाएगा नामत:—</li> <li>(1) बालक कथित———द्वारा निष्पादित कथ्य पत्र तथा श्रादेशों की प्रतियों सहित श्राचरण परिवीक्षा श्रिष्ठकारी</li> <li>(2) कि वह स्वयं को परिवीक्षा श्रिष्ठकारी के प्रयवेक्षण हेतु करेगा :</li> <li>3. कि वह इसमें निद्ध्य प्रविध के दौरान परिवीक्षा श्रीष्ठ को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थाता करें श्रद्धा के प्रविध के स्थापन करें श्रद्धा के प्रविध के दौरान परिवीक्षा श्रीष्ठ को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के स्थान करें श्रद्धा के प्रविध के दौरान परिवीक्षा श्रीष्ठ को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के स्थान करें श्रद्धा के प्रविध के दौरान परिवीक्षा श्रीष्ठ को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के स्थापने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्थान करें श्रिष्ठ के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्थान करें स्थान के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्था के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्था विश्व के साधनों व शिक्षा स्था के साधनों व शिक्य के साधनों व शिक्ष के साधनों व शिक्ष साधनों के साधनों व शिक्ष साधनों व शिक्य साधनों व शिक्ष साधनों व</li></ul>
पर्यंवेक्षण में रखने के आदेश करके उक्त बाल से व्यवहार करना यह करेगा :  बह एतद्द्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्नलिखित अध्याद्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्नलिखित अध्याद्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्नलिखित अध्याद्वान प्रयंवेक्षण में रखा जाएगा नामत:— अभे अध्याद्वान प्रयंवेक्षण में रखा जाएगा नामत:— को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थात्वा में प्रयंति के बारे प्रवंति करवाएगा ।  (1) बालक कथित— द्वारा निष्पादित अन्य पर्वे विद्यान स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थात्वा में प्रयंति के बारे प्रवंति करवाएगा ।  (1) बालक कथित— द्वारा निष्पादित अन्य पर्वे विद्यान स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थात के अपने विद्यान स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थान स्याप स्थान स्याप स्थान स्यान स्थान
समीलीन है ।  बह एतब्द्वारा झादेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्नलिखित  श्वतों के श्रष्ट्याधीन प्रयंवेक्षण में रखा जाएगा नामत:—  (1) बालक कथित————————————————————————————————————
वह एतब्द्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त बाल निम्नलिखित अधि अध्याधीन प्रयंवेक्षण में रखा जाएगा नामत:— को अपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थ (1) बालक कथित— द्वारा निष्पादित बन्ध पत्र तथा आदेशों की प्रतियां सहित आचरण परिवीक्षा अधिकारी 4. कि वह नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
शतों के श्रध्याधीन प्रयंवेक्षण में रखा जाएगा नामत:—  को ग्रंपने निवास स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थ  (1) बालक कथित————————————————————————————————————
(1) बालक कथित द्वारा निष्पादित धन्ध पत्र विश्वा में प्रगति के बारे प्रवगत करवाएगा । तथा आदेशों की प्रतियां सहित श्राचरण परिवीक्षा अधिकारी 4. कि वह नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
(1) बालक कायत हारा । निष्पादत ६०६ पत तथा प्रादेशों की प्रतियां सहित ग्राचरण परिवीक्षा श्रविकारी 4. कि वह नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
तथा आदेशों की प्रतियां सहित स्राचरण परिवीक्षा श्रष्टिकारी 4. कि वह नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा
Commence of the design of the second
(a) का वह लम्पट जावन क्यांत करन के लिए बर बार्स
(2) बाल पारवाक्षा आर्थकारा के प्यवनार्थ के लिए अस्तुत लोगों की संगति नहीं करेगा। किया जीएगा।
(3) बाल
manufacture of factors and and after any
श्रीधकारी की लिखित अनुका के बिना बाहर जान की गुरुमित उन्हों दी जायारी।
જાપમાં પામાં મામા મા
191 let all dodlet and the saletter it is it is a saletter.
है कि वह नशीली चीजों से प्रलग रहेगा।
ج. 9.
(6) कि बाल ईमानदारी तथा शान्तिमय ढंग से रहेगा। 10.
(7) कि बाल नियमित रूप से उपस्थित केन्द्र में उपस्थित होगा। 11.
(8) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है बाल की 12 कि वह एस निदेशा का पाला करेगा जा उपन
(8) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है बाल को 12. कि वह एस निदेश की पालन करेगे जा तन ती के उन्हों के उन्हों के अपने के उन्हों के अपने के किया जा उनके कल्याण का पूरा प्रवत्य परिवीक्षा अधिकारी द्वारा उक्त उल्लेखित शर्तों के सम्यक क
(8) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है बाल को 12. कि वह एस निदेश का पालन करना जा तर्न तर्न जिल्ला करना जा पालन करना के सम्प्रक के उचित देखभाल, शिक्षा तथा उसके कल्याण का पूरा प्रबन्ध परिवीसा प्रधिकारी द्वारा उक्त उल्लेखित शर्तों के सम्प्रक के करेगा।
(8) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है बाल को 12. कि वह एस निदेश की पालन करना जा राज करने के उचित देखभाल, शिक्षा तथा उसके कल्याण का पूरा प्रबन्ध परिवीसा प्रधिकारी द्वारा उक्त उल्लेखित शर्तों के सम्प्रक रूपा।  (9) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है हर
(8) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है बाल को 12. कि वह एस निदेशों का पालन करना जा तर्म कर जिल्ले कि साम कि पिता अधिकारी द्वारा उक्त उल्लेखित शर्तों के सम्मक के करेगा।  (9) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है हर तरह के निरोधात्मक उपाय प्रयोग करेगा, इस बात
(8) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है बाल को 12. कि वह एस निदेशों की पालन करना जा राज जिल्ला करेगा जिल्ला करेगा जिल्ला करेगा विश्व करेगा।  (9) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है हर तरह के निरोधात्मक उपाय प्रयोग करेगा, इस बात का ध्यान रखन के लिए कि भारत में प्रवृत विधि द्वारा तिथि को ।
(8) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है बाल को 12. कि वह एस निदेशों की पालन करना जा तर्म कर जिल्ले कि साम करने कि उचित देखभाल, शिक्षा तथा उसके कल्याण का पूरा प्रबन्ध परिवीसा प्रधिकारी द्वारा उक्त उल्लेखित शर्तों के सम्मक के करेगा।  (9) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है हर तरह के निरोधात्मक उपाय प्रयोग करेगा, इस बात का ध्यान रखन के लिए कि भारत में प्रवृत विधि द्वारा तिथि को ।  किसी दण्डनीय ग्रमराध को नहीं करता है।
(8) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है बाल को 12. कि वह एस निदेशों की पालन करना जा तर्म कर जिल्ले कि साम करने कि उचित देखभाल, शिक्षा तथा उसके कल्याण का पूरा प्रबन्ध परिवीसा प्रधिकारी द्वारा उक्त उल्लेखित शर्तों के सम्मक के करेगा।  (9) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है हर तरह के निरोधात्मक उपाय प्रयोग करेगा, इस बात का ध्यान रखन के लिए कि भारत में प्रवृत विधि द्वारा तिथि को ।  किसी दण्डनीय ग्रमराध को नहीं करता है।
(8) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है बाल को 12. कि बहु एस निदेश की पालन करना जा समय तर्ज उचित देखभाल, शिक्षा तथा उसके कल्याण का पूरा प्रबन्ध परिवीसा प्रधिकारी द्वारा उक्त उल्लेखित शर्तों के सम्यक के पालन करने हेतु दी जायें।  (9) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है हर तरह के निरोधात्मक उपाय प्रयोग करेगा, इस बात का ध्यान रखन के लिए कि भारत में प्रवृत विधि द्वारा तिथि को।  किसो दण्डनीय ग्रम्राध को नहीं करता है।  (10) कि बाल को नशे वाली चीजें लेने से रोका जाएगा।  मोहर।  मुख्य दण्डाधिकारी, बालक न्यायाल
(8) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है बाल को उचित देखभाल, शिक्षा तथा उसके कल्याण का पूरा प्रबन्ध करेगा।  (9) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है हर तरह के निरोधात्मक उपाय प्रयोग करेगा, इस बात का ध्यान रखन के लिए कि भारत में प्रवृत विधि द्वारा कि तिथि को ।  किसी दण्डनीय ग्रम्पराध को नहीं करता है।  (10) कि बाल को नग्ने वाली चीजें लेने से रोका जाएगा।  #(11)  #(11)
(8) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है बाल को पर प्रित्त को परिवास अधिकारी द्वारा उक्त उल्लेखित शर्तों के सम्यक के करेगा।  (9) कि व्यक्ति जिसकी देख रेख में बाल को रखा गया है हर तरह के निरोधात्मक उपाय प्रयोग करेगा, इस बात का ध्यान रखन के लिए कि भारत में प्रवृत विधि द्वारा तिथि को।  किसी दण्डनीय ग्रपराध को नहीं करता है।  (10) कि बाल को नंग्ने वाली चीजें लेने से रोका जाएगा।

203 द्धाय श्रंकित की जा सकती है। हो पुनः ऋमांकित किया जायेगा। त शर्तों के साम्यक रूप स पालन करने हेतु परिवीक्ता कारी द्वारा समय पर दिए गए निदेशों को कार्यान्दित को 19 के दिन को भ्रध्यक्ष; बाल कल्याण परिषद् मुख्य दण्डाधिकारी. हिमाचल प्रदेश बालक न्यायालय । प्रपत्न~--∨ा [नियम 13(2) देखिए] हिमाचल प्रदेश बाल ग्रिधिनियम, 1979 की बारा रा (1) के खण्ड (ग) के ग्रन्तगंत जूर्माना ग्रदा करने का भादेश दिया गया हो) का नाम) निवासी------(प्रकान संख्या, सड़क, ना इत्यादि पूरा पता) ब्राज धारा — के अन्तर्गत रने के श्रादेश दिए गए तथा न्यायालय इस बात से 'से प्रयंवेक्षण में रखने के ग्रादेश करके उक्त बाल से समीचीन है। ह ग्रादेश दिए जाते हैं कि कथित दाल-गरी की देखरेख में---गा और निम्निलिखित शर्ती का पालन करेगा, नामत:-स्वयं इस ग्रादेश के जारी होने की तिथि से 14 दिन में उल्लिखित परिवोक्षा ग्रधिकारी के समक्ष उपस्थित श की प्रति उसे प्रस्तुत क रेगा। स्वयं को परिवीक्षा ग्रधिकारी के पर्यवेक्षण हेतु प्रस्तुत इसमें निर्दिष्ट प्रविध के दौरान परिवीक्षा अधिकारी त स्थान, जीवन निर्वाह के साधनों व शिक्षा स्थान व के बारे प्रवगत करवाएगा। नियमित रूप से उपस्थिति केन्द्र में उपस्थित होगा । लम्पट जीवन व्यतीत करने के लिए बुरे चरित्र वाने नहीं करेगा। ईमानदारी तथा भान्तिमय ढंग से रहेगा और वह ने स्कूल जाएगा व ईमानदारी से माजीविका कमाने का

#### प्रपन्न प्रा

[नियम	37 का उप-नियम (1) देखिए]	
ग्रनुज्ञप्ति	पर रिहाई के भ्रादेश का प्रपन	
हिमाचल प्रदेश सरकार	इस प्रनुशाध्त द्वारा (अनुश्राप्त प्रदान	<b>क</b> रन

बाले प्राधिकारी का नाम) ———जाति— — ——-पुत्र/पुत्री--– तहसील-----, **वि**ला----को जिसे बालक गृह व स्पैशल स्कूल में बाल कल्य।ण परिषद् व बालक न्यायालय द्वारा हिमाचल प्रदेश बालक अधिनियम, 1979 की धारा के प्रधीन प्रविध के लिए 19 कि जाने के ग्रादेश दिए ----पर उ<del>द</del>त--गर्य वे घौर जिस ग्रब---------पर इस गर्त पर कि ऐसे----के प्रयंवेक्षण श्रौर प्राधिकार में भवरोधन की उक्त श्रवधि के बाकी समय की दौरान रखा जाए रिहाई करने को अनुमति प्रदान करता हूं।

यह अनुज्ञप्ति इस पर पृष्ठांकित शर्ती के अध्यायीन प्रदान की नाती है जिसके किसी भी उल्लंघन पर इस का प्रतिसहरण किया

जायेगा ।

दिनांक

प्रनुक्तप्ति प्रदान करने बाले प्राधिकारी ंके हस्ताक्षर ग्रौर पद।

प्रयंवक्षण भौर प्राधिकारी में उसका प्रवरोधन को प्रवधि के समापन तक रहेगा जब तक कि उसकी माफो रद्द नहीं कर दी जाती है।

- 2. वह उक्त----की सहमति के बिना अपन आप को उस स्थान मथवा किसी अन्य स्थान से जो कि कथित द्वारा किया जाए नहीं हटाएगा ।
- वह ऐसे निदेशों का जो उसे कथित—————नियोजन में पाबन्द और नियमित उपस्थिति सम्बन्धी प्रथवा प्रन्यवा प्राप्त हों
- 4. वह नियमित रूप से उपस्थिति केन्द्र----उपस्**व**त हो**गा** ।
- 5. वह कोई ग्रपराध नहीं करेगा ग्रोर ----संतोषण के लिए संयमी और मेहनती जीवन व्यतीत करेगा

7.

8. 

10.; उसके (स्वी व पुरुष) द्वारा उपयुक्त शर्तों में से किसी का भी उल्लंघन करने पर एतदृद्वारा मनुमत प्रवरोधन की प्रविध की माफी रद की जाएगी और ऐसे रहकरण पर वह (स्त्री व पुरुष) के साथ हिमाचल प्रदेश बालक अधिनियम, 1979 की धारा 53 की उप-धारा (3) के प्रधोन व्यवहार किया जायेगा ।

में एतद्द्वारा स्वीकार करती हूं कि मैं उक्त शर्त को जोनती हुं जो कि मुझ पढ़ कर मुनाई गई हैं और जिसल क्रुके स्पष्टोकरण कर दिया गया है और मैं उन्हें स्वीकार करता हूं। 🛴 .

्र प्रनुक्रप्तिधारी के हस्ताक्षर के चिन्ह ।

प्रमाणित किया जाता है कि उपर्युक्त ग्रादेश में बिनिर्दिष्ट शतें नाम--- को पढ़कर मूना दों गई हैं ग्रीर उनको स्पष्ट रूप में समझा दिया गया है और उस स्त्री/पुरुष ने उन सभी णर्ती को स्वीकार किया है जिस पर स्वी/पुरुष अवरोधन की संबंधि माफ की गर्द है और उसे स्जी/पुरुष को नईनुसार-कर दिया गया है।

> प्रमाणित करने बाले प्राधिकारी प्रधीत् ग्रधीक्षक के हस्ताक्षर व पदनाम।

टिप्पणी --- प्रतिरिक्त गर्ने यदि कोई प्रधिरोपित की जानी हैं अनुक्राप्त प्रदान करने वाले प्राधिकारी द्वारा अधिरोपित की जा सकती

#### त्रपश्ल-VIII

[नियम 38 (1) देखिए]

बन्ध पल्ल जिस हा निष्पादन माता-पिता, सरकाक व उपयुक्त व्यक्ति के रिक्तेदार द्वारा किया जाता है जिसकी देख रेख में बाल को हिमाचल प्रदेश बाल अधिनियम, 1979 की धारा 16(1) ध्रुथवा धारा 21(1) (ख) के प्रधीन रखा गया है

यतः मुझे माता-पिता व संरक्षक व रिश्तेदार श्रथवा व्यक्ति होने के नाते जिसकी देख रेख में----(बालक का नाम) क बाल कल्याण परिषद् :

व बालक न्यायालय-----द्वारा रखने के श्रादेश दिए गए हैं हमें राशि का एक प्रतिभू दो प्रतिभू सहित बन्ध-पत निष्पादन करने के निदेश दिए एए हैं। में एतद्द्वारा उक्त----मेरी देख-रेख में रखने पर भ्रपने ग्राप को बाध्य करता हूं मैने उक्त-उचित रूप में देखभाल रखनी होगी श्रीर में श्रागें उनत----ग्रन्छे न्यवहार हेतु उत्तरदायी होने के लिये ग्रीर निम्नलिखित शतौ होती है का पालन करने के लिए ग्रपने ग्राप को बाध्य करता हं :--

(1) कि मैं परिवीक्षा ग्रिधिकारी की परिषद् के माध्यम से लिखित रूप में सूचना दिए बिना अपना निवास स्थान नहीं बदलू ना।

(2) कि मैं उक्त — को परिषद् व न्यायालये की लिखित पूर्वानुमति प्राप्त किए बिना परिषद् व न्यायालय के क्षेत्राधिकार से बाहर नहीं ले जाऊंगा।

(3) जब कि परिस्थितियां मेरे वश से बाहिर न हो जायें मैं—— को नियमित रूप से स्कूल को परिषद् व न्यायालय द्वारा अनुमोदित कार्य करने के खिये भेजूंगा।

का स्थान उपयुक्त हेतु प्रतिभूति व प्रतिभूतियों के रूप में न्होिषत करते हैं।

बन्ध पत्र निष्पादित करने बाले व्यक्ति का नाम

कि वह उन सभी बातों को करेगा और उनका पालन करेगा जिनका उसका करने और पालन करने की प्रतिज्ञा कर रखी हैं और इसकी किसी चूक पर मैं/या हम एतद्द्वारा संयुक्त रूप में या पृथक रूप में--रुपय की राणि सरकार को जब्त करने हेतु बाध्य करता हूं या करते हैं।

—— दिन को —— इस तिथि — को (——— की उपस्थिति में) जहां प्रतिभूति सहित बन्ध पत्र निष्पादन किया जाना है।

(4) जब तक कि परिस्थितियां मेरे वश के बाहर म हो जायें में ----को नियमित रूप से उपस्थिति केन्द्र पर भेजूंगा।

(5) भगर-----दुर्ववहार करेगा या मेरे ग्रारक्षण से भागेगा तो मैं इसकी सूचना तुरन्त परिवीक्षा ग्रधिकारी के माध्यम से परिषद् न न्यायालय को भेजूंगा

(6) जब बांछित होगा मैं-----परिषद्/ग्रदालत के समक्ष पेश करूगा।

(7) मैं परिवीक्षा ग्रधिकारी को प्रयंवेक्षण के कर्तव्यों को कार्या-न्वित करने हेतु हर सम्भव सहायता दूंगा।

(9)

(10)

(11) इन में किसी की चूक करने पर मैं सरकार द्वारा-की राधि जन्त करने के लिये बाध्य करता हूं।

<del>ं</del>—दिन को इस तिथि——

हस्ताक्षरित ।

. "41

काट दीजिए जहां पर कोई प्रतिभूति अपेक्षित नहीं है।

यदि बालक/बालिका स्कूल जाने बाला है तो रखा जाना है। म्रतिरिक्त गर्ते यदि कोई हों, परिषद् व स्थायालय द्वारा उचित रूप में क्रमांकित करके दर्ज की जायेंगी।

राजपत्न, हिमाचल प्रदेश, 26 फरवरी,
प्रपन्न $\mathbf{I}_{\mathbf{X}}$
बाल द्वारा जिसे हिमाचल प्रदेश बालक श्रविनियम, 1979 की धारा 17 के श्रवीन, रिश्तेदार श्रयवा उचित व्यक्ति के पास उसके स्सामान्य निवास स्थान पर भेजा जाना है बन्ध पन्न हस्ताक्षरित किया जाना है
यतः निर्देशे क्यां कि
बालक प्रधितियम, 1979 की धारा 36 के अधीन काल न्यायालय —————————————————————————————————
(1) में एतद्द्वारा निम्निलिखित के बाध्य करता हूं कि——— भ्रविधि के दौरान में प्रायः गांव/कस्बा/जिला को नहीं छोडूगा जिसके लिए मुझे भेजा है और में हिमाचल प्रदेश राज्य को वापिस  → नहीं भ्राऊंगा भौर न ही परिषद् व न्यायालय की पूर्व अनुज्ञा के बिना जक्त जिले के बाहर किसी स्थान पर जाऊगा।
(2) उक्त अवधि के दौरान मैं गांव, व उक्त जिले में जिसके लिए मुझे भेजा गया है कार्य करूंगा व स्कून में उपस्थित हूंगा। (3) उक्त जिला में किसी अन्य स्थान पर कार्य करने व स्कूल में उपस्थित होने की स्थिति में मैं परिषद् व न्यायालय को अपने निवास स्थान के सामान्य स्थान से अवगत करूंगा।
(4) मैं अपना व्यवहार ठीक रखूंगा और इस बन्ध पत्न में निर्धारित शर्तों का और जो मेरे से स्वीकार की गई है किसी मी स्थिति में उल्लंघन नहीं करूंगा। (54) कि ग्रादेश में विनिर्दिष्ट ग्रविध के दौरान विशेष रूप में मैं
निम्निलिखत गर्तों का अनुपालन करूंगा:  (क) में अपने रिश्तेदार तथा उपयुक्त व्यक्ति जिसके  पास आदेश पत्र के अनुसार मुझे भेजा गया है में उस  द्वारा समय-समय पर दिए गए निदेशों का पालन करूंगा  श्रीर उनका नेतृत्व और सहायता स्वीकार करूंगा।  (ख) मुझे जिस भी घर, स्कूल या अन्य स्थान जहां कि मुझे
भेजा गया है से नहीं भागूंगा ।  (ग) मैं ईमानदारी और श्रान्तिमय ढंग से रहूंगा और ईमान- दारी से जीविका कमाऊंगा व नियमित रूप से स्कूल में उपस्थित हूंगा और प्राधिकारियों की ग्राज्ञा का पालन करूंगा और रिश्तेदार और उपयुक्त व्यक्ति जिस के पास मुझे भेजा है की ग्रनुज्ञा के बिना, नियोजन व स्कूल को नहीं बदलुंगा ।
(ঘ) (ফ) (ব) (ত)
(ज) (6) उक्त विनिर्दिष्ट शर्तों में से किसी भी गर्त के अनुपालन करने में चूक करने पर मैं, सक्षम प्राधिकारी के समक्ष पुनः उपस्थिति पर ऐसे ब्रादेश को प्राप्त करूगा जैसा कि सक्षम प्राधिकारी उचित समझे।
1% के
प्रपत्न~X
[नियम 41 का उप नियम (2) देखिए]
उस व्यक्ति द्वारा जिसकी देखभाल में बाल को प्रपने जन्म स्थान को भेजा जाना है, वचन दिया जाता है में निवासी (पूरा विवरण दिया जाना है जैसे गांव/कस्बा/जिला राज्य) एतद्बारा घोषित करता हूं कि में जिसकी भायु. है की बाल कल्याण परिषद्/ बालक न्यायालय/दण्डाधिकारी
ग्रादेशों के ग्रधीन निम्निलिखित निर्बन्धनों ग्रीर शर्तों के ग्रध्याधीन, संरक्षण में रखन के लिए इच्छुक हूं :

हस्ताक्षर/  1. 2.  प्रपत-XI  [नियम 49 (क) देखि ए  हिमाचल प्रदेश बालक प्रधिनियम, 1979 की धारा 19 के खण्ड  (क) के प्रधीन बाल को निरस्तारों की उसके माता-पिना प्रथवा  सरक्षक को मूचना  यतः वालक/बालिका का नाम पुत्र/सपुती प्राय  यतः वालक/बालिका का नाम पुत्र/सपुती को धारा  के प्रधीन निरस्तार किया गणा है ताया से प्रक्षण गृह  में रखा गया है। उसे बालक न्यायालय के समक्ष दिनांक को पेश किया जाएगा।  एतद द्वारा संरक्षक तथा माता/पिता का नाम श्री निवासी  को बालक न्यायालय में दिनांक  को समय पर उपस्थित होने का निदेश दिया जाता है।  प्रपत-XII  (नियम 49 देखिए)  हिमाचल प्रदेश बालक प्रधिनियम 1979, की धारा 19 के खण्ड (ख)  के प्रधीन बाल की गिरफ्तारों की पत्रिवीक्षा प्रधिकारों को सूचना  बाल का नाम प्रायु  पुत्र/पुत्री  निवासी  वेखधाल करने वाले का नाम विरस्तारों को तिथि प्रीर समय  विरस्तारों को स्थान  हारा जिसके प्रधीन विरस्तारों की गई है  मामले का संक्षिप्त विवरण  यदि प्रेक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम  तिथि  पुलिस स्टेणन	(1) जब तक बह (बालक व बालिका) मेरी देख माल में रहेगा/ रहेगी उसके करूपाण और शिक्षा के लिए पूरा प्रयास करूपा। प्रोर उसके भरण पोषण के तिए उचित व्यवस्था करूपा। (2) यदि उसका (बालक/बालिका) ग्राचरण संतोषजनक नहीं पाया जाता है में तुरन्त सक्षम प्राधिकारी को सूचित करूगा। (3) उसकी (बालक/बालिका) बीमारी पर व निकटतम ग्रस्पताल में उचित चिकित्सा करवाउना। (4) उसे सक्षम प्राधिकारी के समक्ष (बालक व बालिका) जब ग्रपेक्षित हो पेश करने का वचन देता हूं।  19. के दिन इस तिथि को सक्षम करनाक्षर ग्रीर पता:
प्रपत-XI  [तियम 49 (क) देखि ए  हिमाचल प्रदेश बालक प्रधितियम, 1979 की धारा 19 के खण्ड  (क) के प्रधीत बाल को निरफ्तारों की उसके माता-पिता प्रथवा  मरक्षक को मूचना  यतः वालक/बालिका का नाम पुत्र/सपुती प्राय के प्रधीत निरफ्तार किया गणा है त्या उसे प्रक्षण गृह  के प्रधीत निरफ्तार किया गणा है त्या उसे प्रक्षण गृह  से रखा गया है। उसे बालक न्यायालय के समक्ष दिनांक को पेश किया जीएगा।  एतद द्वारा संरक्षक तथा माता/पिता का नाम श्री को बालक न्यायालय में दिनांक को बालक न्यायालय में दिनांक को समय पर उपस्थित होने का निदेश दिया जाता है।  प्रयत—XII  (नियम 49 देखिए)  हिमाचल प्रदेश बालक प्रधितियम 1979, की धारा 19 के खण्ड (ख) के प्रधीत बाल की गिरफ्तारों की पश्चिता प्रधिकारों को सूचना  बाल का नाम प्राय पुत्र/पुत्री निवासी देखभाल करने वाले का नाम गिरफ्तारों का स्थान बारा जिसके प्रधीत पिरफ्तारों की गई है मामले का संक्षिप्त विवरण  यदि प्रक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम तिथि पुलिस स्टेणन  प्रक्षा (हस्ताक्षर)/- प्रभारों अधिकारों, पुलिस स्टेणन	
[तियम 49 (क) देखिए हिमाचल प्रदेश बालक ग्रिशितियम, 1979 की धारा 19 के खण्ड (क) के प्रधीन बाल को निरफ्तारी की उसके माता-पिना ग्रथवा सरक्षक को मुजना  यतः वालक/बालिका का नाम पुत्र/सपुती ग्री प्रधान प्रधान प्रधान प्रधान को धारा के प्रधीन गिरफ्तार किया गर्था है तथा उसे प्रक्षण गृहः में रखा गया है। उसे बालक न्यायालय के समक्ष दिनांक को पेश किया जाएगा।  एतद द्वारा संरक्षक तथा माता/पिता का नाम श्री निवासी को बालक न्यायालय में दिनांक समय पर उपस्थित होने का निदेश दिया जाता है।  (हस्ताक्षर)/- प्रभारी अधिकारी, पुलिस स्टेशन।  प्रयत—XII  (नियम 49 देखिए)  हिमाचल प्रदेश बालक अधिनियम 1979, की धारा 19 के खण्ड (ख) के अधीन बाल की गिरफ्तारी की परिवीक्षा अधिकारी को सूचना  बाल का नाम श्रायु पुत्र/पुत्री निवासी देखभाल करने वाले का नाम गिरफ्तारी की तिथि और समय गिरफ्तारी का स्थान बारा जिसके प्रधीन गिरफ्तारी की गई है मामले का सीक्षप्त विवरण यदि प्रेक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम तिथि पुलिस स्टेशन	
हिमाचल प्रदेश बालक प्रधिनियम, 1979 की धारा 19 के खण्ड (क) के प्रधीन बाल को गिरफ्तारों की उसके माता-पिना प्रथवा सरक्षक को मुचना  यतः वालक/बालिका का नाम पुत्र/सपुर्वी प्रथा को घारा के प्रधीन गिरफ्तार किया गया है तथा उसे प्रक्षण गृह में रखा गया है। उसे बालक न्यायालय के समक्ष दिनांक को पेश किया जाएगा।  एतद्द्वारा सरक्षक तथा माता/पिता का नाम श्री जिसका न्यायालय में दिनांक को बालक न्यायालय में दिनांक को समय पर उपस्थित होने का निदेश दिया जाता है।  प्रथानी प्रधिकारी, पुलिस स्टेशन।  प्रयत—XII  (नियम 49 देखिए)  हिमाचल प्रदेश बालक प्रधिनियम 1979, की धारा 19 के खण्ड (ख) के प्रधीन बाल की गिरफ्तारों की परिवीक्षा प्रधिकारों को सूचना  बाल का नाम श्रायु पुत्र/पुत्नी निवासी देखभाल करने वाले का नाम गिरफ्तारों की तिथि और समय गिरफ्तारों का स्थान द्वारा जिसके प्रधीन गिरफ्तारों की गई है मामले का संक्षिप्त विवरण पदि प्रक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम तिथि गुलिस स्टेशन  प्रक्षक (हस्ताक्षर)/- प्रभारों अधिकारों, पुलिस स्टशन	प्रपद्म—XI
(क) के प्रधीन बाल को निरफ्तारों की उसके माता-पिता प्रथवा सरक्षक को मूचना  यतः वालक/बालिका का नाम पुत्र/सपुती प्राप्त को धारा के प्रधीन गिरफ्तार किया गया है तथा उसे प्रक्षण गृह में रखा गया है। उसे बालक न्यायालय के समक्ष दिनांक को पेण किया जाएगा।  एतद द्वारा सरक्षक तथा माता/पिता का नाम श्री निवासी को बालक न्यायालय में दिनांक को समय पर उपस्थित होने का निदेश दिया जाता है।  (हस्ताक्षर)/- प्रभारो प्रधिकारो, पुलिस स्टेशन।  प्रयत—XII  (नियम 49 देखिए)  हिमाचल प्रदेश दालक श्राधिनयम 1979, की धारा 19 के खण्ड (ख) के प्रधीन दाल की गिरफ्तारों की प्रियेक्षा स्रधिकारों को सूचना  बाल का नाम श्रायु पुत्र/पुती निवासी देखभाल करने वाले का नाम गिरफ्तारों की तिथि और समय  गिरफ्तारों को तिथि और समय  गिरफ्तारों का स्थान द्वारा जिसके प्रधीन गिरफ्तारों की गई है मामले का संक्षिप्त विवरण  यदि प्रक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम  तिथि गुलिस स्टेशन  (हस्ताक्षर)/- प्रभारों अधिकारों, पुलिस स्टशन	{नियम 49 (क) देखिए
पुत्र/सपुती को घारा के प्रधीन गिरफ्तार किया गया है तथा उसे प्रक्षण गृह में रखा गया है। उसे बालक न्यायालय के समक्ष दिनांक को पेण किया जाएगा।  एतद द्वारा सरक्षक तथा माता/पिता का नाम श्री निवामी को बालक न्यायालय में दिनांक को समय पर उपस्थित होने का निदेश दिया जाता है।  (हस्ताक्षर)/- प्रभारी ग्रिष्ठकारी, पुलिस स्टेशन।  प्रयद—XII  (नियम 49 देखिए)  हिमाचल प्रदेश बालक ग्रिष्ठितयम 1979, की घारा 19 के खण्ड (ख) के ग्रिष्ठीत बाल की गिरफ्तारी की पिन्वीक्षा ग्रिष्ठकारी को सूचना  बाल का नाम ग्रायु पुत्र/पुत्री निवासी देखभाल करने वाले का नाम ग्रिरफ्तारी की तिथि ग्रीर समय गिरफ्तारी की तिथि ग्रीर समय गिरफ्तारी का स्थान द्वारा जिसके ग्रिधीन गिरफ्तारी की गई है मामले का संक्षिप्त विवरण यदि प्रेक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम तिथि पुलिस स्टेशन  (हस्ताक्षर)/- प्रभारी ग्रिष्ठकारी, पुलिस स्टेशन	(क) के ग्रधीन दाल को गिरफ्तारी की उसके माता-पिता ग्रथवा
समय पर उपस्थित होने का निदेश दिया जाता है।  (हस्ताक्षर)/- प्रश्नारी अधिकारी, पुलिस स्टेशन।  ———————————————————————————————————	पुत्र/सपुत्री ग्राप्य निवासी को घारा के ग्रघीन गिरफ्तार किया गया है तथा उसे प्रक्षण गृह में रखा गया है। उसे बालक न्यायालय के समक्ष
प्रथत—XII  (नियम 49 देखिए)  हिमाचल प्रदेश बालक प्रधिनियम 1979, की धारा 19 के खण्ड (ख) के प्रधीन बाल की गिरफ्तारी की पिर्विक्षा प्रधिकारी को सूचना  बाल का नाम प्रायु पुत/पुत्नी  निवासी देखशाल करने वाले का नाम गिरफ्तारी की तिथि प्रौर समय गिरफ्तारी का स्थान द्वारा जिसके प्रधीन गिरफ्तारी की गई है मामले का संक्षिप्त विवरण  यदि प्रेक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम  तिथि पुलिस स्टेशन  (हस्ताक्षर)/- प्रभारी अधिकारी, पुलिस स्टशन	- ・・・・・・・・・・・・・
(नियम 49 देखिए)  हिमाचल प्रदेश बालक अधिनियम 1979, की धारा19 के खण्ड (ख) के अधीन बाल की गिरफ्तारी की पिन्वीक्षा अधिकारी को सूचना  बाल का नाम आयु पुत/पुती निवासी देखभाल करने वाले का नाम गिरफ्तारी की तिथि और समय गिरफ्तारी का स्थान द्वारा जिसके अधीन गिरफ्तारी की गई है मामले का संक्षिप्त विवरण यदि प्रेक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम  तिथि पुलिस स्टेशन  (हस्ताक्षर)/- प्रभारी अधिकारी, पुलिस स्टशन	(हस्ताक्षर)/- प्रश्नारी अधिकारी, पुलिस स्टेशन ।
हिमाचल प्रदेश बालक प्रधिनियम 1979, की धारा 19 के खण्ड (ख) के प्रधीन बाल की गिरफ्तारी की पिरण्वीक्षा प्रधिकारी को सूचना बाल का नाम प्रायु पुत/पुत्री	 яча–XII
के अधीन वाल की गिरफ्तारी की पिंग्वीक्षा अधिकारी का सूचना बाल का नाम आयु पुत/पुती निवासी देखभाल करने वाले का नाम गिरफ्तारी की तिथि और समय गिरफ्तारी का स्थान द्वारा जिसके अधीन गिरफ्तारी की गई है मामले का संक्षिप्त विवरण यदि प्रेक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम तिथि पुलिस स्टेशन प्रेक्षक (हस्ताक्षर)/- प्रभारी अधिकारी, पुलिस स्टशन	(नियम ४९-देखिए)
प्रायु पुत/पुती निवासी देखभाल करने वाले का नाम गिरपतारी की तिथि और समय गिरपतारी का स्थान द्वारा जिसके प्रधीन गिरपतारी की गई है मामले का संक्षिप्त विवरण यदि प्रेक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम तिथि पुलिस स्टेशन (हस्ताक्षर)/- प्रभारी अधिकारी, पुलिस स्टशन	हिमाचल प्रदेश बालक अधिनियम 1979, की धारा 19 के खण्ड (ख) के अधीन बाल की गिरफ्तारी की पिन्वीक्षा अधिकारी को सूचना
देखशाल करने वाले का नाम  गिरफ्तारी की तिथि और समय  गिरफ्तारी का स्थान  द्वारा जिसके प्रधीन गिरफ्तारी की गई है  मामले का संक्षिप्त विवरण  यदि प्रेक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम  तिथि  पुलिस स्टेशन  (हस्ताक्षर)/- प्रभारी अधिकारी, पुलिस स्टशन	र श्रायु · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
मामले का संक्षिप्त विवरण यदि प्रेक्षण गृह में रखा गया हो तो प्रेक्षण गृह का नाम तिथि पुलिस स्टेशन प्रेक्षक (हस्ताक्षर)/- प्रभारी अधिकारी, पुलिस स्टेशन	देखभाल करने वाले का नाम । गिरफ्तारी की तिथि और समय गिरफ्तारी का स्थान
ा पुलिस स्टेशन : / प्रेक्षक (हस्ताक्षर)/- ा, प्रभारी मधिकारी, पुलिस स्टशन	मामले का मंक्षिप्त विवरण
, (हराजर))- ा, प्रभारो म्रधिकारी, पुलिस स्टबान	
, (हराजर))- ा, प्रभारो म्रधिकारी, पुलिस स्टबान	इ./ प्रेक्षक इ./ प्रेक्षक
	् (हर्सावर))- न, प्रभारी प्रधिकारी, पुलिस स्टशन

प्रपत्न—XIII	जहां पर एतद्द्वारा म्रादेश दिया जाता है कि उक्त :
(नियम 49 देखिए)	को प्रविधि के लिए दिनांक 19 के दिन दिन दिनांक को बालगृह द स्पेशल स्कूल
हिमाचल प्रदेश वालक म्रधिनियम, 1979 की घारा 16 की उप-धारा (3) ग्रथवा धारा 21 की उप-धारा (2) के परन्तुक के प्रयोजनार्थ परिवीक्षा म्रधिकारी की रिपोर्ट	मों भेज दिया जाए।  मोहर।  (इस्ताक्षर)
परिवीक्षा श्रिष्ठकारी जिसके पर्यवेक्षण में दाल को रखा गया है का नाम	(६स्ताजर्) श्रध्यक्ष, वाल कल्याण परिषद,
ग्रादेश मंख्या ग्रौर तिथि जिसके ग्रधीन दाल को पर्यवेक्षण में रखा गया है	मुख्य दण्डाधिकारी, <b>बा</b> लक, न्यायालय ।
मक्षम प्राधिकारी जिसके श्रादेशानुसार बाल को प्रयवेक्षण में रखा गया है	प्रपत्त—XV (नियम 49 देखिए)
पयंवेक्षण में रखे गए दाल का नाम	हिमाचल प्रदेश बालक अधिनियम, 1979 की धारा 14 की उप-धारा (2) के अधीन बाल को माता-पिता अथवा संरक्षक से हटाने हेतु आदेश
क्या सक्षम प्राधिकारी द्वारा प्रधिरोपित शर्तों में से किसी शर्त का उल्लंघन हुआ है यदि ऐसा हो तो वह शर्त जिसका उल्लंघन हुआ है, दी जाती है	व्यक्ति का नाम एवं पद जिसने ग्रादेश निष्पादन करना है। यतः (बाल का नाम) निवासी जो
भ्या बाल सच्चरित व्यवहार का रहा है यदि ऐसा हो तो ग्राधार प्रम्तुत किए जाएं	के वास्तविक संरक्षण अथवा नियन्त्रण में है स्पष्टतया उपेक्षित बाल है और हिमाचल प्रदेश बालक प्रधिनियम, 1979 के उनबन्धों के अधीन उसके साथ व्यवहार करना अपेक्षित है।
क्या बाल निर्धामत रूप से स्कूल में प्रस्तुत नहीं हो रहा है  यदि बाल नियोजित हो, तो क्या वह ग्रपने नियोजन स्थान पर नियमित रूप में उपस्थित नहीं हो रहा है  क्या बाल उपस्थित केन्द्र में उपस्थित नहीं हो रहा है	ग्रीर यतः विश्वास करने का कारण है कि उक्त बाल को से हटाया जाना ग्रथवा छिपाया जाना संभाव्य है।  उक्त बाल को के संरक्षण ग्रथवा नियक्तण से हटाकर प्रेक्षण गृह को ले जाने के ग्रापको एतद्द्वारा निदेश दिया जाता है।
कोई भी प्रन्य कारण जिसके लिए वाल को बालक गृह व स्पैशल स्कूल में भेजने की सिफारिश की जाती है।	19कें
दिनांक · · · · · · · · · (हस्ताक्षर)/- (हस्ताक्षर)/- परिवोक्षा श्रीधकारी ।	श्रध्यक्ष, बाल कल्याण परिषट्।
प्रपत-XIV	प्रपन्न XVI (नियम 49 देखिए)
(नियम 49 देखिए)  हिमाचन प्रदेश बालक श्रधिनियम, 1979 की धारा 21 की उप- धारा (2) ग्रयबा धारा 16 की उप-धारा (3) के परन्तुक के श्रधीन, बाल को बानक गृह व स्पेशल स्कूल में भेजने वाले सक्षम प्राधिकारी का श्रादेश	हिमाचल प्रदेश बालक भ्रधिनियम, 1979 की धारा 14की उप- धारा (2) के भ्रधीन कारण बताओं नोटिस संख्या——— बाल कल्याण परिषद
मक्षम प्राधिकारी  यतः पुत/पुती श्रीः  जिन्नासी (बालक/बालिका का नाम)  का हिमाचल प्रदेण बालक प्रधिनियम, 1979 की धाराः  प्राधीन प्रादेण संख्या द्वाराः  दिनांक को निन्नासी  के प्रधीन देखमाल में रखा गया था और श्रागे धाराः  के श्रधीन ग्रादेण संख्या को द्वारा दिनांक  को प्रितिक्षा ग्राह्मिकारी के पर्यवेक्षण में रखा गया था।	यतः हिमाचल प्रदेश बालक श्रधिनियम की धारा 14 की उप- धारा (1) के प्रधीन————————————————————————————————————
श्रीर यतः उक्त परिवीक्षा श्रधिकारी की रिपोर्ट पर श्रीर ग्रावश्यक जांच पड़ताल करन पर, हिमाचल प्रदेश बालक ग्रधिनियम, 1979 की धारा के ग्रधीन उक्त बाल से व्यवहार करना ममीचीन पाया जाता है।	जन्त को 19 के (माता पिता व संरक्षक का नाम) — विन के बाल कल्याण परि- दिन को समक्ष पेश करने हेतु श्रीर यह कारण बताने के लिए कि क्यों न उक्त — (बाल का नाम) के साथ हिमाचल

	207
ग बालक प्रधिनियम, 1979 के उपबन्धों के प्रधीन उपेक्षित । के रूप में व्यवहार किया जामे, एतद्द्वारा बुलाया जाता है।	वास्तविक संरक्षण श्रयवा नियन्त्रण के श्रधीन है स्पष्टतया उपेक्षित बाल है श्रीर हिमाचल प्रदेश श्रविनियम, 1979 के उपबन्धों के श्रवीन
विनाक——विनाक——	बाल के साथ व्यवहार करना अपेक्षित है। और प्रतः मुझे बताया जाता है कि उक्त बाल को से हटाया जाना अथवा छिपाया जाना अपेक्षित है।
त्रध्यक्ष,	उनतं को मैं तलामी करने के लिए
्रेजन कल्याण परिषद्। प्रपन्न xvii (नियम 49 देखिए)	एतद्द्वारा प्राधिकृत किया जाता है और तलाझी करनी अपेक्षित है और यदि पाया जाता है तो उसे तुरन्त बाल कल्याण परिषद् के समक्ष इस बारण्ट को पृष्टांकन (बालक/बालिका) सहित प्रमाणित करते
हिमाचल प्रदेश बालक अधिनियम की धारा 14 की उप-धारा (2) के श्रधीन जारी किए जाने बाला तलाशी वारण्ट	हुए कि उसने क्या किया है इसके निष्पादन पर तुरन्त प्रस्तुत करने के लिये प्राधिकृत किया जाता है और उससे ऐसी अपेक्षा की जाती है ।
केस संख्या——— क	19——के———दिन को———दिनांक को बाल कल्याण परिषद् के हस्ताक्षर और मोहर के भ्रधीन जारी किया गया।
7	ग्रध्यक्ष, मोहर वाल कत्याण परिषद्।
ग्रिधिकारी का नाम ग्रीर पद जिसने नारन्ट निष्पादन करना है)	ग्रमर नाय विद्यार्थी,

श्रृत्य

## भाग 5 - वैयक्तिक अधिसूचनाएं और विज्ञापन

In the Court of Shri A. L. Vaidya, Additional District Judge, Shimla, Kinnaur and Bilaspur districts at Shimla Himachal Pradesh

> CMA No. 16-S/14 of 1981 CMA No. 40-S/14 of 82

Chula Dutt s/o Shri Bhag Chand s/o Shri Sobha Dev, r/Q village Thaili, Pargana Mastgarh, Tehsil Rampur, District Shimla

Versus

Roshan Lal and 5 others

.. Respendents.

To

Smt. Thompi d/o Shri Bhag Chand, village Chaili Chakri, Pargana Baghi Mastgarh, Tehsil Rampur Bushahr, District Shimla, Himachal Pradesh.

Whereas in the above noted appeal it has been proved to the satisfaction of this court that the above noted respondent Smt. Thompi cannot be served in ordinary course of service. Notice issued against her have been received back unserved.

Hence this proclamation under Order 5, Rule 20, C.P.C. is issued against her requiring her to appear personally or through some authorised agent on 4-3-1983 at 10.00 A. M. failing which ex parte proceedings shall be taken against her.

Given under my hand and the seal of this court this 14th day of January, 1983.

A. L. VAIDYA,

A. L. VAIDYA, Additional District Judge, Shimla (H.P.).

In the Court of Shri R. L. Sharma, Senior Sub-Judge, Una, Himachal Pradesh

Case No. 355/82

-Ranjit Singh

Versus

Nikka Ram

Vs: Nikka Ram s/o Shri Gopala Ram, caste Dhiman, r/o village Goharchhan, Tehsil Amb, District Una, Himachal Pradesh

Whereas in the above noted case summons to Nikka Ram defendant were issued by this court so many times but the same have been received back unexecuted with the report that his whereabouts are not known. Now it has been proved to the satisfaction of this court that service upon the defendant cannot be made by an ordinary course of service. Hence this proclamation under Order 5, Rule 20, C.P.C. is issued against the above-mentioned defendant to appear in this court on 10-3-83 at 10 A.M. personally, through an authorised agent or pleader to defend his case failing which ex parte proceedings will be taken against him.

Given under my hand and seal of the court today the 8th day of February, 1983.

Seal.

R. L. SHARMA, Senior Sub-Judge, Una district, Una, H. P.

बग्नदालत श्री सुन्दरसिंह ठाकुर, तहसीलदार बग्नस्तयार सहायक कुलैक्टर, प्रथम श्रेणी, तहसील व जिला हमीरपुर

विषय:---तसदोक इन्तकाल नं 328 घान्या टीका कर्कडियार तप्पा लगुवालती।

मुन्दर्जा उनदान बाला में पाया गया है कि श्री प्रकाश चन्द पुत्र किशन सिंह, वासी कर्कडियार तथा लगवालती श्ररसा बीस साल से लापता है। इसका इन्तकाल बरासत इन्तकाल नं0 328 टीका क्रकडियार तथा लगवालती इन्तकाल बरासत श्रीमती छुनकी बालदा प्रकाश चन्द पुत्र किशन सिंह के नाम दर्ज भीर जर फैसला है। श्री प्रकाश चन्द का इस श्ररसा में कोई पत्र नहीं श्राया है। जिस से जाहिर होता है कि उसकी मृत्यु हो चुकी है। श्रतः इश्तहार हजा मुशन्न किया जाता है कि यदि किसी को प्रकाश चन्द के बारे में कोई पता हो तो यह तसदीक इन्तकाल में कोई उजर उजरात पेश होवे तो बह इशयत इश्तहार (Gazette) हजा के श्रन्दर 30 दिन श्रसालतन या वकालतन हाजिर श्रदालत श्राकर पेश कर सकता है। इसके बाद कोई उजर काबिक समात न होगा श्रीर इन्तकाल बहक वारसान तसदीक कर दिया जावेगा।

आज ब तारीख 3-2-83 मोहर श्रदालत व मेरे हस्ताक्षर से जारी किया

मोहर।

सुन्दर सिंह ठाकुर, सहायक समाहर्ता, प्रथम श्रेणी, तहसील व ज़िला हमीरपुर। बग्रदालत श्री मुन्दर सिंह ठाकुर, तहसीलदार बग्रस्तयार सहायक कृतैक्टर, प्रथम श्रेणी, तहसील व जिला हमीरपुर

क्विया — तसरीक इस्तकाल नं 0 327 वाक्याटीका कक्रडियार तथा नगवालती।

मुन्दर्जा उनवान बाला में पाया गया है कि श्री मेहर सिंह पुत्र किशन सिंह, बासी ककडियार, तप्पा लगबालती घरसा 20 साल से लापता है, इसका इन्तकाल नं 0 327 टीका ककडियार तथा लगबालती इन्तकाल बारमान श्रीमती छुनकी वालदा मेहर सिंह पुत्र किशन सिंह के नाम दर्ज और जेर फैमला है। श्री मेहर सिंह का इस अरसा में कोई पत्र नहीं श्राथा है। जिसमे जाहिर होता है कि उसकी मृत्यु हो चुकी है। श्रत: इश्तहार हजा मृजव किया जाता है कि यदि किसी को मेहर सिंह के बारे में कोई पता हो तो यह तसदीक इन्तकाल में कोई उजर उजरात पेश होवे तो वह इशयत इश्तहार हजा के ग्रन्टर 30 दिन ग्रसालतन या बकालतन हाजिर ग्रदालत श्राकर पेश कर सकता है। इसके बाद कोई उजर काबिल समात न होगा भीर इन्तकाल बहक वारसान तसदीक कर दिया जावेगा।

भाज तारीख 3-2-83 मोहर भ्रदालत व मेरे हस्तीक्षर से जारी किया गया।

मोहर।

सुन्दरसिंह ठाकुर, सहायक समाहर्ता, प्रथम श्रेणी, तहसील व जिला हमीरपुर।

बच्चदालत जनाव नायव-तहसीलदार साहिब एवं सहायक समाहर्ता. द्वितीय श्रेणी. सब-तहसील जर्यासहपुर, पालमपुर, कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश)

मुक्ट्माः दुनी चन्द वनाम ईशरी देवी भ्रादि। दरख्वास्तः बगर्जं तकसीम भ्रराजी खाता नं 0 7, खतौनी नं 0 32. खमग नं 0 410, 479/1, 558, 1028 किता—4, वकदर 0—05—07 है0 स्थित महाल बार, मौजा वरड़ाम, सब-तहसील जय सिहपुर।

#### नोटिस बनाम

 श्रीमती ईगरी देवी विधवा, 2. श्रौकार सिंह, 3. मिलाप चन्द, 4. प्रताप चन्द, 5. जात चन्द सुपुत्र श्री श्रमीन चन्द, 6. कुमारी फूलां, देवी, 7. श्रीमती कलाणा देवी सुपुत्री श्री श्रमीन चन्द पुत्र धियान सिंह, निवासत वार, मौजा वरहाम, जयसिंहपुर।

वपुक्टमा मुन्दरका उनवान वाला में फ्रीक दीम की समन कई बार जारी हुए हैं उनकी तामील माधारण तरीका से नहीं हो रही है। मन उनकी वजरिया प्रखबार इश्तहार मुचित किया जाता है कि वे दिनांक 5-4-1983 की प्रात: 10 वजे प्रमालतन या वकालतन वमकाम सव-तहमोल जर्गसिंहपुर में हाजर हो कि रिवी मुक्टमा करें। प्रत्या गैरहाजरी की सूरत में उनके खिलाफ अन्त का कार्यवाही प्रमान में लाई जावेगी। निधि मुकरें र के पश्चात् विकिक्त का गितराज नहीं सुन। जावेगा।

ग्राज हमारे हस्ताक्षर व मोहर भदालत से जारी हुन्ना।

हस्ताझारित/-

मोहर ।

नायब-तहसीलदार एवं सहायक समाहर्ता, दितीय श्रेणी, जयसिंहपुर ।

बप्रदालत जनाब नायब-नहमीलदार माहिब एवं महायक समाहर्ता, दिनीय श्रेणी, मब-तहमीन जयसिंहपुर, पालमपुर, कांगड़ा, हि ०४.० बमु रहुमा:—

प्रित्म बन्द बनाम तान्त्र बन्द ग्रादि । दरस्वास्तः बगर्ज तरुसीम ग्रराजी खाता नं 0 3 खतीनी नं 0 6, खसरा किता 17 वश्दर 2-40-96 है 0 स्थित महाल दुगं, मौजा बद्धपर, तहसील जपिसहपुर ।

नोटिय बनाम:---

(1) नानक चन्द, 2. राजेन्द्र चन्द, 3. श्रीमती कौणल्य। देवी विश्रवा दीवन्त चन्द, 4. प्रकाण चन्द, 5. घाल्मा राम पुत

राम सिंह, 6. बैनी चन्द, 7. मोहन सिंह, 8. सलोचनी देवी, 9. धौँकार चन्द पुत्र दर्शन चन्द, 10. घोर चन्द, 11, मस्तक चन्द पुत्र शरद चन्द, 12. प्रमीन चन्द, 13. क्रपाल चन्द, 14 कल्याण चन्द, 15. प्रित्म चन्द, 16. कुमार चन्द, 17. माया देवी, 18% तारो देवी, 19. कला वती 20. भगवती. 21. गुलाम चन्द पुत्र काश्मीर पचन्द, 22. रसील सिंह, 23. किशन चन्द, 24. बन्शी राम 25. प्रमीन चन्द, 26. दीलू पुत्र मेन चन्द, 27. मान चन्द निवासी महाल दुग, मौजा चढ्यार, सब-तहसील जयसिंहपुर।

बमुकह्मा मृन्दरजा उनवानबाला में फीक दोयम को कई बार समन हो चुके हैं पर प्रासान तरोका से इतलाह नही हो रही है प्रतः बजरिया प्रखबार इक्तहार सूचित किया जाता है कि वे दिनांक 6-4-1983 को प्रातः 10 बजे प्रसालतन या वकालतन हाजर होकर बमकाम सब-तहसील जयसिंहपुर में पैरवो करें। गैरहाजरी की सूरत में यकतरफा कार्यवाही प्रमल में लाई जावेगी तिथि मुकरंर के बाद कोई उजर या ऐतराज नहीं सूना जावेगा।

इ उत्तर या एतराज नहां सुना जावगा ।

श्राजहमारे हस्ताक्षर व मोहर श्रदालत से जारी हुआ।

हस्ताक्षरित/-

मोहर।

नायब-तहसीलदार साहिब एवं सहायक समाहती, द्वितीय श्रेणी,

जयसिंहपुर ।

बग्नदालत जनाब नायब-तहसीलदार साहिब एवं सहायक समाहर्ता, द्वितीय श्रेणी, सब-तहसील जर्यासहपुर, पालमपुर, कांगड़ा हिमाचल प्रदेश

बमुक्दमा:—
प्रित्म चन्द बनाम नानक चनः भादि।
दरह्वास्त: वगर्ज तकसीम घराजी खाता नं 0 2, खतौना नं 0 3,
4 और 5 खसरा किता 41 बहदर 2-62-46 है0 स्थित र्रहाल
दुग, मौज। चढयार, पालमपुर।

नोटिस बनाम :—नानक चन्द, 2. राजेन्द्र चन्द पुत्र ठाकुर चन्द, 3. कौशल्या देवी विधवा दिवान चन्द, 4. प्रकाश चन्द, 5. भ्रात्मा राम पुत्र राम सिंह, 6. वैनी चन्द, 7. मोहन सिंह, 8. सलोचनी देवी, 9. ग्रोंकार चन्द, 10. प्रताप चन्द, 11. कौशल्या देवी, 12. प्रभी देवी पुत्री भ्राली चन्द, 13. काश्मीर चन्द, 14. मान चन्द, 15. रवी चन्द, 16. वैनी चन्द, 17. श्रकल चन्द, 18. मस्तक चन्द, 19. श्रमीन चन्द, 20. करपाल चन्द, 21. कल्याण चन्द, 22. प्रित्म चन्द पुत्र, 23-कुमार चन्द, 24. श्रीमती माया देवी, 25. श्रीमती सरी देवी, 26. पुत्री कलावती, 27. पुत्री भगवती देवी, 28. गुलाम चन्द, पुत्र काश्मीर चन्द, 29. रसील चन्द, 30. कुष्ण चन्द पुत्र, 31. बन्शी राम, 32. श्रमीन चन्द, 33. दीलू पुत्र मान चन्द, 34. मेन चन्द, निवासी महाल दूग, मौजा चढ़यार, पालमपुर, कागड़ा।

बमुकद्दमा मुन्दरजा उनवानबाला में फीक दोयम की साधारण तौर से इतलाह नही ही रही है प्रतः फीकदोम को बजरिया भवनार इम्तहार स्वित किया जाता है कि वे दिनांक 6-4-1983 को प्रातः 10 वजे प्रसालतन या वजालतन बमुकाम सब-तहसील जयसिहपुर में हाजर हो कर पैरवी मुकद्दमा करें गैर हाजरी की सूरत में यक्तरफा कार्यबाही प्रभल में लाई जावेगी। तिथि मुकरेंर के बाद कोई उजर या ऐतराज नहीं सुना जावेगा।

श्राज हमारे हस्ताक्षर व मोहर श्रदालत से जारी हुआ।

हस्ताक्षरित/-

मोहर।

नायब-तहसीलदार एवं सहायक समाहर्ता। द्वितीय श्रेणी, सब-तहसील जयसिंहपुर।

बग्रदालन जनाब नायब-नहंसीलदार साहिब एवं सहायक ममाहर्ता दिनीय श्रेणी, सब-तहसील जयसिहपुर, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश बमकदमा :—

परस राम वनाम रत्न चन्द ग्रादि दरस्वास्तः वगुजं तकसीम श्रराजी खाता नं 0 8, खतौनी नं 0 8

बामरा किता-16, बन्दर 0-55-03 है0 स्थित महाल भाटी सदरेहडू, मौजा लम्बा गांव, सब-तहसील जर्जासहपूर।

नोटस बनाम --रतन चन्द, 2. प्रित्म चन्द पुत्र 3. श्रीमती समान् विवी, 4 जोती अर्फ रणजीत सिंह पुत्र घपलिया, 5. मुरेन्द्र कुमार, 6. नरेन्द्र कुमार, 7. सुदर्गना कुमारी पुत्री, 8. प्रकाण देवी विधवा बन्गी, ्रीनिवासी भीटी सदरेहड़, मीजा लम्बा गांव, 9. बजिरा राम पूत्र उमदा. 10. बालन सिंह, 11. बलदेव राज, 12. कुमारी पवना, 13. कुमारी संबोगता पुत्री 14. मदन लाल, 15. श्रशोक कुमार, 16. पिकू, 17. कर्म सिंह, 18. गोंदा देशी विधवा धियान, 19. प्रभी विधवा सोहण् टीका साई, मौजा लम्बा गांव, 20 श्री मंगल पुत्र गुरदयाल, 21. श्री राम सिंह, 22 हिर सिंह, 23 केहर सिंह, 24 प्रधान सिंह, 25 जगरूप चन्द पुत्र शंकर, टीका मलाह, मौजा ठण्डोल, सब-तहसील जयसिंहपूर ।

ब रूगदमा मन्दरआ उनवानवाला में फीकदोयम को कई बार समन गरी हो चुके हैं पर उनकी तामीन प्रासान तरोका से नहीं हो रही है अतः ब गरिया प्रख्वार इष्तहार फीक दोयम को सूचित किया जाता है कि वे दिनांक 16-3-1983 को प्रातः 10 बजे प्रशालतन या वकालतन वमुकाम सब-तहमील जयसिंहपुर में हाजर होकर पैरवी मुकदमा करें। प्रत्यथा कार्यवाही यकतरका प्रयत में लाई जाबेगी। तिथि मुकरर के पश्चात् कोई उजर या एतराज नहीं मुना

श्राज हमारे हस्ताक्षर व मोहर श्रदलन से जारी हुन्ना।

हस्ताक्षरित, नायव तहसीलदार माहिब एवं सहायक समाहर्ता, द्वितीय श्रेणा, जयसिंहपूर ।

#### भाग 6--भारतीय राजपत इत्यादि में से पुनः प्रकाशन

### माग 7---मारतीय निर्वाचन आयोग (Election Commission of India) की वैधानिक ग्रधिसुचनाएं तथा ग्रन्य निर्वाचन सम्बन्धी अधिसचनाएं

# ELECTION DEPARTMENT NOTIFICATION

Shimla-171002, the 14/16th February, 1983

No. 3-2/83-ELN.—The Election Commission of India's notification No. 82/HP-LA 6/82, deted the 31st January, 1983 corresponding to Magha 11, 1904 (Saka) containing the Judgment, dated the 7th January, 1983 of the High Court of Himachal Pradesh at Simla in Election Petition No. 6 cf 1982 is hereby published for general information.

By order, S. M. KANWAR. Chief Electoral Officer. Himachal Pradesh.

#### **ELECTION COMMISSION OF INDIA** NOTIFICATION

Nirvachan Sadan, Ashoka Road, N.w Delhi-1,
Dated the 31st January, 1983

Magha 11, 1904 (Saka). No. 82/HP/LA/6/82.—In pursuance of section 106 of the Representation of the People Act, 1951 (43 of 1951), the Election Commission hereby publishes the Judgment. dated 7th January, 1983 of the High Court of Himschal Pradesh at Simla, in Election Petition No. 6 of 1982.

भारत निर्वाचन ग्रायोग

ग्रशोक मार्ग. नई दिल्ली:110001,

तारीख 31 जनवरी, 1983

11 माघ, 1904 (शक)

प्रधिस्चना

सं \$2/हि0 प्र0-वि0 स0/6/82 -- 1982 की निर्वाचन अर्जी सं0 6 में हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय, शिमला के तारीख 7 जनवरी, 1982 के निर्णय की लोक प्रतिनिधित्व प्रधिनियम, 1951 (1951 का 43) की धारा 106 के अनुसर्ण में निर्वाचन आयोग प्रकाशित करता है।

# IN THE HIGH COURT OF HIMACHAL PRADESH

ELECTION PETITION No. 6 of 1982

Date of decision January 7, 1983.

Shri Rikhi Ram Kaundal

.. Petitioner.

Versus Shri Ganu Ram and others

. Respondents.

oram:
The Hon'ble Mr. Justice T. R. Handa, J.
Whether approved for reporting Yes.
For the Petitioner(s) Shri P. N. Nag, Advocate with

Shaima and Naiesh Gupta, Advocates.

For the Respondent (s) Shri Chhabil Das, Advocate with bim Shri Yoginder Pal, Advocate.

T. R. HANDA:

During the last general elections to the Himachal Pradesh Vidhan Sabha held in May, 1982, the petitioner Shri Rikhi Ram Kaundal and all the four respondents Sarvshri Ganu Ram, Banta Ram, Ram Parkash and Niku Ram were in the field to contest the sect from 23—Gehrwin Assembly Constituency. This seat is reserved for Scheduled Caste candidates only. Shri Ganu Ram respondent No. 1 polled 7,477 votes which being the highest number of votes polled by any candidate, he was declared elected. The petitioner who trailed immediately behind secured 6901 votes. There is nothing on the record to show the number of votes secured by the other three candidates.

The petitioner who had contested the election sa an independent candidate has brought the present election petition under sections 81, 100 and 101 of the R presentation of People Act, 1951 (hereinafter called 'the Act'), praying that the election of respondent No. 1 be declared void. A further prayer initially made in the election petition was that after the election of respondent No. 1 is declared void the petitioner be declared elected from the aforesaid constituency in place of respondent No. 1. This second prayer was, however, later dropped at the time of settlement of issues.

The election of respondent No. 1 has been challenged on three grounds. The first ground is that the nomination papers filed by respondent No. I were not in order and had been improperly accepted by the Returning Officer. It is alleged that in the nomination paper filed by him. respondent No. 1 had made no declaration specifying the particular caste of which he is a member and the area in relation to which his caste is a scheduled caste of the State. The nomination paper of this respondent in these circumstances was improperly accepted.

The second ground is that in 2s much as respondent No. 1 had made no declaration of the kind referred to above, in his nomination paper, he was not qualified for being chosen from the 23—Gehrwin reserved constituency in terms of the mandatory provisions of section 33(2) of the Act.

The third ground is that respondent No. 1 was not qualified for being chosen from the aforesaid reserved quantied for being chosen from the afficient reserved constituency in as much as he does not belong to any of the castes which have been declared as scheduled castes. According to the petitioner, respondent No. 1 is a 'Dhiman' by caste which is apparent from the fact that at the time when he got admission of his son, Shri Dalip Singh in Government High School Rilgenty, respondent Singh in Government High School, Bilasput, respondent No. 1 had described himself as 'Dhiman'. According to the further contention of the petitioner, the caste Dhiman has never been declared as scheduled caste in the State of Himachal Pradesh.

Respondent No. 1 alone appeared to contest this petition. In his reply, this respondent did not dispute that the nomination paper which he filed before the Returning Officer did not contain the declaration on the prescribed form specifying the caste of which he is a member and the area in relation to which this caste has been declared as schribbled casts in the State. He, however, alleged that along with his nomination paper he had attached a certific te from the Sub-Divisional M igistrate Ghumarwin in which this respondent had been described as a member of the scheduled caste being of a Lohar' Caste. The imminition paper filed by him when read as awhole along with its enclosures, according to respondent No. 1. clearly reflected that this respondent was a member of a scheduled custs as notified by the President of India in the Scheduled Custe Order and as such the nomination pipers filed by him were in or 'er and had been rightly accepted by the Returning Officer. In other words the filing of the certificate from the Sub-Divisional Magisteate showing the ressortent as a member of the scheduled ciste, wis, according to the respondent, a sufficient compliance of the provisions of section 33 (2) of the Act and he was not, therefore, disquilified for being chose. The respondent further pleaded that his caste wis 'Lohar' which had been declared as scheduled costs in the Presidential Order. He admitted that he had been suffixing the word 'Dhiman' after his name but denied if 'Dhiman' was his caste. According to the contesting respondent the suffix 'Dhiman' was used after his nam: by every member of the artisan class, namely. Tirkhan (carpenter) Lohar (blacksmith) etc. The simple use of this word would not man that this respondent ceased to belong to his caste which was Lohar.

On the aforestid pleas of the parties the following issues were struck:—

 whether respondent No. 1 was qualified to be chosen to fill the seat against which he has been returned?

Whether the nomination paper of the respondent was improperly accepted? If so, to what effect?

3. Whether the respondent belongs to scheduled caste? If so, to what effect?

#### Issue No. 1:

The plea of the election petitioner that respondent No. I was not qualified to be chosen to fill the seat against which he has been declared elected is founded on two grounds each of which is independent at the other. The first of these grounds is that respondent No.1 having fulled to make a declaration in his nomination paper, specifying the particular caste of which he is a member and the area in relation to which that caste is a scheduled caste of the State, he, by virtue of the deeming provisions of section 33 (2) of the Act, was not qualified to be chosen to fill the seat in question which was a admittedly reserved seat. The seconground pleaded is that respondent No. 1 is not a member of any scheduled caste of the State and, therefore, was not qualified to be chosen to fill this reserved seat which was reserved for scheduled castes only. The present issue relates to the first of these two grounds. The second ground would be covered under issue No. 3.

It is common casts of the parties that the seat for which the parties contested and against which respondent No. I has been declared elected, is a reserved seat. It is reserved for scheduled castes only. It may be observed that Article 332 of the Constitution provides for reservation of seats for the Scheduled Cases and the Scheduled Tribes, except the Scheduled Tribes in the tribal areas of Assam in Nagaland and in Meghalaya, in the Legislative Assembly of every State. The actual reservation of such seats for scheduled castes and scheduled tribes in the Legislative Assembles of the various states is made under section 7 of the Representation of the People Act, 1950. The seat in question is, thus reserved for scheduled castes under a valid law. It is, therefore, undeniable that one of the essential qualifications for a candidate to contest this reserved seat was that he must be a member of a scheduled caste of the State.

It is again not in dispute that as pleaded in the election petition, the nomination paper filed by respondent No. I in respect of his nomination, contains no declaration of this respondent, specifying the particular caste of which he is a member and the area in relation to which that caste has been declared scheduled caste of the State. Otherwise also a bare look at the nomination paper fild by respondent No. I in respect of his nomination paper fild by respondent No. I in respect of his nomination would show that the declaration of the kind referred to above is not contained in it. Of course along with this nomination paper Ex. PW. 1/10 respondent No. I had filed a certificate issued by the Sub-Divisional Magistrate Ghumarwin certifying that this respondent "belongs to scheduled caste (Lohar)". This certificate is found at Ex. PW. 1/3.

It is in the light of the aforesaid short but undisputed facts that I am called upon to return my verdict on the point whether respondent No. I was or was not qualified to be chosen to fill the seat against which he has been declared elected, sub-section (2) of section 33 of the Act which has been invoked by the election petitioner in support of his place covering this issue, is in the following terms:—

following terms:—

"33. Presentation of nomination paper and requirement for a Valid nomination.

(2) In a constituency where any seat is reserved, a candidate shall not be deemed to be qualified to be chosen to fill that seat unless his nomination paper contains a declaration by him specifying the particular caste or tribe of which he is a member and the area in relation to which that caste or tribe is a Scheduled Caste or, as the case may be, a Scheduled Tribe of the State.

The linguage employed in the sub-section extracted bove is plain and admits of no ambiguity. Looking at this provision it is imperative that a candidate contesting a seat reserved for scheduled castes, as in the case in hand, must make a declaration in his nomination paper specifying the particular caste of which he is a member and the area in relation to which that caste is a scheduled caste of the State. The sub-section further provides that unless the nomination paper of a candidate contesting a reserved seat contains the declaration of the kind referred to above, he shall not be deemed to be qualified to be chosen to fill that seat. Admittedly in the instant case the nomination paper filed by respondent No. 1 contains no such declaration. By the very force of the language used in section 33 (2), the conclusion, therefore, is irresistible that respondent No. 1 was not qualified to be chosen to fill the seat against which he has veer declared elected.

The counter argument advanced on behalf of respondent. No. 1 is like this. The object of sub-section (2) of section 33 is only to give a notice to the Returning Officer and the other candidates at the election of the particulars caste of which a candidate contesting a reserved seat, is a member so as to enable them to verify that his caste is a scheduled caste of the State. True, the argument proceeds, that respondent No. 1 had in his nomination paper made no declaration of the type required by sub-section (2) of section 33, but he had then attached with his nomination paper, the certificate Ex. PW. 1/3. This certificate had been issued by a competent authority, namely, the Sub-Divisional Magistrate Ghumarwin and it certified in clear terms that respondent No. 1 was a member of Scheduled Caste (Lohar). The nomination paper of rrespondent Nc.1 read with this certificate of the Sub-Divisional Magistrate should be taken as substantially meeting the requirements of sub-section (2) of section 33. Respondent No. 1, therefore, in the presence of this certificate which formed part of his nomination paper, would not be deemed to be not qualified to be chosen to fill the reserved seat in question.

This argument, however, attractive it may look, is devoid of all force. The certificate of the Sub-Divisional

Magistrate attached by respendent No. 1 with his nomination paper, can neither be treated as a part of the nomination paper nor as a substitute for the declaration within the contemplation of sub-section (2) of section, 33. The nomination paper has to be filed on a prescribed form duly completed and signed by the canditate and his proposer. This is a statutory mandate contained in sub-section (1) of section 33 of the Act. The form of nomination paper has been prescribed under the Conduct of Election Rules, 1961 (See rule 4). This form is called Form 2-B. This is a self contained form and does not contemplate the filing of any enclosures or certificate along with it. The relevant parts of this prescribed form read thus:

#### FORM 2B (See rule 4) NOMINATION PAPER

Candidate's name.
His postal address.

My name is......and it is entered at S. No.......in Part No......of the electoral roll for the......assembly constituency.

Date..... (Signatuer of proposer).

I, the above-mentioned candidate, assent to this minimation and hereby declare—

- \*(a) that I have completed......years of age;
  \*(b) that I am set up at this delection by the......
  parts;

\*Score out this paregr. ph, if not applicable.
\*\*Score out the word not applicable.

Date .....

XX XX XX XX XX

(Signature of candidate).

xx xx xx xx xx

This form has been prescribed for candidates of both

This form has been prescribed for candidates of both categories, those who are contesting a geneal seat as well as those who are contesting a reserved seat. It is legitimate to presume that while prescribing this form, the relevant provisions of the Act were kept in view and the main object of this form was to ensure the compliance of such provisions. This form consists of five parts. The first part is required to be filled in and signed by the proposer of the candidate. The second part is required to be filled in and signed by the candidate himself. Both these parts are to be completed and signed before the nomination piper is filed before the Returning Officer. The remaining three parts are to be silled in and signed by the Returning Officer after the nomination paper is filed. These last three parts are not, therefore, relevant for our purpose and hence I have not considered it necessary to extract them out. We are here concerned only with the second part extracted above.

This second part which is in the form of a declaration can be further split into two sub-parts. In the first sub-

part which is applicable to candidates of both the categories, a candidate is required to declare his age, name of his party and the symbols in order of preference which he has chosen. In the next sub-part which is relevant and important for our purpose, a candidate is required to further declare the caste or tribe of which he is a member and also the area in relation to which that caste trr tribe has been declared to be a scheduled caste or tribe, as the case may be, of the State. In the case of a candidate who is contesting a general seat he is not enjoined under any law or statute to specify in his declaration the particular caste or tribe of which he is a member. This second sub-part of declaration required to be made by a candidate is, therefore, wholly irrelevant in the case of a candidate contesting a general seat.

It, therefore, follows that the second sub-part of the declaration which requires a candidate to specify the particular caste or tribe of which he is a member and the area in respect of which that caste or tribe has been declared as scheduled caste or tribe, as the case may be, of the State, is required to be made only by a candidate who is contesting a reserved seat. This declaration has been incorporated in the prescribed form obviously with the object of ensuring compliance with the mandatory provisions of sub-section (2) of section 33, in the case of candidates contesting reserved seat. The prescribed nomination form, therefore, as already observed is a self contained form which if duly completed and signed would answer all these statutory requirements. This prescribed form does not contemplate the filing of any enclosures along with it. The certificate Ex.PW.1/3 filed by respondent No. I along with his nomination form cannot, therefore, be treated as a part of the nomination paper.

Assuming though not conceding that certificate Ex. PW.1/3 can be treated as a part of the nomination paper Ex. PW.1/1 and that these two docoments taken together from a complete nomination paper of respondent No. 1. I fail to appreciate how this would improve the matters so far as respondent No. 1 is concerned. Even these two documents read together would not meet the statutory requirements, of sub-section (2) of section 33 of the Act. The statute requires a candidate to make his own declaration specifying the caste of which he is a member and the area in relation to which that caste is a scheduled caste of the State. This declaration of the candidate is then required to be signed by the candidate himself. Certificate Ex. PW. 1/3 is neither a declaration in the prescribed language nor does it bear the signatures of respondent No. 1. This certificate is thus no substitute for the declaration within the contemplation of subsection (2) of section 33. It may be observed that when sub-section (2) of section 33 requires that the decl. ration of the kind mentioned therein should be contained in the nomination form of the candidate, it talks of the prescribed nomination form. A reference to the prescribed nomination form would make it clear that such a declaration must be signed by the candidate.

It is by now a well established rule of law, having been repeatedly recognized by the Supreme Court, that whenever a statute requires a particular act to be done in a particular manner and also provides that failure to comply with the said requirement leads to a specific consequences, the requirement is mandatory and in the event of its non-compliance, the consequences is specified in the statute must n.cessarily follow. This rule should apply with all the more force in election matters in view of the following observations of the Supreme Court made in the case of Jagan Nath versus Jaswant Singh and others reported in A.I.R. 1954 S.C. 210:

"The general rule is well settled that the statutory requirements of election law must be strictly observed and that an election contest is not an action at law or a suit in equity but is a purely statutory proceeding unknown to the common law and that the court possesses no common law power".

The aforesaid observations of the Supreme Court have later been approved in Shri Baru Ram versus Smt. Parsanni

and other (A.I.R. 1959 Supreme Court 93) and Samant N. Balakrishan, etc. versus George Feznandez and others etc. (A.I.R. 1969 S.C. 1201).

On the facts of the case in hand which are undisputed, there is, therefore, no escape from the conclusion that respondent No. 1 having failed to make a declaration in his nomination form specifying the particular caste of which he is member and the area in relation to which that caste is a scheduled caste of the State, the consequences provided for such non-compliance in sub-section (2) of section 33 must follow and it must be held that respondent No. I was not qualified to be chosen to fill the seat against which he stands elected. This first issue is, therefore, found in favour of the petitioner and against respondent No. 1.

Under this issue the plea of the petitioner is that the nomination paper of respondent No. 1 should have been reject d at the time of scrutiny and its acceptance being improper, the election of this respondent must be declared void Section 36 of the Act deals with scrutiny of nomination p pers. It is under this provision that the nomination papers are accepted or rejected by the Returning Officer. Sub-section (2) of this section enjoins upon the Returning Officer to reject a nomination paper where:

- (a) the candidate is either not qualified or is disqualified for being chosen to fill the seat under any of the following provisions that may be applicable, namely:
  - (i) article 84, 102, 173 and 191 of the Constitution; and
  - (ii) Part I of the Act.
- (b) that there has been a failure to comply with the provisions of section 33 or section 34 of the Act,
- (:) the signature of the candidate or the proposer on the nomination paper is not genvine.

Sub-section (4) of section 36 next provides that the Returning Officer shall not reject any nomination paper on the ground of any defect which is not of a substantial

It follows, therefore, that a defect of substantial character in a nomination paper must ent il its rejection. If, therefore, once it is found that the nomination paper filed by respondent No. 1 suffered from a material defect, the same had to be rejected and its acceptance must be decl red improper. I have already held under issue No. 1 that the nomination paper filed by respondent No. 1 whether taken by itself or read along with its enclosure Ex.PW. 1'3, is neither complete nor does it comply with the mandatory requirements of section 33 (2) of the Act. Non compliance of section 33(2) of the Act from which defect, the nomination p per of responsient No. 1 suffers, entills penal consequences as polited in the statute itself. Such a defect, therefore connot but be treated a defect of substantial character. To sum up, there had been in the case of respondent No. 1 a failure to comply with the provisions of section 33(2) of the Act and since this non-compliance amounted to a defect of a substantial character, the nomination p per of a respondent No. 1 reserved to be rejected under section 36(2) of the Act. The acceptance of the nomination paper of respondent No. I in the circumstances was, therefore, improper. This issue is also found in favour of the petitioner and against respondent No. 1.

Issue No. 3:

The case for respondent. No. 1 is that he is Hindu and being 'Lohar' by caste he belongs to a scheduled caste within the meaning of paragraph 2 read with Part VI of the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950 issued under Article 341 of the Constitution. The caste 'Lohar' is covered by item No. 36 in Part VI (Himschall Pradach) of the Schedule to the Order. Pradesh) of the Schedule to the Order.

It is not disputed on behelf of the petitioner either

that 'Lohar' is a scheduled caste for the State of Himachal Pradesh within the meaning of the Constitution (Scheduled Cestes) Order, 1950. The contention of the petitioner is that respondent No. I is not a 'Lohar' but 'Dhim n' by caste and hence he cannot be treated as a member of the scheduled caste for the State of Himachal Pradesh. So the controversy between the parties boils down to the point whether for the purposes of the Constitution (Scheduled Cestes) Order, 1950 respondent No. 1 is a member of a caste, tribe or race known as 'Lohar' in the State of Him chal Predesh.

Both sides have adduced oral as well as documentary evidence in support of their respective contentions giving rise to the controversy referred to above. Shri Ganu Ram respondent No. I put himself into the witness box to stute on oath that he was 'Lohar' by caste and has all along been treated as a member of the scheduled caste in the State. Previously he was employed in the Him chal Government Transport Department as a clerk. In 1974 he was promoted to the rank of Junior Auditor in the same Department against the quota reserved for scheduled castes. Ex. RW. 4/2 is a copy of the letter detail 25-8-1973 addressed by the Regional Manager, Himachal Government Transport, Billa spur to the Commissioner Transport, Himachal Pradesh Siml. Enclosed with this letter is a list of the employees belonging to scheduled easte which is Ex. RW. 4/3. The name of respondent No. 1 figure at S. No. 1 of this list suggesting thereby that he was treated as a member of scheduled caste by his employer. Shri Dalip Singh of respondent No. 1 also scoured is admission in the M.B.B.S. course of the H.P. Medical College against the quota reserved for scheduled castes. These concessions were availed by the respondent and his son Shri D lip Singh were admittedly never challeng d. The respondentalso summoned the record of the Government High School. Bilaspur pertaining to his own admission in that school. Ex. RW. 3/1 is a true copy of the Admission Register of the said school concerning this respondent. This entry is deted 17-4-1935. In this entry under the Inis entry is dated 17-4-1935. In this entry under the column 'Tribe' or 'Caste' the father of the respondent has been described as "Blacksmith" which term when translated into Hindi means 'Lohar'. The respondent also produced two copies of Pedigree tables which are Ex. RW. 2/1 and Ex. RW. 2/2. In the pedigree table Ex. RW. 2/1 the family of respondent No. 1 has been described as of 'Lohar' ciste, while in the other Pedigree table Ex. RW 1/2, the caste of the family of the respondent. table Ex. RW. 1/2, the caste of the family of the respondent is mentioned as 'Lohar Atter'. It is not disputed that 'Attar' is only a Gotar and does not form part of any caste. Two oral witnesses, namely, Shri Sant Rem (RW. 8) and Shri P. la Rem (RW. 9) were also exemined on behalf of respondent No. 1 and both of them deposed the t the caste of respondent No. I was 'Lohar' and he had been treated as belonging to that caste in the area. A suggestion was put to respondent No. 1 in his cross fexamination that he was Brahmin by caste but he reuted the same. Respondent No. I did not deny having-used the suffix 'Dhiman' after his name but than explained that 'Dhiman' was no caste.

The petitioner on his part made an endeavour though a futile one to prove that respondent No. 1 was 'Lohar only by profession and not by caste and that the caste of respondent No. 1 was 'Dhiman'. He further tried to prove that 'Dhiman' were Brehmins and could not, therefore, be treated as members of the scheduled caste. The evidence of the petitioner, however, in my view, supports the case of respondent No 1 rather than his own c se. The petitioner himself impliedly admitted in his cross examination that 'Dhiman' was not a caste but a st ffix used after their names by all the artisan classes. To quote his own words the petitioner stated. "It is correct that all the *Tirkhans. Lohars* and masons on this area call themselves as 'Dhimans'." RW. 4 Shrift Rattan Lal Sharma is another witness examined by the petitioner on this point. According to this witness 'Dhimans' have only five professions. They are either 'Lohar' or 'Tirkh'n', or 'Mason', or 'Utensil Makers' 'Goldsmiths'. If it is so, it is ridiculous to say that 'Dhimans' are Brahmins since none of the aforesaid

professions was meant for the members of the high caste of Brahmins. The only safe conclusion is that 'Dhiman' is no caste but a common suffix used after their names by artisans like 'Lohar', "Tirkhans" 'Utensil Makers', 'Goldsmiths' and 'masons'. Both PW. 4 Shriftattan Lal Sharma and PW. 5 Shri Bansi Lal next admil that 'Lohars' who called themselves 'Dhimans have been treated as scheduled caste in the State and they had been availing of various concessions permissible to the members of the scheduled castes in the State. They could have availed of these concessions only if they had been accepted as members of the easte or tribe or race known as 'Lohar' in the State and which has been declared as scheduled caste under the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950. This also shows that 'Dhiman' was never treated as a caste or else these persons who called themselves as 'Dhimans' could not have been allowed to avail of the concessions permissible to scheduled caste only. So the logical conclusion is that 'Dhiman' is no separate caste or tribe. It is only a common suffix used after their names by the members of certain classes like 'Lohars', 'Tirkhans', 'Goldsmiths', and 'Utensil makers' and 'Masons' and this suffix they use as a matter of course or custom.

In passing, it may be observed that according to the learned counsel for the petitioner, respondent No. 1 had himself made an admission of his belonging to Brahmin caste and in view of that admission it was not now open for him to plead that he belonged to any other caste. This admission relied upon by the learned counsel for the petitioner is alleged to be contained in Ex. PW.3/1 which is an Admission Form which was filled by respondent No. 1 when he get his son admitted in the G vernment High School Bilaspur. In this form respondent No. 1 gave his name as "Grau Ram Dhiman". I have already explained the use of this suffix 'Dhiman' against the name of respondent No. 1 and in view of that experination this Admission Form Ex. PW. 3/1 cannot be treated as an admission on the part of respondent No. 1 that he is Brahmin by caste.

In view of the evidence of either party as discussed above, my conclusions are that 'Dhiman' is no caste

and that respondent No. 1 belongs to the easte or tribe called 'Lohar' in the State. He, therefore, in terms of the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950 is a member of the Scheduled Caste of the State. This issue is accordingly found in favour of respondent No. 1.

ORDER

In view of my findings on issue Nc. 1 that respondent No. 1 was not qualified to be chosen to fill the seat against which he has been declared elected, I declare his election void under section 100(1)(a) of the Act. In view of my findings on issue No. 2 that the nomination of respondent No. 1 had been improperly accepted I further declare the election of this respondent void under section 100(1)(d) (i) of the Act as obviously the result of the election in so far as it concerns this respondent has been materially affected by this improper acceptance of the nomination.

Keeping in view all the circumstances of this case I fix the costs of the election petitioner at Rs. 700 and direct respondent No. 1 to pay this amount to the petitioner. I further direct that the substance of this decision be intimated to the Election Commission as also to the Speaker of the Himachal Pradesh State Legislative Assembly forthwith and that an authenticated copy of this decision be also sent to the Election Commission at the earliest.

SEAL. January 7, 1983.

Sd/-T.R. HANDA. Judge.

Attested

Sd/-Superintendent (Jud1.).

> By order. M. L. WAHI, Under Secretary, Election Commission of India.

अनुपरक शन्य

# PART I

#### PERSONNEL DEPARTMENT (Secretariat Administration Services)

#### NOTIFICATION

Shimla-2, the 15th February, 1983

No. Per. SA-II-B(10) 3/81.—The Governor, Himachal Pradesh is pleased to order that Shri Heminder Singh, Section Officer, Himachal Pradesh Secretariat on attaining the age of superannuation will retire from service with effect from 28th February, 1983 (A.N.).

> Sd/-Under Secretary.

#### CO-OPERATION DEPARTMENT

#### NOTIFICATION

Shimla-171002, the 16th February, 1983

No. 1-13/70-Co-op (S).—The Governor, Himachal Pradesh is pleased to Order that Shri Harish Chander Chandel, Deputy Registrar, Co-operative Societies (Audit), Himachal Pradesh, Co-operative Directorate, Shimla, shall stand retired from Government service on attaining the age of superannuation w. e. f. 30-6-1983 (A. N.).

> ATTAR SINGH, Secretary.

# HEALTH AND FAMILY WELFARE DEPARTMENT NOTIFICATION

Shimla-171002, the 18th January, 1983
No. Health-B(3)-12/82(A).—The Governor, Himachal Pradesh is pleased to appoint Shri S. R. Bhardwaj, District Ayurveda Officer as Registrar of Himachal Pradesh Ayurveda and Unani Board on deputation basis for a period of two years from the date he takes over as such.

> A. N. VIDYARTHI, Secretary.

#### FOOD AND SUPPLIES DEPARTMENT NOTIFICATION

Shimla-2, the 16th February, 1983

No. FDS-(B) 2-3/81.—The Governor, Himachal Pradesh on the recommendation of the Himachal Pradesh Public Service Commission is pleased to promote Shri Satya Dev Sharma, Inspector, Weights and Measures as Assistant Controller, Weights and Measures, Class-II (Gazetted) in the pay scale of Rs. 700-1200, with immediate effect.

The Governor, Himachal Pradesh is further pleased to post Shri Satya Dev Sharma as Assistant Controller (Weights and Measures), Shimla Division, Shimla (Comprising of Shimla, Dhakli and Rampur Circles). He will also hold additional charge of the post of Inspector, Weights and Measures (HQS) in the office of the Controller, (W&M), Himachal Pradesh as holding prior to his promotion till further orders. He will be on probation for a period of two years.

By order, ATTAR SINGH, Commissioner cum-Secretary.

बग्रदालत सहायक समाहर्ता प्रथम वर्ग (विभाजन), ग्रर्की मिसल नं0 20/9 बाबत साल 1982 बमुकद्दमा भगर देव पुत्र बिहारी, निवासी बड़ोग, परगना मत्यांज

.. प्रार्थी ।

हेत राम, भालीग्राम, जगदीण, दिना नाथ, बली राम पिसरान पूरन। निवासी बडोग, परगना मत्यांज .. प्रतिवादीगण

प्रार्थना-पत्न विभाजन भूमि खाता खातौनी नं 0 67/84 किता 6 रकबा तादादी 21 बीघा 15 बिस्वा वाका चक कशलोग, परगना मत्यांज खुर्द।

इश्तहार बनाम:-

(1) श्री शालीग्राम शर्मा, वायरलैस श्राप्रेटर, रेडियो बायरलैस स्टेशन, पी. एण्ड टी. विभाग, शिमला, (2) श्री दिना नाथ गर्ग, जी एन श्रार नं0 143134674, एम टी एन. रेजिमेंट, मारफत 99 एै. पी.ग्रो, (3) श्री बली राम पुत्र पुरन लाल, एम. बी. बी. एस., मारक्त मैडीकल सुप्रिनटैन्डैन्ट हस्पताल, शिमला । स्नोडन

मुकद्दमा मुन्दरजा उनवान बाला में उपरोक्त प्रतिवादीगण को कई दफो समनात भेजे गये परन्तु वह हाजिर श्रदालत नहीं श्रा रहे हैं न ही समनात पर तामील हो रही है। जिस से साफ प्रतीत होता है कि प्रतिवादी तामील समनात से गूरेज कर रहे हैं। भत: इस इश्तहार द्वारा उपरोक्त प्रतिवादीगण को सूचित किया जाता है कि वह दिनांक 4-3-1983 को 10 बजे सुबह भ्रसालतन या वकालतन हाजिर भ्रदालत भ्रा कर पैरवी मुकद्म। करें भ्रन्यथा

उनके विरुद्ध कारंबाई यकतरफा श्रमल में लाई जावेगी। भाज दिनांक 31 माह जनवरी सन् 1983 दस्तखत हमारे व

मोहर प्रदालत से जारी हुपा।

मोहर।

हस्ताक्षरित/-सहायक समाहर्ता, प्रथम वर्ग, भ्रकीं, ज़िला सोलन ।

बग्रदालत सहायक समाहर्ता प्रथम वर्ग (विभाजन), प्रकी मिसल नं0 21/9 बाबत साल 1982 बमुकद्मा ग्रमर देव पुत्र बिहारी, निवासी बड़ोग, परगना मत्यांज .. प्रार्थी ।

बनाम

हेत राम. शालीग्राम, जगदीश, दिना नाथ, बली राम पिसरान पुरन, निवासी बड़ोग, परगना मत्यांज .. प्रतिवादीगण।

प्रार्थना-पत्र विभाजन भूमि खाता खतौनी नं 0 68/74, किता 6 रकबा तादादी 16 बीघा 17 बिस्ता, वाका चक नेवड़ी, परगना मत्याज, तहसील प्रकी।

इण्तहार बनाम:--(1) श्री णालीग्राम णर्मा, वायरलैस ग्राप्रेटर, रेडियो वायरलेस स्टेशन, पी.एण्ड टी. विभाग, शिमला ।

- (2) श्री दोना नाय गर्ग, जी.एन.ग्रार. नं 0 143134674 एम. टी. एन. रेजिमेंट, मारफत 99 ए.पी.ग्रो.।
- (3) श्री बली राम पुत्र पूरन लाल, एम. बी. बी. एस. मारफत मेडीकल सुप्रिन्टेंडैन्ट, स्नोडन इस्पताल, शिमला ।

मुकद्दमा मुन्दरजा उनवान बाला में उपरोक्त प्रतिवादीगण को कई देफा समनात भेजे गए परन्तु वह हाजिर ग्रदालत नहीं ग्रा रहे है ना ही समनात पर तामील हो रही है जिस से साफ प्रतीत होता है कि प्रतिबादी तामील समनात से गुरेज कर रहे हैं।

भतः इस इश्तहार द्वारा उपरोक्त प्रतिवादीगण को सूचित किया जाता है कि वह दिनांक 4-3-1983 को 10 बजे सुबह प्रसालतन या बकालतन हाजिर ध्रदालत भ्रा कर पैरवी मुकद्दमाँ करें भ्रन्यथा उनके विश्व कार्रवाई यकतरफा ग्रमल में लाई जावेगी।

भ्राज दिनांक 31 माह जनवरी सन् 1983 दस्तखतं हमारे भ्रौर मोहर ग्रदालत से जारी हुग्रा।

मोदर

हस्ताक्षरित/-सहायक कुलैक्टर, श्रेथम वर्ग, श्रकीं, जिला ( सोलन

बम्रदालत सहायक समाहर्ता द्वितीय वर्ग, मर्की, जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश

मुकद्मा नं 0 23/13(बी) बाबत साल 1982 बमकद्दमा कृष्ण लाल पुत्र गिरीजा र म, निवासी कालर, परगना देवरा, तहसील अर्की . . प्रार्थी।

बनाम

देवी सिंह, सन्त राम इत्यादि

...प्रतिवादी।

प्रार्थना-पत्न दरुस्ती इन्द्राज खसरा गरदावरी खाता खतौनी नं0 3/3 किता 4 रकबा 7-9 बीघा व खाता खतौनी नं0 4/4 किता 13 रकबा 29 बीघा 2 विस्वा, वाका चक कालर, परगता देवरा। इश्तहार बनाम:--(1) श्री देवी सिंह पुत्र रामदास, निवासी कालर, लाइन मैंन, बिजली बोर्ड, ईदगाह सब-स्टेशन,

शिमला।

(2) श्रीमती नरमाणी पत्नी विजया राम, निवासी धारढ़, तहसील श्रर्की ।

(3) श्रीमती द्रोपती पत्नी नयू, निवासी घड़ियाच, परगना सन्ध्रत, तहसील श्रकी।

मकहमा मुन्दरजा उनवान बाला में प्रतिवादीगण को कई दफा समनात जारी किए गए परन्तु प्रतिवादीगण पर तामील समनात नहीं हो रही है। प्रदालत को पूर्ण विश्वास हो चुका है कि प्रतिवादीगण तामील समन से गुरेज कर रहे हैं।

भतः वजरिया इक्ष्तहार हजा उपरोक्त प्रतिवादीगण करे सूचित किया जाता है कि वह दिनांक 4-3-1983 को 10 बजे सुबह श्रमालन या वकालतन हाजिर श्रदालत भ्रा कर पैरवी मृंकहमा करें ग्रन्यया उसके विरुद्ध कार्रवाई यकतरफा श्रमल म लाई जावेगी।

माज बतारीख 31 माह जनवरी, 1983 दस्तखत हुमारे भौर मोहर घदालत से जारी हुआ।

मोहर ।

हस्ताक्षरित/-सहायक क्लैक्टर प्रथम वर्ग, श्रकीं, जिला सोलन।

बग्रदालत श्री सीता राम शर्मा, नायब तहमीलदार एवं सहायक समाहर्ता, दर्जा दोम, सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि0प्र0)

> मुकद्मा सेहत इन्द्राज हरी राम बनाम श्रीमती मथरू श्रादि

दरख्वास्त सेहत इन्द्राज खेवट नं० 118 खतौनी न० 133 ख0 न० 1016 तादादी 1-11-10 बीघा वाक्या मुहाल डैहर।

नोटिस बनाम ा. श्रीमती मथरू विधवा सिहणु, 2. ग्ररजन; 3. सुरजन, 4. डिला, 5. धनी राम पुत्र सुदामा पुत्र काहन, जाति बाहमन, निवासी मारकण्डा, जिला विलासपुर, 6. श्रीमती पारवतु विधवा, 7. श्रीमती जसवन्ती पुत्री सरदार पुत्र काहना, निवासी डैहर, तहसील मुन्दरनगर, जिला मण्डी (हिमाचल प्रदेश)।

उपरोक्त दरख्वास्त सेहत इन्द्राज में पाया गया है कि फरीक दोम को तामील समन घर पर नहीं हो सकती है इस लिए इस नोटिस द्वारा सूचित किया जाता है कि वह भ्रसालतन या वकालतन हाजिर भ्रदालत दिनाक 1-3-83 प्रात: 10 बजे भ्राकर पैरवी करे बसूरत दीगर श्रनुपस्थिति एक पक्षीय कार्यवाही की जावेगी।

नोटिस मेरे हस्ताक्षर भौर मोहर भ्रदालत द्वारा भ्राज दिनांक 8-2-83 को जारी हुमा।

सीता राम शर्मा. सहायक कुल कटर, द्वितीय श्रेणी, सुन्दरनगर, ज़िला मण्डी ।

मोहर।